वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

वर्ष 2, अंक 3

तर्कशील पथ

मई - 2015

अन्दर पढ़े...

20/-

- श्रमिकों के अधिकारों की पैरवी करता मई दिवस
- धारा 66–ए को रद्द करता हुआ
- सत्य
- विट्ठल महादेव तारकुण्डे
- मृत्योपरांत कायम रहती है
- एवं अन्य नियमित सतम्भ

किताबें प्रतिबन्धित नहीं हो पायेंगी, वे जलेंगी भी नहीं, विचार जेल में बन्द नहीं होंगे ...गैरीश बोल्ड

Reg. No. HARHIN/2014/60580

संपादक:

आर.पी.गांधी - 093154-46140

संपादन सहयोग:-

बलवन्त सिंह - 094163-24802

गुरमीत अम्बाला-094160-36203

अनुपम राजपुरा: 094683-89373

बलबीर चन्द लोंगोवाल: 098153-17028

हेम राज स्टेनो: 098769-53561

पत्रिका शुल्क:-

वार्षिक: 200/- रू.

विदेश: वार्षिक: 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण:

गुरमीत अम्बाला

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं.1062, आदर्श नगर, नज़दीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा)

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग आन करें

www.tarksheel.org

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग :

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

E-mail: doabacommunications@gmail.com

संकेतिका

विशेष लेख :		पृष्ठ संख्या
1	श्रमिकों के अधिकारों की पैरवी करता मई दिवस	4
2	धारा 66-ए को रद्द करता हुआ	6
3	सत्य	10
4	विट्ठल महादेव तारकुण्डे	17
5	मृत्योपरांत कायम रहती है	19
6	गोलियों की दहशत में	22
6	धर्म और विज्ञान की परस्परता	24
7	ब्रह्मांड यात्रा	
9	सफल जीवन	42
10	उदासी चेहरा	45
केस रिपोर्ट :		
11	और फिर पीर की चौकी से छुटकारा मिल गया	39
नियमित स्तम्भ :		
12	तर्कशील हलचल	
13	बाबाओं के काले कारनामें	
14	अंधविश्वास के चलते	
15	विज्ञान चालीसा	
16	खोज खबर	
17	बच्चों का कोना	
18	आईना	

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में दिनांक 19-07-2015, दिन रविवार को प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोट: तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

संपर्क सूत्र:

बलजीत सिंह- 82950 51400

अश्वनि धुराला-98023 45467

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 31918554 65 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416336203 पर एस.एम.एस करें।

नोट: किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

संपादकीय

फिल्में और तर्कशीलता

'ओ माई गॉड' और 'पीके' जैसी फिल्मों की सफलता के बाद ऐसे विषयों पर फिल्मों का चलन एक अच्छा संकेत है। दोनों फिल्मों पर धर्मवादियों ने विरोध प्रदर्शन किये परन्तु समाज के युवा वर्ग ने इन फिल्मों का जोरदार समर्थन किया। उसी कड़ी में नई फिल्म 'धर्म संकट' आ चुकी है, जिस पर उतना विरोध नहीं हुआ। धर्म संकट में भी 'ओह माई गॉड' की तरह परेश रावल मुख्य भूमिका में हैं जो धर्म के बाहरी आवरण पर अपने चुटीले संवादों से चोट करते हैं परन्तु सामाजिक दबाव के कारण दिखावी धर्म की पालना करने को विवश होते हैं। इन फिल्मों को लेकर समाज में कुछ ज्यादा ही तार्किक सोच के व्यक्ति इनकी आलोचना भी कर रहे हैं कि पूर्ण सत्य को दिखाने की बजाये दबाया गया है और वहीं कहीं अधंविश्वास की अभिव्यक्ति भी है। यह ध्यान रखना चाहिए कि धर्म के अधविश्वास में फंसे इंसान को कुछ सोचने के लिये विवश करना भी एक तरह का सुधारवादी तरीका है। उम्मीद है कि आने वाले समय में और भी फिल्में ऐसे विषयों को लेकर बनेंगी जिनमें अंधविश्वास पर तर्क दिया गया होगा।

फिल्मों का एक और ट्रेंड भी चलन में आ रहा है जिनमें भूत प्रेत जादू टोना आदि अधंविश्वासों की मानसिकता पर चोट की जा रही है। यह मनोवैज्ञानिक विषयों को लेकर बनने वाली फिल्में हैं जिनमें मानसिक उलझनों की मनोवैज्ञानिक तरीके से समझने की कोशिश की गई हैं, जैसे फिल्म 'भूल भुलैया' अमिताभ बच्चन व अभिषेक बच्चन अभिनीत फिल्म 'पा' और अभी रिलीज हुई फिल्म 'मारग्रेटा विद ए स्ट्रा'। इन फिल्मों में मानसिक बीमारीको चिन्हित करके समझाने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार एक मानसिक रोगी को हम समाज में स्थान दिला सकते हैं। फिल्म 'लगे रहो मुन्ना भाई' मे भी संजय दत्त को हिलुसलेशन (मानसिक भ्रम) की स्थिति में महात्मा गांधी दिखते हैं जिसे मनोरंजन के माध्यम से दिखाया गया है।

फिल्में समाज का ही आईना होती है। हर दौर में फिल्मों में वही दिखाया गया है जो समाज में घटता रहता है। अगर अश्लीलता आई है तो तार्किकता भी आई है। मनोरंजन के एक व्यापक क्षेत्र में ऐसा बदलाव समाज में बदल रही मानसिकता का द्योतक है।

ऐसा नहीं हें कि सब फिल्में तर्क आधारित ही बन रही हैं, परन्तु देवी देवताओं व भगवानों पर आधारित फिल्मों का युग बीत चुका है। ऐसी फिल्में अब नहीं बन रही । कुछ फंतासी जरूर बनाई जा रही हैं जिन्में आत्माएं दिखाई जा रही हैं। परन्तु इनका भी समाज में केवल मनोरंजन करना भर उद्देश्य रह गया है। ऐसी फिल्मों की चर्चाए अब नहीं होतीं। 2014 में 2-3 फिल्में 'आत्मा' केंद्रित बनीं। परन्तु उनकी कहीं भी चर्चा तक नहीं हुई। ऐसी फिल्में बनाने वाले निर्देशक भी समाज में तार्किक देने की दिशा में मुड़ेंगे, ऐसा विश्वास किया जा सकता है। क्योंकि फिल्में कुल मिलाकर एक बिजनेस भी है। जो बिकेगा वही टिकेगा।

सार्थक सिनेमा हर दौर की जरूरत रहा है। कभी कलात्मक फिल्मों के माध्यम से सामाजिक विषयों को उठाया जाता था। अब कलात्मक व मनोरंजक फिल्मो का अंतर नही रह गया है अब विज्ञानपरक फिल्मे देखने के लिए एक अच्छा वर्ग मौजूद है, जिसे ध्यान में रखकर निर्माता निर्देशक अपने प्रोजेक्ट बना रहे हैं।

उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले समय में भारत में विज्ञानपरक, तार्किक फिल्में भी बनेंगी । ..... गुरमीत अंबाला

★★

श्रमिकों के अधिकारों की पैरवी करता मई दिवस

-आशीष वशिष्ठ

मई माह के पहले दिन अर्थात 1 मई को विश्व के लगभग सभी देशों में मई दिवस या श्रमिक दिवस मनाया जाता है। यह मजदूरों का सबसे बड़ा त्यौहार है। इस दिन दुनिया भर में मजदूर इकट्ठे होकर पूंजीवादी लूट, शोषण के खिलाफ मजदूर वर्ग की लड़ाई को आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हैं। पहली मई का दिन हर वर्ष जहां मजदूर वर्ग के लिये नया जोश लेकर आता है, वहीं यह दिन दुनिया भर के पूंजीपतियों के दिलों में खौफ पैदा करता है। मई दिवस यह स्पष्ट ऐलान करता है कि मजदूरों को आज तक जो भी हक-अधिकार मिले हैं, वे लड़कर मिले हैं। मई दिवस बताता है कि मजदूर वर्ग जब सचेत होकर संगठित लड़ाई लड़ता है, तब वह दुनिया की हर लुटेरी ताकत को चकनाचूर कर सकता है। श्रमिकों के काम के घंटों को कम करने और उन्हें अधिकार दिलाने के लिए अमेरिका में एक मुहिम की शुरूआत हुई। धीरे-धीरे यह मुहिम एक आंदोलन में परिवर्तित हो गई और भारत पहुंच गई। अमरीका में तो श्रमिक दिवस मनाने की परंपरा बहुत पुरानी है, लेकिन भारत में इसे पहली बार 15 जून, 1923 को मनाया गया। इसके अलावा कई राष्ट्रों और संस्कृतियों में यह दिवस पारंपरिक बसंत महोत्सव के तौर पर भी मनाया जाता है और इस दिन सार्वजनिक अवकाश रखने का भी प्रावधान है।

अमरीका में शरू हुआ मजदूर आंदोलन, वहां उमड़े औद्योगिक सैलाब का ही एक हिस्सा था। इसका सीधा संबंध अमरीका की आजादी के लिए चल रही लड़ाई तथा 1860 में हुआ गृहयुद्ध भी था। 19वीं शताब्दी तक पहुंचते-पहुंचते मजदूर संगठन एवं मजदूर यूनियन बेहद मजबूत और अपने अधिकारों के लिए जागरूक भी हो गए थे। सबसे पहले मजदूरों के जो भी संगठन बने उनमें बुनकर, दर्जी, जूते बनाने वाले लोग, फैक्टरी आदि में काम करने वाले पुरुष तथा महिला मजदूर प्रमुख थे। अपने अधिकारों की मांग करते हुए मजदूरों ने राष्ट्रव्यापी संगठन बनाने की भी कोशिश की और वर्ष 1834 में नेशनल ट्रेड यूनियन का निर्माण किया गया। संगठन से जुड़े मजदूरों ने सबसे पहले अपने काम के घंटे कम करने के लिये संघर्ष किया, जिसमें सबसे ज्यादार योगदान अमरीकी मजदूर श्तहरीक्य का था। नेशनल ट्रेड यूनियन और अन्य मजदूर संगठनों ने मिलकर यह निर्णय लिया कि 1 मई, 1886 को श्रमिक दिवस मनाया जाएगा। कुछ राज्यों में बहुत पहले से ही मजदूरों के लिये आठ घंटे काम करने का चलन था परंतु इस कानूनी मान्यता नहीं दी गई थी। इस चलन को पूरी तरह वैधानिक बनाने के लिए पूरे अमेरिका में 1 मई, 1886 को हड़ताल हुई। जिसके बाद पहले जहां मजदूरों को 10 घंटे प्रतिदिन काम करना पड़ता था वही अब उनके लिए 8 घंटे निश्चित कर दिए गए।

भारत में मई दिवस पहली बार वर्ष 1923 में मनाया गया जिसका सुझाव संगारवेलु वेट्टियार नाम के एक प्रभावी कम्यूनिस्ट नेता ने दिया।उनका कहना था कि दुनियां भर के मजदूर इस दिन को मनाते हैं तो भारत में भी इसकी शुरूआत की जानी चाहिए। मद्रास में मई दिवस मनाने की अपील की गई। इस अवसर पर वहां कई जनसभाएं और जुलूस आयोजित कर मजदूरों के हितों के प्रति सभी का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया।आज भी विश्व के सभी बड़े देशों में श्रमिक दिवस या मई दिवस मनाया जाता है। भले ही अलग-अलग राष्ट्रों

में इस दिन को मनाने का तरीका भिन्न है लेकिन इसका एकमात्र उद्देश्य मजदूरों को मुख्यधारा में बनाए रखना और उनके अधिकारों के प्रति समाज को और स्वंय उन्हें जागरूक करना है।

वर्तमान समय में देश में श्रमिक हित हेतु गठित मुख्यतः अखिल भारतीय स्तर के चार-पांच श्रमिक संगठन हैं जिनमें प्रमुख हैं भाकपा की नीतियों से जुड़ी अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक), माकपा से जुड़ी सेन्टर ऑफ ट्रेड यूनियन (सीटू), कांग्रेस की छत्रछाया पायी भारतीय राष्ट्रीय यूनियन कांग्रेस (इंटक) तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध एवं भाजपा के विचारधारा से जुड़ी भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) है। इनके अलावा इन्हीं के बीच से स्वार्थ के वशीभूत होकर या फिर आपसी मतभेद के कारण उभरे अनेक श्रमिक संगठन भी हैं जिनमें हिन्दुस्तान मजदूर पंचायत, हिन्दुस्तान मजदूर सभा, किसान ट्रेड यूनियन आदि, जिन पर भी किसी न किसी राजनीतिक दलों की छाया विराजमन है। श्रमिकों के हित का संकल्प लेने वाले ये श्रमिक संगठन देश के मजदूरों को कभी एक मंच पर होने नहीं देते। देश के प्रायः सभी संगठन एक मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाते तो हैं पर संगठन का एक मंच न होना, मई दिवस की प्रासंगिता को एक मायने में नकारता भी है।

मई दिवस उन शहीदों की कुर्बानियों को याद करने का एक मौका है, जिन्होंने अपनी जिंदगी देकर पूरी दुनिया के मजदूरों को यह संदेश दिया था कि उन्हें अलग-अलग पेशों और कारखानों में बंटे-बिखरे रहकर महज अपनी पगार बढ़ाने के लिए लड़ने के बजाय एक वर्ग के रूप में एक जुट होकर अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना होगा। काम के घंटे कम करने की मांग उस समय की सबसे बड़ी राजानीतिक मांग थी। मई दिवस के शहीदों की कुर्बानी बेकार नहीं गई। जल्दी ही काम के घंटों की मांग पर संघर्ष की लहर की लहर पूरी दुनिया में फैल गई। पूंजीपति वर्ग की सरकारें आठ घंटे काम के दिन का कानून बनाने के लिए मजबूर हो गईं। यही नहीं, मजदूरी की जुझारू वर्ग चेतना से घबराई दुनिया के अधकिांश देशों की सरकारें श्रम कानून बनाकर किसी न किसी हद तक मजदूरों को चिकित्सा, आवास आदि बुनियादी सुविधाएं, तथा यूनियन बनाने का अधिकार देने, न्यूनतम मजदूरी तय करने और जब मर्जी रोजगार छीन लेने जैसी मालिकों की निरंकुश हरकतों पर बंदिशें लगाने के लिए मजबूर हो गईं।

मगर पिछले 25-30 सालों के दौरान मजदूर आंदोलन की कमजोरी और बिखराव का फायदा उठाकर पूंजीपति फिर से मजदूरों पर हावी हो गए हैं। हमारे शहीद भाइयों ने अपना खून देकर जो हक हासिल किये थे, वे एक-एक करके मजदूरों से छीन लिए गए हैं। आज फिर मजदूरों से जानवरों की तरह 12-14 घंटे काम कराया जाता है। न्यूनतम मजदूरी, जॉब कार्ड, ईएसआई, साप्ताहिक छुट्टी जैसे बुनियादी अधिकार तक हमें नहीं दिये जाते। अपनी यूनियन बनाने का अधिकार भी हमसे छीन लिया गया है। सिर झुकाकर बैल की तरह काम में जुटे रहना, कदम-कदम पर अपमान सहना और कभी भी निकाल दिए जाने के डर में जीना - यही है आज मजदूर की जिंदगी। पिछले एक साल में देशभर में मजदूर आंदोलन और उनकी जायज मांगों को कुचलने का कुचक्र चलता रहा हैं। मारूति मजदूर आंदोलन में मालिक-मजदूर संघर्ष की याद ताजा करा दी। देश में जब कभी भी श्रमिकों के हित में श्रमिक संगठनों द्वारा व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन की बात उठती रही है, तब-तब अलग-अलग खेमे में बंटे होने के कारण इस तरह के आंदोलनों को सफलता नहीं मिल पायी है। जिसके कारण श्रमिकों की समस्या आज ज्यों की त्यों रह गई है। जब कभी भी देश में श्रमिक संगठनों के बीच इस दिशा में एक होकर आवाज उठी है वह आवाज परिवर्तन का कारण बनी है।

शेष पृ0 14 पर

धारा 66–ए को रद्द करता हुआ सुप्रीम कोर्ट का फैसला

–हेम राज स्टेनो
098769 53561

24 मार्च, 2015 को उच्चत्तम न्यायालय ने सूचना एवं टेक्नालॉजी की धारा 66–ए को गैर–संवैधानिक करार देते हुए समाप्त कर दिया हैं। यह मामला क्या था तथा इससे क्या परिणाम निकलते हैं, इस बात हम विचारचर्चा करते हैं।

यह धारा सूचना एवं टेक्नॉलॉजी एक्ट में वर्ष, 2009 में सम्मिलित की गईं थी। इस धारा में संचार सेवाओं इत्यादि द्वारा आपराधिक संदेश को भेजते की सजा के बारे में व्यवस्था थी। इस में दर्ज था कि कोई व्यक्ति जो कंप्यूटर अथवा किसी अन्य साधन द्वाराः–

क. कोई भी सूचना जो पूर्ण रूप से आपराधिक अथवा धमकाने वाली किस्म की हो;

ख. कोई भी सूचना जिस के बारे में वह जानता है कि वह असत्य है, परन्तु वह सूचना लगातार तंग करने वाली, कष्ट देने वाली, खतरे वाली, बाधा डालने वाली, शत्रुता वाली, अवमानना करने वाली, हानि पहुंचाने वाली, घृणा वाली, लगातार दबाव बना कर कहने वाली हो;

ग. कोई इंटरनेट संदेश जो कि जिसे भेजा गया हो अथवा प्राप्तकर्ता को परेशान करने अथवा असुविधा देने अथवा धोखा करने अथवा गुमराह करने वाला हो;

तो ऐसा अपराध जुर्माने समेत तीन वर्ष तक की कैद करने की सजा के योग्य होगा।

इस धारा के अधीन वर्ष 2012 में जावदपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अंबिकेश महापात्रा तथा उसके पड़ौसी सुब्रुतो सेन गुप्ता को गिरफ्तार किया गया। दोष लगाया गया कि उन्होंने पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी से संबन्धित एक कार्टून बनाया है। इसी प्रकार असीम त्रिवेदी कार्टूनिस्ट को गिरफ्तार किया गया कि उसने संसद के भ्रष्ट होने बारे दर्शाता एक व्यंग्य करता हुआ कार्टून बनाया है।

उत्तरप्रदेश के ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा ने अपनी फेस बुक के द्वारा उत्तरप्रदेश के मंत्री आज़म खान के बारे लिख दिया कि ''हिन्दू राजानीतिज्ञ जब चाहें टोपी पहन लेते हैं, परन्तु हम मुस्लिम नेता कभी 'तिलक' नहीं लगाते। हिन्दू नमाज को सम्मान दे सकते हैं। परन्तु मुस्लिम वन्दे मातरम् का बहिष्कार करेंगे क्योंकि इस्लाम में धर्म–निरपेक्षता एवं देश भक्ति 'हराम' है। बस, इसी पर उसे धारा 66–ए के अधीन गिरफ्तार कर लिया गया। 2012 में जब शिव सेना प्रमुख बाल ठाकरे की मृत्यु हुई तो शाहीन नाम की छात्रा ने अपनी फेस बुक पर लिख दिया कि ''प्रतिदिन हज़ारों लोग मरते हैं। परन्तु दुनिया चलती रहती है.....केवल एक राजनेता की मृत्यु हुई है और वह भी प्राकृतिक मृत्यु। हर कोई पागल हुआ पड़ा है....सम्मान कमाया जाता है, दिया नहीं जाता, एवं निश्चित तौर पर थोपा तो बिल्कुल नहीं जाता। आज मुम्बई बन्द हुई है, सम्मान के कारण नहीं अपितु भय के कारण।'' एक दूसरी छात्रा रीनू जिसने इसको ''पसन्द (Like)'' किया, उसने टिप्पणी कीः 'हर कोई जानता है कि यह भय के कारण हुआ है। हम इस बात को मानते हैं कि उसने बहुत सी बातें अच्छी कीं, हम उसका सम्मान करते हैं परन्तु सब कुछ बन्द कर देना कोई समझदारी (Sense) नहीं है। सम्मान और भी

अनेक तरीकों से दिखाया जा सकता है।' इन दोनों छात्राओं पर पहले तो भारतीय दण्ड संहिता के अधीन घृणा फैलाने का दोष लगाया गया और फिर धारा 66-ए लगा दी गई। इसी प्रकार जून, 2014 में श्री कृष्ण कालेज, थ्रीसुर एवं उनके प्रिंसीपल को अपने कालेज की पत्रिका 'नेम' में मोदी जी के बारे में एक पहेली प्रकाशित करने पर इसी धारा के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। अन्य भी बहुत से उदाहरण हो सकते हैं।

अतः इन कुछेक उदाहरणों से देखा जा सकता है कि किसी ने किसी के साथ कुछ भी साझा (share) कर लिया, तो उसी को किसी न किसी अपराध घोषित करके शासक पार्टियों के राजनेता उसे जेल में भिजवा देते हैं ।

सूचना एवं तकनीकी एक्ट की धारा ''66-ए को रद्द करवाने के लिए वर्ष 2012 में सर्वप्रथम जनहित याचिका डालने वाली कानून की 24 वर्षीया छात्रा श्रेया सिंघल थी। प्रख्यात लेखिका तसलीमा नसरीन, राज्य सभा के आजाद एम.पी. राजीव चन्द्र शेखर ने भी इस धारा को रद्द करवाने के लिए याचिकाएं दायर कीं।

मननीय उच्चतम् न्यायालय ने धारा 66-ए के रद्द करते हुए कहा है कि यह एक ऐसी अस्पष्ट धारा है कि इस की कोई भी ठोस परिभाषा नहीं है। अर्थात् किसी को भी कोई विचार प्रकट करने के कारण उस पर मुकदमा बना कर जेल में भेजा जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने दर्ज किया है कि जो बात किसी एक को तंगी अथवा परेशानी दे सकती है, जरूरी नहीं कि वह अन्य के लिए भी ऐसा ही हो । लोकतंत्र में विचार बनाने तथा प्रकटाने की स्वतंत्रता एक मौलिक मान्यता है जो कि हमारे संविधान में सब से श्रेष्ठ महत्व रखती है। सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार द्वारा अपने नुमायंदे सरकारी वकील (Additional Solicitor general) के द्वारा इस धारा को बनाए रखने की समस्त दलीलों को रद्द कर दिया।

सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के संबन्ध में बहुत चर्चा हो रही है जो कि स्वाभाविक भी है क्योंकि यह एक नये प्रकार का फैसला है। इस चर्चा के बारे में पहले हम दो-तीन बिन्दुओं के बारे में बात करते हैं तथा फिर किसी परिणाम पर पहुचेंगे।

यद्यपि सुप्रीम कोर्ट का फैसला एक सराहनीय कदम है परन्तु क्या सच में ही इससे विचार बनाने एवं प्रकट करने के लिए प्रत्येक नागरिक को छूट होगी? नहीं! ऐसा क्यों नहीं? आओ देखें।

माननीय उच्चत्तम न्यायालय ने अपने फैसले में फोटो, पेंटिंग, फिल्में, कार्टूनों इत्यादि के माध्यम से विचारों के प्रकटाने की स्वतंत्रता वाले बिन्दु को नहीं छुआ। जैसा कि देखने-सुनने में प्रायः आता है कि यदि कोई पेंटिंग बना दे तो कोई न कोई पक्ष यह कह देता है कि इससे उनकी धर्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई गई हैं । अतःअच्छा होता यदि सुप्रीम कोर्ट ने इस बिन्दु को भी छुआ होता। इसके अतिरिक्त श्रेया सिंघल ने अपनी याचिका में धारा 69-ए को समाप्त करने की मांग की थी परन्तु इस धारा 69-ए को रद्द नहीं किया गया। इस धारा 69-ए के अनुसार कंप्यूटर के द्वारा किसी सूचना को सार्वजनिक पहुंच से रोकने के लिए सरकार निर्देश जारी कर सकती है। अतः इस प्रकार देखने से सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के द्वारा विचार बनाने एवं प्रकट करने की स्वतंत्रता तो व्यवहार में नाम की स्वतंत्रता बन कर रह जाएगी। हां, इस फैसले से चेतन्न वर्ग में विचार प्रकटाने के बारे में चर्चा छिड़ सकती है जो अपने आप मे एक अच्छी बात है। परन्तु वर्तमान दौर में सरकारें जब चाहेंगी अपनी मनमर्जी से किसी न किसी लूले-लंगड़े बहाने की आड़ में किसी भी व्यक्ति के विचार बनाने एवं प्रकटाने पर उसे जेल में भेज दिया करेगी । इसके अतिरिक्त राज्यसत्ता के विरुद्ध बग़ावत, अश्लीलता एवं धर्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने पर किसी को

भी अन्दर किया जा सकता है। किसी को जाति-सूचक शब्दों का प्रयोग करने पर जेल में भेजा जा सकता है। यह सही है कि इन सभी बातों के द्वारा किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाई जानी चाहिए। हम ऐसा करने के सख्त विरुद्ध हैं। परन्तु प्रश्न कुछ और ही है। वह क्या है ? यह देखने से पूर्व हम एक यथार्थक केस का उदाहरण प्रस्ततु करते हैंः

बरनाला के एक प्रकाशन ने बाबू रजब अली की पूर्व में प्रकाशित पुस्तक पुनः प्रकाशित कर दी। उस पुस्तक में वर्तमान के दलित वर्ग को संबोधित किये गये उस समय में प्रयोग किये जाने वाले शब्द दर्ज थे, जो कि स्वाभाविक ही है। इस पर पंजाब के शासक पक्ष ने उस प्रकाशन के साथ अपनी कोई शत्रुता निकालने के लिए उस पर एस. सी.एस.टी. एक्ट लगा कर उन्हें जेल में बन्द कर दिया। आश्यर्चजनक बात यह है कि इस प्रकार के शब्द कई धार्मिक ग्रंथों में भी दर्ज हैं, और आश्चर्यजनक एवं जुल्म की बात यह भी कि उस के साथ एक एस. सी. पर भी मुकदमा दर्ज करके उसे भी जेल में बन्द कर दिया जबकि कानून के अनुसार भी एस.सी. /एस.टी. वर्ग के आदमी पर ऐसा मुकदमा दर्ज ही नहीं किया जा सकता।

अतः कहने का तात्पर्य यह है कि राज्यसत्ता के विरुद्ध बग़ावत, अश्लीलता एवं धर्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने पर एवं जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करने पर किसी को भी जेल भेजने का पैमाना कौन तय करता है ? निश्चय ही यह सरकारी कुर्सियों पर बिराजमान शासक तय करते हैं तथा भविष्य में भी ये शासक ही तय करते रहेंगे।

अब और देखो! इन शासकों का कहना है कि हमारा देश आज़ाद है। चलो, यदि हम आजादी वाली इनकी बात मान भी लें तो क्या यह हैरानगी एवं साथ ही शर्मनाक बात नहीं कि आजादी के 68 वर्षों के पश्चात् यह बहस हो रही है कि यहां के नागरिकों को किन शर्तों के बन्धन में बांध कर विचार बनाने एवं प्रकट करने की आजादी दी जाए। किसी भी नागरिक पर ये शर्तें थोंपना कि वह इस अथवा उस दायरे में रह कर ही अपने विचार बनाए एवं खास रूप में ही प्रकट करे, यह विचार बनाने एवं प्रकट करने की आजादी कैसे हुई ? किसी तरह भी नहीं।

सभी को पता है कि अंग्रेजों को देश से बाहर करने के लिए उनकी राज्यसत्ता के विरुद्ध हमारे देश में हिंसक कही जाने वाली कार्रवाइयां भी हुईं तथा सविन्य अवज्ञा जैसे आन्दोलन भी चले। परन्तु वर्तमान देशी शासक राजसत्ता के विरूद्ध बगावत, अश्लीलता एवं धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के नाम पर किसी को भी अन्दर कर देने को उचित ठहरा रहे हैं। या तो वे इतिहास को गलत घोषित करें ? परन्तु वे नहीं करेंगे। यहां पर तो यही निष्कर्ष निकलता है कि आज के शासक जनता के प्रतिनिधि एवं सेवक होने के स्थान पर अपने आप को मालिक(Master) समझ रहे हैं। वे नागरिकों की जुबान पर ताला लगाए रखना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने प्रत्येक नागरिक को विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता देने वाली संविधान की धारा 19(1) के साथ ही संविधान की धारा 19(2) भी बनाए रखी है। धारा 19(2) में दर्ज है कि किसी नागरिक का विचार यदि भारत की संप्रभुता एवं एकता, राज्य की सुरक्षा, न्यायालय की अवमानना करने, किसी अपराध के लिए उकसाने, वगैरह-वगैरह की बात करता है तो उस पर मुकदमा चलाया जा सकता है।

अतः कौन सा कानून बनाया जाए एवं समाप्त किया जाए तथा इन कानूनों को अपने हक में प्रयोग करने के लिए इसका कान किस तरफ से पकड़ा जाए, यह सभी कुछ शासकों के हाथ में है। राजसत्ता पर काबिज शासकों द्वारा कानून को ताकत देकर इसका प्रयोग निजी हितों के लिए किया जाता है। इसलिए शासक जब भी चाहें आम नागरिकों के विचारों की आजादी के गले में हाथ

डाल कर उन्हें बेबस कर देते हैं तथा शासक वर्ग को यदि यह महसूस हो कि जनता में विरोध और बेचैनी बढ़ रही है तो ये उनके गले पर से हाथ कुछ ढीला कर लेते हैं। अतः विचारों की आजादी देने अथवा न देने की ताकत इन शासकों के हाथों में है। पहले अंग्रेज इसी प्रकार किया करते थे, अब हमारे देशी शासक यह कर रहे हैं।

इसलिए यदि प्रत्येक नागरिक को अपना-अपना दायरा तय करके अपनी-अपनी कला के अनुसार विचार बनाने एवं प्रकट करने की आजादी देनी है तो इस पर प्रत्येक प्रकार की पाबंदियां समाप्त करनी होंगी तथा संविधान में इन पाबंदियों वाली धाराओं को समाप्त करना पड़ेगा। परन्तु इन सरकारों से ऐसी आशा करना शेखचिल्ली का स्वप्न ही है क्योंकि शासक शोषक वर्गों की नुमायंदगी करते हैं। इस की परख करने के लिए दो उदाहरण लो-प्रथम भूमि अधिग्रहण के बिल का तथा दूसरा श्रम कानून, जिसमें श्रमिकों को पहले थोड़ी-बहुत राहत दी जाती थी, को समाप्त करने की। लीजिए, देखिएः

भूमि अधिग्रहण बिल बारे अध्यादेश जारी कर दिया गया है। यह किसानों की भूमि छीन कर कार्पोरेट घरानों को देने का एक औज़ार है। अतः यह बिल किसान विरोधी एवं कार्पोरेट घरानों के पक्ष में जाता है। आश्चर्यजनक बात यह देखो कि भाजपा वाले, जिनके नेतृत्व में केन्द्र में एन.डी.ए. सरकार चल रही है, इस के संबन्ध में वे अत्यन्त थोथी दलीलें दे रहें हैं। एक दिन टी.वी. पर भाजपा का एक प्रवक्ता कह रहा था कि किसान को बिजली की जरूरत है, अतः बिजली बनाने के लिए कारखाने लगाना जरूरी है तथा कारखाने लगाने के लिए भूमि की आवश्यकता रहेगी। इसलिए भूमि अधिग्रहण करना आवश्यक हैं, परन्तु यह बात वह भूल गया कि यदि किसान की भूमि ही छिन गई तो उसे किस ट्यूबवेल अथवा ट्रैशर चलाने के लिए बिजली की आवश्यकता रहेगी? इसी प्रकार श्रमिकों को थोड़ा-बहुत राहत देने वाले कानून समाप्त किये जा रहे हैं। यह किसके पक्ष में जाते हैं? स्पष्ट तौर पर पूंजीपतियों के हक में।

अतः स्पष्ट हैं, जब से मानव समाज आपस में दो विरोधी वर्गों में बंटा चला आ रहा है तब से लेकर कभी भी विचार एवं कर्म एक वर्ग के पक्ष में दूसरे के विरोध में भुगतता रहा है तथा यह दो विरोधी वर्गों के अस्तित्व में रहने तक ऐसे ही भुगतता रहेगा, चाहे वह कानून हो अथवा कोई अन्य विचार एवं कोई कर्म।

अतःसमस्त विचार-चर्चा के ये निष्कर्ष निकलते हैं किः

प्रथम, जहां पर आज विचार बनाने एवं प्रकट करने की आजादी संबधी हर उस व्यक्ति जो थोड़ा-बहुत भी इस के हक में है, उसे साथ लेकर संघर्ष करने की आवश्यकता है। यहां पर यह तथ्य भी नोट करना बनता है कि कितने तबके ऐसे हो सकतें हैं जो कि जनहितैषी शक्तियों का आर्थिक क्षेत्र की मांगों में कोई साथ न दें अथवा जिन की अपनी कोई आर्थिक मांग की चुभन उस प्रकार से तीखी न हो, जिस प्रकार से श्रमिक वर्ग की है, परन्तु वे तबके जनतांत्रिक मसलों पर जन-पक्षीय शक्तियों का पूरा अथवा कुछ सीमा तक साथ दे सकने में समर्थ होते हैं। इसलिए ऐसे मसलों पर इन तक पहुंच करते हुए इन को साथ लेना जन-पक्षी शक्तियों की जिम्मेदारी बनती है, तथा -

द्वितीय, यह लड़ाई लड़ते हुए यहां पर समानता वाले समाज के सृजन की आवश्यकता है। इस समाज के निर्माण के होने पर ही प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार प्रकट करने का बराबर का अधिकार होगा। तब हर कोई सही विचार को प्रसन्नता से स्वीकार करेगा क्योंकि तब किसी को भी दबाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। *हिन्दी अनुवादः*

बलवन्त सिंह, लैक्चरार

सत्य

-कर्नल इंगरसोल

गतांक से आगे.....

(3)

'देव-वाद' (ईश्वरवाद) को छोड़ कर शेष जितने वाद हैं, वे सब सत्य घटनाओं को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। जो किसी नई बात का पता लगाता है, उसकी स्तुति होती है।

लेकिन किसी धर्म की पाठशाला में यदि किसी अध्यापक को किसी ऐसी बात का पता लगे जिसका सिद्धांत से मेल न हो, तो उसे या तो छिपा कर रखना चाहिए या उसे अस्वीकार करना चाहिए, नहीं तो उसे अपने पद से हाथ धोना पड़ेगा। मानसिक सत्यप्रियता एक अपराध है, कायरता और ढोंग महान गुण हैं।

जिसका बाद के सिद्धांत से मेल नहीं बैठता, उसे यथार्थ होने पर भी असत्य कहकर दुत्कारा जाता है और जो कोई उस बात को कहता है, उसे नास्तिक कहा जाता है। हर अध्यापक को 'मिथ्यात्व' की वायु में सांस लेना पड़ता है। देव शास्त्र ही एकमात्र बेईमान शास्त्र है-ऐसा शास्त्र जो विश्वास पर निर्भर करता है, अंध-श्रद्धा पर निर्भर करता है। यही एक ऐसा शास्त्र है, जो विचार से घृणा करता है और जो तर्क की निंदा करता है।

कैथोलिक धर्म के सबसे बड़े-बड़े शास्त्रियों ने तर्क की निंदा की है। उन्होंने उसे मानवता के शत्रु द्वारा फैलाया गया प्रकाश कहा है। उन्होंने कहा कि यह वह सड़क है, जो विनाश की ओर जाती है। प्रोटेस्टैंट धर्म के सब शास्त्री-लूथर से लेकर अपने इस युग के कट्टरवादियों तक तर्क के शत्रु हुए हैं। सभी समयों के कट्टरपंथियों की विज्ञान से शत्रुता रही है। उन्होंने गणित ज्योतिष के जानकारों की ऐसी निंदा की है, मानों वे कोई अपराधी हों और भूगर्भ-वेत्ता हत्यारे हों। उन्होंने चिकित्सकों को 'परमात्मा' का शत्रु समझा है, क्योंकि वे विधाता के लिखे को बदलने का प्रयत्न करते हैं। जीव शास्त्रज्ञ, नृशास्त्रज्ञ, पुरातत्व-वेत्ता, पुराने अभिलेखों के पाठक, विध्वस्त नगरों के खोजी-सभी को इन धर्म खोजियों ने घृणा की दृष्टि से देखा है। उन्हें डर था कि ये किसी बात का पता न लगा लें, जिसका बाईबल से मेल न खाता हो।

इन देव शास्त्रियों ने दूसरे धर्मों का अध्ययन करने वालों की निंदा की है। उनका आग्रह रहा है कि ईसाईयत पनपी नहीं है, उसमें विकास नहीं हुआ है-वह तो इलहाम है। उन्होंने किसी भी दूसरे प्राकृतिक धर्म से इसका संबंध स्वीकार करने से इन्कार किया है।

अब बातें पता लगी हैं उनसे असंदिग्ध रूप से यह सिद्ध हो जाता हे कि सभी धर्म एक प्रकार से एक ही स्त्रोत से उत्पन्न हुए हैं, लेकिन एक भी कट्टरपंथी ईसाई देव-शास्त्री ऐसा नहीं होगा, जो इस बात को स्वीकार करे। उसे तो अपने सिद्धांत, अपने इलहाम की रक्षा करनी है। वह ईमानदार हो ही नहीं सकता। उसे ईमानदारी के स्कूल में शिक्षा ही नहीं मिली। उसे ईमानदार होना सिखाया ही नहीं गया। उसे विश्वास करने की शिक्षा मिली है और शिक्षा मिली है, विश्वास का पक्ष लेकर लड़ने की, तर्कों के ही विरुद्ध नहीं, यथार्थ के विरुद्ध भी।

सारे संसार में एक भी देव शास्त्री ऐसा नहीं होगा, जो इस बात का रत्ती भर भी प्रमाण पेश कर सके कि बाईबल ईश्वर का इलहाम है।

देव-शास्त्री लोग केवल कथन मात्र पर

निर्भर करते हैं, उनके पास कोई प्रमाण नहीं। उनका दावा है कि उनकी इलहामी किताब तर्क से ऊपर है और उसे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

ईसा मरकर फिर भी जी उठा, इसे वे किस तरह प्रमाणित करते हैं? एक पुस्तक में लिखा है। पुस्तक किसने लिखी है? उन्हें पता नहीं। यह क्या प्रमाण है? जब तक हम यह सिद्ध न करें कि पुस्तकों में लिखी हुई सभी बातें सत्य ही होती हैं, तब तक यह कोई प्रमाण नहीं।

एक चमत्कार की स्थापना के लिए एक दूसरा चमत्कार चाहिए और उसकी स्थापना के लिए फिर एक और चमत्कार और उसके लिए फिर एक और चमत्कार-इस प्रकार यह सिलसिला अनंत है। किसी भी चमत्कार को सिद्ध करने के लिए मानवी प्रमाण पर्याप्त नहीं। किसी भी चमत्कार में विश्वास करने के लिए यह आवश्यक है कि हर आदमी स्वयं उसका साक्षी हो सके।

उनका कहना है कि दो हजार वर्ष पहले जो चमत्कार दिखाए गए, उनसे ईसाइयत की सत्यता सिद्ध हो गई। मूर्खतापूर्ण कथन मात्र से ही छोटी आयु में ही तरुणों के मस्तिष्क विकृत करके, इनमें से कोई भी चमत्कार स्थापित हो सकता है। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए देव शास्त्री बच्चों पर उनके झूलों में ही, उनके शिशु गृहों में ही आक्रमण करता है। भोले-भाले मस्तिष्कों में वे मिथ्या विश्वास के बीजारोपण करते हैं। वे बच्चों के मस्तिष्क तथा उनकी कल्पना शक्ति को गंदा करते हैं। जो हंसते-खेलते हैं, उन्हें ये यातनाओं से भयत्रस्त करते हैं और जो बदमाश हैं, उन्हें झूठी सांत्वना देते. हैं। इसके प्रकार उनके दिमाग गंदे किए जाते हैं, उन्हें पंगू बनाया जाता है। इस देव शास्त्र के अतिरिक्त अन्य सभी विषयों के बारे में स्वतंत्रता है। सभी दिशाओं में बालक को अध्ययन करने और विचार करने की प्रेरणा दी जाती है। लेकिन वह अपनी माता की गोद से ही सीधा रविवार-पाठशाला में जाता हैं उस बेचारे के छोटे से मस्तिष्क को चमत्कारी और आश्चर्य कर बातों से भर दिया जाता है। उसे बताया जाता है कि एक परमात्मा है, जिसने यह संसार बनाया और जो लोगों को पुरस्कार और दंड देता है। उसे बताया जाता है कि उसी परमात्मा ने बाईबल बनाई और ईसा उसका बेटा था। कोई तर्क नहीं उपस्थित किया जाता। कोई प्रमाण नहीं दिया जाता। केवल कथन मात्र की काफी होता है। यदि वह प्रश्न पूछता है तो उसकी जिज्ञासा को और भारी भरकम बातों से भर दबा दिया जाता है। उसे कह दिया जाता है कि वह शैतान से सावधान रहे। प्रत्येक रविवार-पाठशाला एक प्रकार का दंड गृह है, जहां बच्चों के मस्तिष्कों को यंत्रणा दी जाती है और उन्हें बिगाड़ा जाता है। उन्हें जोर जबरदस्ती से कैथोलिक या प्रोटेस्टैंट सांचे का बनाया जाता है। उनकी मौलिकता, उनके व्यक्तित्व, उनकी आत्मा की सत्य प्रियता के विनाश के लिए सब संभव उपाय किए जाते हैं। देव शास्त्रियों के धर्म स्कूलों तक पहुंचते-पहुंचते वह विनाश की पूर्णता को प्राप्त हो जाता है।

जब उपदेशक धर्म स्कूल से बाहर निकलता है तो वह सत्य की खोज नहीं करता। वह तो उसके पास है ही। उसके पास परमात्मा के यहां का इलहाम है और उस इलहाम से मेल खाने वाला एक मजहब है। उस इलहाम का पक्ष लेकर लड़ना उसका कर्त्तव्य है। इलहाम तथा उसके सिद्धांत के विरुद्ध जो तर्क है, उन्हें न वह पढ़ता है, न सुनता है। उसके अपने मत के विरुद्ध जो भी बातें होंगी, वह उन्हें अस्वीकार करेगा। उसके लिए सच्चा बनना असंभव है। उसके मत में अनंत सुख और अनंत यातना की बेहिसाब बातें भरी पड़ी हैं। वह सब झूठ में विश्वास करने और सत्य को अस्वीकर करने से ही प्राप्त होती हैं।

छानबीन करना एक असीम खतरा है, अविश्वास करना एक महान अपराध है और इसके दोषी को अनंत यातना मिलनी चाहिए तथा मिलेगी। एक महान सच्ची बात के आगे उसका साहस हार जाता है, उसका मनुष्यत्व जाता रहता है और वह

चाहे विश्वास करे चाहे न करे, भय के मारे चिल्ला उठता है कि मैं विश्वास करता हूं।

वे कहते हैं कि अंध श्रद्धा अच्छी चीज है और विचार करना खतरनाक है। तो भी वह शिक्षक बनता है–एक नेता, अपने मानव बंधुओं को शिक्षा देने के लिए परमात्मा की ओर से भेजा गया एक विशेष व्यक्ति।

ये कट्टरपंथी लोग वास्तव में उन सब महान पुरुषों को बदनाम करते रहे हैं जो हमारी इस शताब्दी में हुए। उन्होंने महान भूगर्भ–वेत्ता लैल को बुरा बताया, क्योंकि उसने संसार को सच्ची बातें बताई थीं। उन्होंने हम बोल्ट से घृणा की और उसको छोटा बनाया, जोकि जाति के सबसे बड़े चिंतकों में से एक था। उन्होंने डार्विन का मजाक बनाया और उसे नीचे घसीटा जो सबसे महान प्रकृतिज्ञ था, बड़ा सूक्ष्मदर्शी और संसार का सबसे अधिक आश्चर्यजनक सत्य शोधक।

प्रत्येक कट्टरपंथी धर्म वेदी से एक न एक बड़े वैज्ञानिक का विरोध हुआ है, ऐसे लोगों का जिन्होंने संसार को बुद्धि के प्रकाश से भर दिया।

संप्रदायों ने प्रत्येक विज्ञान को, प्रत्येक विचारक से शत्रुता मोल ली है और शताब्दियों तक अपनी शक्ति का प्रयोग केवल बुद्धिवादी प्रगति को रोकने में ही किया है।

इन पूज्य लोगों को स्वतंत्र होना चाहिए। उन्हें आने वाले भविष्य के आगे चलना चाहिए, लेकिन ये तो वे चमगादड़ और उल्लू हैं जो खंडहरों में रहते हैं और प्रकाश से घबराते हैं। जो ईमानदार आदमी अपने विचारों को व्यक्त करता है, वे नास्तिक कहकर उसकी निंदा करते हैं ऐसे आदमियों का मुंह बंद रखने के लिए वे जो कुछ भी कर सकते हैं, करते हैं। वे अपनी बाईबल को कानून के बल पर सुरक्षित रखना चाहते हैं। वे लोगों के उपहास से बचने के लिए कानून बनाने वाली सभा की शरण में जाते हैं। वे चाहते हैं कि अदालतें उनके विरोधियों की दलीलों के उत्तर दें। यह सब कायरता, ढोंग और ईर्ष्या के उचित मिश्रण का परिणाम है।

किस कट्टरपंथी 'धर्म वेदिका' से कब कौन काम की बात कही गई है? किस धार्मिक समिति ने मानवता के बुद्धि–धन में वृद्धि की है?

शताब्दियां बीतीं। ईसाई महंतों ने ईसाई संसार के लिए एक कानून–शास्त्र बनाया–मूर्खतापूर्ण, अ–दार्शनिक और अंतिम दर्जे का निर्दयतापूर्ण।

ईसाई धर्म का कहना है कि इसने लोगों को कारूणिक और न्यायी बनाया।

क्या इसने नास्तिकों को यातनाएं देकर ऐसा किया? उनकी आंखों को नष्ट करके किया? उन्हें जीवित भूत बनाकर किया?

वह कौन सा विज्ञान है जिसे ईसाई महंतों से सहायता मिलती हो और जिसे उन्होंने आगे बढ़ाया हो? किस धार्मिक संप्रदाय ने अपने घर में किसी ऐसे सत्य को आने दिया है, जिसके कहने वालों को दुख सहन करना पड़ा हो?

वे कहते हें कि धार्मिक संप्रदाय शिक्षा के मित्र रहे हैं और हैं। मैं इसे अस्वीकार करता हूं। ईसाई पादरियों ने जो कालेज खोले वे लोगों को शिक्षा देने के लिए नहीं, किन्तु उन्हें अपने मत में लाने के लिए, उन्हें धर्म का संरक्षक बनाने के लिए। यह सब तो स्व–रक्षा मात्र के लिए किया गया है। कोई कट्टरपंथी धर्म न कभी वास्तविक शिक्षा का समर्थक रहा है न रहेगा। कैथोलिक धर्म को मानने वाला उतनी ही शिक्षा देना चाहता है जो किसी को कैथोलिक बना सके, प्रोटेस्टैंट धर्म का मानने वाला उतनी ही शिक्षा देना चाहता है, जो किसी को प्रोटैस्टैंट बना सके। किन्तु दोनों ही उस शिक्षा के विरोधी हैं, जो आदमियों को मुक्त करती है।

वे यह भी कहते हैं कि ईसाई–पादरियों ने अस्पताल बनवाए। यह सत्य नहीं है। आदमियों ने जो अस्पताल बनाए वे इसलिए नहीं बनवाए कि वे ईसाई थे, किन्तु इसलिए कि वे आदमी थे। उन्होंने अस्पताल दया करके नहीं बनाए, किन्तु बनवाए केवल स्व–रक्षा के लिए।

यदि कोई चेचक का रोगी तुम्हारे दरवाजे पर आता है, तब न तो तुम उसे घर में अंदर घुसने दोगे और न जान से ही मार सकोगे। मजबूरी के कारण तुम्हें उसके लिए जगह की व्यवस्था करनी ही होगी और यह तुम केवल स्व-रक्षा के लिए करते हो। तुम्हारी ईसाइयत को इससे कुछ लेना-देना नहीं है।

ये धार्मिक संप्रदाय किसी को कुछ नहीं दे सकते, क्योंकि ये कुछ पैदा ही नहीं करते। कहा जाता है कि धार्मिक संप्रदायों ने आदमियों को क्षमाशील बना दिया है। मैं स्वीकार करता हूं कि धार्मिक-संप्रदायों ने क्षमा के उपदेश दिए हैं किन्तु उन्होंने कभी, एक भी शत्रु को क्षमा नहीं किया। जो महान और साहसी विचारक हुए हैं, उनके विरुद्ध इन्होंने अनंत झूठों का प्रचार किया है। किसी धार्मिक संप्रदायों ने किसी ईमानदार विरोधी के बारे में न कभी सत्य बात कही और न ही कहने का प्रयत्न किया।

ये हमारे पूज्य व्यक्ति जब देखते हैं कि धनी लोग इनका प्रवचन सुनने नहीं आते, तब ये धन के विरुद्ध, फैशन के विरुद्ध तथा आराम पसंदगी के विरुद्ध दहाड़ते हैं। वे धनियों को नरक में और भिखमंगों को स्वर्ग में दिखाते हैं, किन्तु जब इनका प्रवचन सुनने वालों में धनियों की कमी नहीं रहती, तब ये अपनी तोप का मुंह दूसरी ओर घूमा देते हैं।

प्रत्येक कट्टरपंथी धर्म असत्य की नींव पर खड़ा है। प्रत्येक भला कट्टरपंथी पुजारी, जिस बात को वह नहीं जानता, उसकी घोषणा करता है और जिसे वह जानता है, उसे स्वीकार नहीं करता।

अंध-श्रद्धा भिखमंगों का काम है, डाकुओं का अत्याचारियों का।

विज्ञान परोपकार करता है।

मिथ्या-विश्वास से लोगों का रक्त बहता है।

विज्ञान से प्रकाश मिलता है।

ईसाई का परमात्मा एक कल्पना है, शायद एक अनुमान है। न कोई आदमी और न कोई आदमियों का समूह ही 'कब और कहां से'? का उत्तर दे सकता है। आदमी की बुद्धि जीवन के रहस्य को नहीं समझ सकती। अपने जन्म से पहले हम नहीं जा सकते और अपनी मृत्यु के आगे भी हम कुछ नहीं देख सकते। तमाम कर्त्तव्य, तमाम आचार-शास्त्र, तमाम ज्ञान तथा तमाम अनुभव इसी जीवन और इसी संसार के लिए हैं।

हम जानते हैं कि आदमी हैं, स्त्रियां हैं और बच्चे हैं। हम जानते हैं कि प्रसन्नता मुख्यतः आदमी के आचरण पर निर्भर करती है।

हम संतुष्ट हैं कि सारे देवता काल्पनिक ढकोसले ही हैं और परमात्मा है ही नहीं।

संसार एक नए युग में प्रवेश कर रहा है। हम उपयोगी-धर्म में विश्वास करना सीखने लगे हैं।

हमारे ईसा, हमारे अवतार, हमारे पैगम्बर वे सब आदमी हैं, जिन्होंने जंगलों को काटा, पृथ्वी को जोता, दरियाओं पर लोहे के पुल बिछाए, रेलें और नहरें बनाई, बड़े-बड़े जहाजों तथा अन्य वाष्पयानों का आविष्कार किया, वे सब आदमी हैं, जिन्होंने तार और बेतार के तार बनाए तथा अपनी खोज और श्रम से बिजली को प्रकाशित कर दिया। वे सब आदमी हैं, जिन्होंने करघों और तकुओं का आविष्कार कर संसार को कपड़े पहनाए। वे सब आदमी हैं। जिन्होंने छपाई और बड़े-बड़े छापेखानों का आविष्कार किया, जिससे सारा संसार काव्य, उपन्यास तथा वैज्ञानिक ग्रंथों से भर गया, जिससे उन बच्चों तक के लिए ज्ञान सुरक्षित रहता है, जो अभी पैदा भी नहीं हुए। वे सब आदमी हैं, जिन्होंने उन सब मशीनों का आविष्कार किया, जिसे हमारे काम की लकड़ी तथा लोहे की चीजें बनती हैं। वे आदमी जिन्होंने आकाश को एक सिरे से दूसरे तक छान डाला और तारागण के रास्तों का पता लगाया, जिन्होंने ऊंचे पर्वतों और गहरे समुद्रों में संसार की कथा पढ़ी। वे आदमी हैं, जिन्होंने वेदना पर विजय पाई और

मनुष्य की आयु को बढ़ाया। वे महान दार्शनिक और प्रकृतिज्ञ जिन्होंने संसार को प्रकाश से भर दिया। वे महान कवि जिनके काव्यों ने हमें मस्त बनाया। वे महान चित्रकार और मूर्तिकार जिन्होंने चित्रपट को वाणी दी तथा पत्थर में प्राण डाल दिए। वे महान व्याख्याता जो संसार को अपने साथ बहा ले गए। वे गीतकार, जिन्होंने अपना जीवन शब्दों की ध्वनि को समर्पित कर दिया, वे उद्योग धंधों के सेनानी, वे बड़े-बड़े माल पैदा करने वाले तथा वे सैनिक, जिन्होंने न्याय का पक्ष लेकर युद्ध किया। विज्ञान की विजय ही हमारे चमत्कार हैं। वे किताबें जिनमें प्रकृति के संबंध में यथार्थ बातें लिखी हैं, हमारे धार्मिक ग्रंथ हैं और वह शक्ति की परमात्मा है, जो हर अणु में है, जो हर सितारे में है, जो हर उस चीज में है, जो जीती है, बढ़ती है और विचार करती है, जो आशा करती है और कष्ट पाती है।

ईश्वर को हम जान नहीं सकते, प्रकृति की सीमा के परे हम जा नहीं सकते। सभी कर्त्तव्यों का पालन यहीं इसी संसार में होना चाहिए। हम मैत्री करें और मेहनत करें हम सबर करें और काम करें। हम साहसी बनें और प्रसन्न रहें-अपने दिलों को भलाई के प्रति और दिमाग को सच्चाई के प्रति खुला रखें हम स्वतंत्र जीवन व्यतीत करें। हम आशा करें कि भविष्य में सारी मानव-संतान सुखी हो सकेगी और सबसे ऊपर हम करें अपने भीतर के सत्य की रक्षा।

(लेखक की पुस्तक 'स्वतंत्र चिंतन' में से)

★★

''क्या ईश्वर पाप को रोकना चाहता है परन्तु ऐसा करने के वह योग्य नहीं ? तो फिर वो सर्व-शक्तिमान नहीं।

क्या वो कर सकता है परन्तु करना नहीं चाहता ? तो वह द्रोही है।

क्या वह कर भी सकताा एवं चाहता भी है ? तो फिर उसे ईश्वर किस लिए कहा जाए ?''

एपिक्यूरियस (341-270 ई.पू.)

पृष्ठ 5 का शेष...

.(श्रमिक के अधिकारों की..)

.....दयनीय बनी हुई है । एक तरफ ठेकेदारी प्रथा के बढ़ने से श्रमिकों को सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम मजदूरी नहीं मिल पा रही है, वहीं नई श्रमिक नीतियों ने उद्योगों में कार्यरत श्रमिक को मशीन रूप में बदल दिया है। काम के घंटे अनिश्चित होते जा रहे हें । नए कानूनों के अनुसार यूनियन बनाने के मापदण्ड बदल दिए गये हैं । जहां श्रमिक का जीवन बदहाल है वहीं किसान भी मरणासन्न स्थिति में पहुंच रहा है। कुदरत के प्रकोप के कारण और सही मुआवजा ना मिलने के कारण किसान आत्महत्या जैसे कदम उठा रहा है। अकेले महाराष्ट्र में सात किसान प्रति दिन आत्महत्या जैसे कायराना कदम उठाने को विवश हैं। आज किसान नए भूमि अधिग्रहण कानून के खिलाफ आंदोलनरत हैं जिस पर देश की राजनैतिक पार्टियां रोटियां सेंक रही हैं। किसान के दर्द को भी एक मजाक बनाया जा रहा है। इस घड़ी में किसान मजदूर को संगठित होकर संघर्ष करना होगा और राजनैतिक पार्टियों के चंगुल से बाहर आकर स्वतंत्र संगठन बनाने होंगे । ऐसे में मई दिवस का दिन हमें याद दिलाने आया - गुलामी की नींद से जागो, मजदूर संघर्षों की शानदार विरासत को याद करो। मजदूर वर्ग हमेशा के लिए परास्त नहीं हुआ है। लड़ाई अभी जारी हैं पहला दांव पूंजीपतियों का सफल हुआ है। लेकिन मुठ्ठीभर लुटेरे जोर-जुल्म से करोड़ों-करोड़ मेहनतकश आबादी को हमेशा के लिए दबाकर नहीं रख सकते। आने वाले वर्षों में पूंजी और श्रम के बीच आखिरी जंग होगी जिसमें जीत मेहनतकशों की ही होगी। इसकी तैयारी करनी होगी। यही मई दिवस का संदेश है।

★★

महामहिम उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी जी का भाषण

(डा. नरेंद्र दाभोलकर द्वारा लिखी गई तीन पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद के विमोचन के अवसर पर दिः 27-2-2015 को आयोजित एक कार्यक्रम में महामहिम उपराष्ट्रपति द्वारा दिये गए भाषण के प्रमुख अंश-संपादक मण्डल)

दोस्तो!

20 अगस्त, 2013 अपने इतिहास में इसे As as black day याद किया जायेगा। इसलिये कि उस दिन एक ऐसे आदमी की हत्या हुई जिसने किसी का कोई नुकसान नहीं किया,बल्कि पूरे समाज में यह बात पहुंचाने की कोशिश की- जैसे-जैसे जब दिन फूटता है, क्रोश-क्रोश अंधेरा कम से कम होता हैं ।उन्होंने जो मन का अंधेरा था, उसको कम करने की कोशिश की थी और लोगों को बताया कि उस को कम करने की क्यों जरूरत है। एक अजीब बात है कि इस देश में जहां ऐतिहासक तौर पर इतने महान् बड़े-बड़े महापुरुष दार्शनिक, गणितज्ञ हो चुके हैं, वहां जनता को इस बात को समझने की जरूरत क्यों है कि Rational thinking is better आखिर तार्किक सोच में किसी धर्म का प्रचार तो हो नहीं रहा है, किसी दर्शन का प्रचार नहीं हो रहा है।

जैसे गणित में बताया जाता है कि अगर 2 में 2 जोड़ा जाये तो वह 4 होगा। और 10 में से अगर 5 घटाया जाये तो वह 5 होगा, तो यह सोचने का एक तरीका है। वह तरीका आप किसी विषय पर इस्तेमाल कर सकते हैं। बस, इतनी सी बात बताई थी। अब उस पर उनके खिलाफ लोग क्यों हो गये? यह सोचने की बात है। हमारे देश में विरासत हजारों सालों की हैं जहां आदमी तार्किक ढंग(logicall] rationally) से सोचता है, तो उसकी मुखालफ़त करने की क्या जरूरत है? और सिर्फ मुखालफ़त नहीं करना, उस मुखालफ़त को इस हद तक लेके जाना कि, एक बिल्कुल निर्दोष (innocent) आदमी का कत्ल कर देना। तो यह सोचने की बात है।

जिस चीज को उन्होंने अपनी सोच में एक झंडे की तरह उठाया था, कि महाराष्ट्र असैम्बली में एक कानून अंधश्रद्धा निरोधक कानून (Anti-Superstition Law) पारित हो गया था। वह सालों से चल रहा था और पारित नहीं हो रहा था, मगर उनकी हत्या के तुरंत बाद वह पास हो गया। मैं, इसको इस तरह से देखता हूं कि देखिए कि हर तरफ यह बात हो रही है कि देश में तरक्की की बहुत जरूरत हैं और बहुत तरक्की हो भी रही है। एक तरफ तो भौतिक तरक्की हो रही है, जैसे नये साईंटिफिक गजेट्स आ रहे हैं। नई चीजें आ रही हैं, नए उद्योग आ रहे हैं, नई तकनीक आ रही है, जो बहुत अच्छी चीज है। मगर, अगर हमारी सोच उल्टी दिशा में जा रही है। हमारी सोच जो है वह नई दुनिया और नई तकनीक के बिल्कुल उल्टी दिशा में है। तो आखिर में किसी भी वक्त हम उस स्तर पर पहुचेंगे जब हमें -इधर खींच रही है और हमारी सोच हमें Technology इधर खींच रही है, तो कहीं न कहीं तनाव इतना हो जायेगा कि बड़ी गंभीर समस्याएं खड़ी हो जायेंगी। डॉ. दाभोलकर जी ने यही बात समझाने की कोशिश की थी कि आज हिंदुस्तान में वक्त की पुकार यह है, वक्त की जरूरत यह है कि हमें अंधविश्वासों को दूर करना है। अंधविश्वास क्यों होता है? देखें, ये आप इतिहास देखिए, जो चीज समझ में नहीं आई उसको अंधविश्वास बना दिया। फिर जैसे ही वह बात समझ में आ गई, वह अंधविश्वास से निकल कर विज्ञान में आ गई। तो अंधविश्वास सिर्फ उन चीजों

के लिए है जिस पर हमने या तो सोचा नहीं, या फिर समझा नहीं, या दोनों नहीं किया। तो अगर कोई कह रहा है कि आप इसको सही तरीके से सोचो, सही तरीके से उसका हल निकालो, तो कौन सी बुरी बात है ?

मैं, शब्द ब्लैक(Black) इस्तेमाल करने का ज्यादा कायल नहीं हूं। इसलिए कि इतिहास की विरासत की जो हर चीज गलत हो उसके Black कहते हैं। मगर हमारे दोस्त के शब्दकोष में Black Magic काला जादू आ गया। वह कहता था White Magic बड़ी अच्छी चीज है और Black Magic बड़ी खतरनाक चीज है। अब वह Yellow Magic क्या है ? Pink Magic क्या है ? Green Magic क्या है ? हमें पता नहीं। मगर मैजिक की क्या जरूरत क्या है ? भगवान (प्रकृति) ने इन्सान को अक्ल दी, सोचने का तरीका दिया। तो अगर बुद्धि का इस्तेमाल नहीं होगा तो उसमें जंग लग जायेगा और जब जंग लग जायेगा तो वह सोचना बंद कर देगी। और यही सब कहेगा कि साहब वो Black Magic से यह हो गया, Black Magic की वजह से यह हो रहा है।

मेरी तो यह राय है कि इस पुस्तक को देश की तमाम भषाओं में अनुवाद किया जाए और इसको किसी भी तरीके से स्कूलों और कॉलेजों में पहुंचाया जाये। इसलिए क्योंकि सोच ही बढ़ती है। जो लड़का/लड़की डॉक्टर/इंजीनियर बन जाते हैं, स्कूल के बाद उनके पास सोचने का वक्त बहुत कम रहता है। वह अपने व्यवसाय (Profession) के बारे में सोचते हैं । अच्छा डाक्टर कैसे बने ? अच्छा इंजीनियर कैसे बने ? परन्तु जो औपचारिक पड़ाव (formity stage) है, वह स्कूल में 15-18-20 सालों में हैं और अगर ये चीजें उनकी नजर में तब आ जायेगी तो इसका फायदा होगा। इसलिए कि नई पीढ़ी को यह बात समझाना बहुत जरूरी है कि -Rational thing is only salvation of the society and if you donot think rationally, then we are skating to the direction of disater.

तो आज जब हम दाभोलकर जी को याद करते हैं, ना सिर्फ याद करते हैं, बल्कि उनका शुक्रिया अदा करने हैं कि उन्होंने एक रास्ता दिखाया। और रास्ता दिखाते हुए जाते-जाते हम सब पर एक जिम्मेदारी दी है कि एक आदमी दस आदमियों का काम करे । एक संगठन बना के समाज में फैलायें । और आपने बिल्कुल सही कहा कि आज महाराष्ट्र में जो है उसे एक राष्ट्रीय कानून(National Law) बनाये। ऐसे कानून की 21वीं सदी में बनाने की जरूरत क्या है ? अगर आप बाहर की दुनिया में कहेंगे कि हमें इस कानून की जरूरत है तो लोग हंसेंगे। ये हिंदुस्तान अपने आप को कहता हैं -10000-20000 साल की सभ्यता (Civilization) है। जो चीज 2000 साल पहले दुनिया के हर देश में फैल गई थी। Civilization चीन में हो या ग्रीस में हो या मैक्सिको में। उसकी आज हिंदुस्तान में बनाने की क्या जरूरत है। और उस पे विरोध क्यों हो रहा है ? तो हमको अपने गिरेबान में नजर डाल के देखना चाहिए। हमारे राष्ट्रीय चरित्र (National character) में flows क्या है ? क्यों है ? यह चीज तो स्पष्ट है-There is flaw. एक तरफ तो हम आसमान में पहुंच गये हैं, और दूसरी तरफ हम उल्टी दिशा में जा रहे हैं।

मुझे बड़ी खुशी है कि आप लोग उसके लिए काम कर रहे हैं, मुझे पूरी उमीद है कि आप सफल रहेंगे।

-प्रस्तुतकर्ता
मिनाक्षी सुधीरनिंबालकर
हरी सिंह पार्क, पवार नगर ठाणे(प.)
M- 09004343412

अनमोल वचन

''प्रकृति मांग करती है कि मनुष्य प्रत्येक मनुष्य के लिए अच्छा सोचे, चाहे वह कोई भी हो, केवल इस लिए कि वह मानव है।''

सिसरो (106-43 ई.पू.)

विट्ठल महादेव तारकुंडे

–प्रशांत भूषण–

न्यायमूर्ति तारकुंडे के निधन के साथ भारत ने अपने नागरिक स्वतंत्रता आंदोलन के पिता को खो दिया। उनकी 94 वर्ष की परिपक्व आयु में 21 मार्च 2004 के दिन मृत्यु हुई। यद्यपि पिछले एक साल से उनके गिरते स्वास्थ्य ने उन्हें अपने घर की चारदिवारी तक सीमित कर दिया था, पर वे वास्तव में अंतिम क्षण तक अपने प्रिय उद्देश्य नागरिक स्वतंत्रताओं के लिए संघर्ष करते और लिखते रहे।

मैं पहली बार उनसे आपातकाल के दौरान 1976 में मिला, जब नागरिक स्वतंत्रताओं पर पाबंदी लगी हुई थी और सुप्रीम कोर्ट द्वारा बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर विचार किया जा रहा था और उसे यह निर्णय करना था कि क्या राज्य द्वारा बंदी बनाए गए लोगों को अपनी गिरफतारी के खिलाफ न्यायालय जाने का अधिकार आपातकाल के दौरान भी है या नहीं। यह वह समय था जब उच्चतम न्यायालय के पांच में से चार जज इंदिरा गांधी के इतने दबाव में थे कि उन्होंने माना कि आपातकाल में लोगों के मूल अधिकार और नागरिक स्वतंत्रताएं छिन जाती हैं। ऐसे कठिन समय में न्यायमूर्ति तारकुंडे ने जय प्रकाश जी की शुभकामना के साथ पीपल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टीज की स्थापना की। उस समय से अपनी मृत्यु पर्यन्त उन्होंने असाधारण साहस और समर्पण के साथ पूरी ईमानदारी से इस देश में मानवाधिकारों और नागरिक स्वाधीनताओं के लिए एक खतरों से भरा संघर्ष किया। इन अधिकारों पर हमले विभिन्न रूपों में और विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे थे। कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश में और क्रूर कानूनों जैसे टाडा, पोटा, सैन्य बलों को विशेष शक्तियां देने वाले कानूनों से हो रहे थे। उन्होंने जीवन भर लोगों के मानवाधिकार उल्लंघनों को विरोध किया। भले ही इस कारण उनके कई मित्र उनसे नाराज हुए। कश्मीर के लोगों के आत्म निर्णय और जनमत संग्रह के अधिकार के वे पहले बाहरी समर्थको में से एक थे।

इंदिरा गांधी की हत्या के बाद भड़के सिख विरोधी दंगों के दिनों में उन्होंने वकीलों के उस दल का नेतृत्व किया, जो इस नरसंहार को रोकने की कोशिश में उसके प्रमुख केंद्रों पर गया था। वे तब भी झुके नहीं, जब उनकी इस संबंध में लिखी पुस्तक पर प्रतिबंध लगाया गया और उन्हें गिरफतार करने की धमकी दी गई।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और उसके पारिवारिक संगठनों के द्वारा फैलाए जा रहे साम्प्रदायिक फासीवाद से वे बेहद दुखी थे। बाबरी मस्जिद ढाए जाने के दिनों में उन्होंने मुझसे कहा कि भाजपा और संघ फासीवादी ताकतें हैं, जो देश में नागरिक स्वतंत्रताओं को बिल्कुल नहीं सहेंगी। उन्होंने फासीवाद की मनोवैज्ञानिक जड़ों को समझने के लिए मुझे एरिक फ्राम की पुस्तक 'एस्केप फ्राम फ्रीडम' पढ़ने के लिए कहा। उन दिनों वे अपने कुछ पुराने साथी बुद्धिजीवियों से खासतौर से निराश थे, जो भाजपा सरकार में शामिल हुए। यह तथ्य उनके लिए बड़ा कष्टप्रद था कि एक समय उन्होंने खुद अरूण शोरी को पीयूसीएल का महासचिव बनाया था। संघ परिवार की कार्यप्रणाली और उसके मनोविज्ञान की गहरी समझदारी के चलते, मुझे विश्वास है कि उन्होंने गुजरात में मुसलमानों के हत्याकांड की पूर्व कल्पना कर ली थी। भाजपा और संघ परिवार की बढ़ती हुई शक्ति और राज्य प्रायोजित साम्प्रदायिकता के प्रसार को और पोटा के

दुरूपयोग को देखते हुए वे अपने अंतिम दिनों में देश में लोकतंत्र तथा मानवाधिकारों के भविष्य को लेकर गहराई से चिंतित थे।

न्यायिक जिम्मेदारी कमेटी के स्थापना सदस्य के रूप में उनहोंने न्यायिक उत्तरदायित्व के लक्ष्य के लिए अंत तक कार्य किया। उन्होंने जनहित मुकद्मों का एक केंद्र भी स्थापित किया, ताकि उचित शोध के साथ इस तरह के मुकद्में ढंग से लड़े जा सकें। क्योंकि मैं कुछ वर्षों से इस केंद्र में काम कर रहा था। पिछले दिनों मैंने केंद्र की हालिया गतिविधियों की सूचना देते हुए उसके लिए एक छोटा सा अनुदान मांगा। उन्होंने तत्काल बीस हजार का एक चैक भेजते हुए लिखा कि हालांकि वे अपनी अस्वस्थता के कारण केंद्र की बैठकों में नहीं आ पा रहे हैं, पर वे इसके कार्य से प्रसन्न हैं उनका पत्र पाते ही मैंने उनसे जल्दी ही मिल आने का निश्चय किया, पर दुर्भाग्यवश अन्य व्यस्तताओं के कारण वह टलता गया। मैं नहीं जानता था कि वे ज्यादा बीमार और अस्पताल में हैं। मैं अपनी इस देरी के लिए कभी माफ नहीं नहीं कर पाऊंगा। मुझे विश्वास है कि किसी दिन इस देश के सभी लोग मानेंगे कि इस एक व्यक्ति का उन पर कितना ऋण है।

विट्ठल महादेव तारकुंडे का जन्म ग्राम सस्वाद, जिला पुणे, महाराष्ट्र में 3 जुलाई 1909 के दिन महादेव राजाराम तारकुंडे नामक एक लोकप्रिय वकील और समाज सुधारक की दूसरी सन्तान के रूप में हुआ। उनके ब्राह्मण पिता ने अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष किया था। उन्होंने 1925 में पुणे से मैट्रिक की परीक्षा तत्कालीन मुंबई यूनिवर्सिटी से मुंबई प्रेजिडेंसी में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए पास की। 1929 में फर्गुसन कालेज से बीए करने के बाद उन्हें कानून पढ़ने के लिए लंदन भेज दिया गया, जहां 1931 में बेरिस्टर-एट-लॉ की उपाधि मिली। लंदन स्कूल आफ इकोनोमिक्स में भी उन्होंने अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और सामाजिक नेतृत्व विज्ञान के लैक्चर सुने। 1933 में वे भारत लौट आए और पुणे में वकालत करने लगे, जिसे उन्होंने एमएन राय की रेडिकल हयूमेमिनस्ट पार्टी की पूर्णकालिक सदस्य के लिए 1941 में छोड़ दिया। स्वतंत्रता के बाद 1948 में मुंबई उच्च न्यायालय में फिर से वकालत करने लगे। सितम्बर 1957 में वे इसी न्यायालय के न्यायाधीश चुन लिए गए। 1969 में उन्होंने मुंबई हाईकोर्ट छोड़ दिया और 1977 तक सर्वोच्च न्यायालय में वकालत करते रहे।

1933 में उन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की सदस्यता ली थी, पर 1939 की त्रिपुरा कांग्रेस में इसके सदस्यों द्वारा कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के खिलाफ मत देने की घटना से नाराज होकर उन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी छोड़ दी और एमएन राय की पार्टी लीग आफ रेडिकल कांग्रेस मेन में आ गए। 1940 में द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लेने सवाल पर राय और तारकुंडे ने अपने अनेक साथियों के साथ संगठन से अलग होकर रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी बनाई। 1944 में वे इस पार्टी के महासचिव चुने गए और दिल्ली आ गए। पर 1948 में राय और तारकुंडे को लगा कि राजनीतिक पार्टियां जनता की स्वाधीनता के लक्ष्य में बाधक हैं और इसलिए उन्होंने इस पार्टी को विघटित कर दिया और तारकुंडे फिर से वकालत करने लगे। 1969 में उन्होंने इंडियन रेडिकल हयूमेनिस्ट एसोसिएशन बनाया और अप्रैल 70 में रेडिकल हयूमेनिस्ट पत्रिका शुरु की। ज्यादातर अपने ही आर्थिक स्रोतों से।

आपातकाल के दौरान उन्होंने जय प्रकाश नारायण के साथ काम किया और सिटीजन्स फार डेमोक्रेसी तथा पीपल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टी का नेतृत्व किया। कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश के लोगों के आत्म निर्णय के आंदोलनों के समर्थन और वहां भारतीय सेना के अत्याचारों का विरोध करने के कारण उनके विरोधियों ने उन्हें टेरेरिस्ट्स डिफेंडर इन चीफ का नाम दिया। 1978 में इंटरनेशनल हयूमेनिस्ट एंड एथिकल यूनियन ने अपने लंदन सम्मेलन में उन्हें अंतर्राष्ट्रीय मानववादी पुरस्कार . सम्मानित किया।

.....शेष पृष्ठ 21 पर...

मृत्योपरांत भी कायम रहती है चेतना!

-डा. हरचन्द सिंह सरहिन्दी

मृत्यु के पश्चात् जीवन जैसी कोई चीज है अथवा नहीं, इस बारे में दृढ़ता के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता, परन्तु वैज्ञानिकों को इस बात के प्रमाण मिले हैं कि मृत्यु के पश्चात् कुछ समय के लिए चेतना कायम रहती है। यू.के. की साऊथ एम्पटन यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के द्वारा ब्रिटेन, अमेरिका एवं आस्ट्रिया के 15 अस्पतालों में चार वर्ष तक हृदय के दो हजार रोगियों पर की गई खोज से यह तथ्य सामने आया है कि चिकित्सीय रूप में मृतक (Clinically Dead) घोषित किए गए ऐसे 40 प्रतिशत लोगों ने हृदय की धड़कन पुनः आरम्भ होने के पश्चात् बताया कि होश में आने से पूर्व उन्होंने विशेष प्रकार की चेतना महसूस की थी। मृत्यु से दामन छुड़ा कर आए इन लोगों में से कुछेक ने यह बताया कि उन्हें अस्पताल में हो रही समस्त गतिविधियों के बारे में पता लग रहा था, जबकि डाक्टर उन्हे मृतक घोषित कर चुके थे। इसी प्रकार साऊथ एम्पटन के एक सामाजिक कार्यकर्त्ता ने तीन मिनट तक मृतक एवं अचेत रहने के दौरान डाक्टरी अमले की गतिविधियों एवं मशीनों की आवाजों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। इन व्यक्तियों में से अधिकतर व्यक्तियों को दिल का दौरा पड़ने के उपरान्त मृतक घोषित किया गया था और थोड़ी देर के पश्चात दोबारा इनके दिल ने धड़कना शुरू कर दिया। यहां पर 60 प्रतिशत व्यक्तियों ने कहा कि उन्हें कुछ भी याद नहीं।

इससे पूर्व भी कई अन्य वैज्ञानिकों ने इस विषय पर खोज का कार्य किया है। अमेरिका इस क्षेत्र में अग्रगामी रोल अदा कर रहा है। वहां की एक खोज संस्था-'इन्टरनेशनल एसोसिएशन आफ नीयर-डैथ स्टडीज' के अध्यक्ष ड्यान कारेकोरान का कथन है कि अमेरिका में अनगिनत व्यक्तियों ने इस बात का प्रकटावा किया है कि उन्हें मृत्यु के समय के अनुभवों का अत्यंत नजदीकी तजुर्बा हासिल हुआ है। आम जीवन में भी लोगों से इसी प्रकार के तजुर्बे सुनने को मिलते हैं। तरलोक मन्सूर (एक पंजाबी लेखक), जो अपने जीवन में दो बार मृत्यु की आगोश में से निकल कर आया है, अपने नीयर डैथ तजुर्बे को कुछ इस प्रकार ब्यान करता है, 'बस, मैं गया- का सहम से परिपूर्ण झटका, फिर चारों ओर दूधिया प्रकाश। स्वै का अहसास एवं परम आनन्द की अवस्था'

इस सम्बन्ध में दो विश्व प्रसिद्ध मनोचिकित्सकों डा. रेमण्ड मूडी आफ वर्जीनिया एवं डा. ऐलिजाबेथ कूबलर-रौस द्वारा किया गया अनुसंधान का कार्य विशेष महत्व रखता है। लगभग 40 वर्ष पूर्व इन खोजियों ने दशकों से अधिक समय तक इस विषय पर ध्यानपूर्वक मन लगाकर कार्य किया था। उन्होंने मृत्यु के पंजे से बचकर आए हजारों व्यक्तियों के साथ सम्पर्क कायम किया। इस आधार पर उन्होंने मृत्यु के उपरांत चेतना कायम रहने से संबंधित विस्तारपूर्वक बातचीत की है। उनका कहना है कि दिल की धड़कन बंद हो जाने के पश्चात लगभग चार मिनट तक का समय, जीवन और मृत्यु के दरम्यान अन्तिम

कड़ी का कार्य करता है, क्योंकि दिमाग को कम से कम चार मिनट तक आक्सीजन एवं ग्लूकोज से महरूम रखने पर ही इसकी मृत्यु होती है। इन तीन-चार मिनटों के दौरान संबंधित व्यक्ति को खास तौर पर अन्तर्मुखी अनुभव होते हैं, जिनको वैज्ञानिकों ने 'बिल्कुल मृत्यु के समय के अनुभवों' का नाम दिया है। ये अनुभव पांच प्रकार के होते हैं तथा एक विशेष क्रम में घटित होते हैं। डा. रेमण्ड मूडी एवं डा. कूबलर-रौस ने इन मृत्यु के समय के अनुभवों को पांच चरणों में बांटा है। अर्थात् इस नश्वर संसार से विदा होते समय प्रत्येक व्यक्ति निम्नलिखित पांच चरणों से गुज़रता है-

प्रथम चरण :- मरने वाला व्यक्ति शांत हो जाता है और ठीक महसूस करता है। डर की भावना एवं दुख का अहसास अचानक खत्म हो जाता है। स्नेह एवं प्रेम का अनुभव इस चरण की विशेषता है। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले एक अन्य वैज्ञानिक डा. मिचेल साबूम का कथन है कि उसकी खोज दौरान किसी एक व्यक्ति ने भी किसी प्रकार का विपरीत मानसिक प्रभाव होने के तजुर्बे का जिक्र नहीं किया।

द्वितीय चरण :- श्रवण शक्ति तीव्र हो जाती है। शरीर से बाहर आने एवं अपने खुद के शरीर को देख रहा होने का अनुभव होता है। इस तथ्य का वर्णन करने का ढंग प्रायः कुछ निम्न अनुसार होता है, 'मैंने अपने आप को आप्रेशन टेबल पर पड़ा हुआ देखा, जबकि डाक्टर एवं नर्सें मेरे शरीर पर कार्य कर रहे थे। मुझे इस प्रकार ज्ञात हुआ कि जैसे कि मैं ऊपर छत से नीचे देख रहा हूं।'

तृतीय चरण :- अत्यन्त विशाल काले आकाश में प्रवेश करने तथा तीव्र गति के साथ चलने का अहसास होता है। कईयों को जोरदार आंधी में घिरे होने तथा लगातार तेजी के साथ चलते रहने का अनुभव होता है। कई कहते हैं कि उन्हें ऐसे महसूस हुआ कि जैसे कि वह किसी सुरंग में दाखिल हो गए हों, जबकि कुछ अन्यों ने इसको एक वीरान अथवा उजाड़ स्थान बताया।

चौथा चरण :- इस अवस्था में अत्यन्त चमकदार सुनहरी अथवा सफेद रोशनी, जो आंखों को ठेस नहीं पहुंचाती, देखने का अनुभव होता है। प्रत्येक वस्तु चांदनी के साथ नहलाई हुआ दिखाई देती है। कुछ व्यक्तियों को स्नेह एवं प्रेम तथा ऊंचा उठने का अहसास होता है। कईयों को बुरे दिन खत्म होने एवं नया जीवन शुरू होने का अनुभव होता है।

पांचवां तथा अन्तिम चरण :- संबन्धित व्यक्ति को उस स्थान पर प्रवेश होने का अहसास होता है, जहां पर रोशनी आती हुई दिखाई देती है। यहां पर ही उसे अपने प्रिय मृतक सगे-संबन्धियों के साथ स्नेहपूर्ण मिलन का अहसास होता है, जैसे कि वे उसका स्वागत कर रहे हों। कई व्यक्ति सुंदर प्राकृतिक दृश्य देखने अथवा उत्कृष्ट संगीत सुनने की बात करते हैं। यह एक तनावमुक्त मनो अवस्था होती है, जो साधारण जीवन में लोगों को कभी प्राप्त नहीं होती। इसलिए इसका अनुभव मनुष्य के लिए अत्यन्त आनन्द से परिपूर्ण हुआ करता है। इसीलिए इस मंजिल तक पहुंचा हुआ व्यक्ति, पुनः जीवित होने पर अपने प्रारम्भिक प्रतिक्रम के तौर पर निराशापूर्वक स्वर में बात करता है, क्योंकि उसे उस प्रसन्नतापूर्ण माहौल से अलग होने का पछतावा होता है, परन्तु कुछ समय के पश्चात उसके विचारों में स्थिरता आ जाती है तथा वह सामान्य अवस्था में आ जाता है।

वैज्ञानिकों ने इन अनुभवों की अलग-अलग तरह से व्याख्या की है परन्तु इस क्षेत्र के अधिकतर माहिरों की राय है कि यह सभी कुछ दिमाग को रक्त की सप्लाई बन्द हो जाने के कारण अर्थात् दिमाग को आक्सीजन से विरक्त रखने पर कल्पना

में चित्र देखने की स्थिति से अधिक और कुछ भी नहीं है। इस प्रकार के अनुभवों की मनोस्थितियों को विज्ञान की भाषा में 'इल्यूजन', 'होल्यूसीनेशन' एवं 'डिल्यूजन' का नाम दिया जाता है। ये विचित्र मनोस्थितियां शरीर के अन्दर बायोलॉजीकल सन्तुलन में गड़बड़ हो जाने के कारण घटित होती हैं। इसलिए इन अन्तर्मुखी अनुभवों का तथ्यपूर्ण होना आवश्यक नहीं है (जबकि बाह्यमुखी अनुभव सत्य पर आधारित होते हैं)

न्यूयार्क की स्टेट यूनिवर्सिटी से संबंधित डा. सैम पर्निया ने विगत चार वर्षो के दौरान अलग-अलग अस्पतालों में दाखिल 2060 मरीजों के साथ सम्पर्क स्थापित किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मैडीकल तौर पर घोषित किए गए व्यक्ति की चेतना, मृत्यु के फौरन बाद ही खत्म हो जाती है। डा. पर्निया का कहना है कि दिल की धड़कन बन्द हो जाने के तीन मिनट बाद भी संबंधित व्यक्ति की चेतना कायम रहती है, जबकि आमतौर पर दिल की धड़कन बंद होने के 20 से 30 सैकिण्ड बाद ही दिमाग भी कार्य करना बन्द कर देता है।★★

पृष्ठ 18 का शेष(बिट्ठ महादेव..)

उनकी प्रकाशित पुस्तकें :

1. रेडिकल ह्यूमेनिज्म : द फिलास्फी आफ फ्रीडम एंड डेमोक्रेसी।
2. रिपोर्ट टू नेशन : आप्रेशन इन पंजाब
3. कम्युनलिज्म एंड ह्यूमनराईट्स
4. थ्रू ह्यूमन आईज
5. फॉर फ्रीडम
6. कश्मीर प्राब्लम : पॉसिबल सॉल्यूशन्स
7. ग्रेट ब्रिटेन एंड इंडिया
8. द डेंजर अहेड : अन अनेलीसिस आफ कांगेस कपिटलिज्म अलाइमेंट

(भारत के प्रख्यात नास्तिक' पुस्तक से साभार)

★★

Whatsapp पर शरारतियों से बचने के उपाय

Whatsappका फायदा तो है, पर काबू के बाहर हो जाए तो सिरदर्द से कम नहीं । यहां आपका पीछा करने वाले भी हैं और जबरदस्ती 'चेप' होने वाले भी। कुछ तो जासूसी भी करने लगे हैं। खास तौर से, लड़कियों के लिए यह स्थिति ज्यादा बड़ी परेशानी बन जाती है। हम आपको बता रहे हैं:

ब्लॉक करें सिरदर्द बने लोगों को हो सकता है किसी को ब्लॉक करने का नैतिक साहस न जुटा पा रहे हों। अगर कोई सीरियसली सिरदर्द बन गया है तो उस 'कट लो' की पर्ची देने में देर न लगाएं। बेफिक्र होकर तुरंत ब्लॉक मार दें।

फोटो पर लगाएं पर्दा: क्या हर कोई आपकी प्रोफाइल फोटो देख सकता है। अगर वह देख सकता है तो स्क्रीन शॉट भी ले सकता है। तुरंत प्राइवेसी सैटिंग बदलिए। मेन विंडो में '3 डॉट' पर क्लिक करे। और 'सैटिंग्स' पर क्लिक करें। अगली विंडो में अकाऊंट सैलेक्ट करें, फिर 'प्राइवेसी' पर जाएं। एक सैक्शन दिखाई देगा, फिर who can see my profile इसमें Profile Photo पर क्लिक करें और सैटिंग को Nobody पर सेट करें।

नीले टिक का मारो गोली : मैसेज पर लिया गया, यह सूचित करने वाला ब्लू टिक काम का है। पर जब आप किसी को इग्नोर करना चाहते हैं तो यह 'ब्लू टिक' अड़चन पैदा करता है। चिंता न करें। इसे बंद किया जा सकता हैं प्राइवेसी के भीतर message पर जायें और Red receipt सैलेक्शन को अनचेक कर दें। अपनी प्राइवेसी बेहतर करने के लिये लास्ट सीन को बंद कर दें। 'प्राइवेसी' में जाएं फिर who can see my personal info में और फिर लास्ट सीन मे। फिर इसे ऑफ कर दें।

और अंत में : किसी अजनबी से बात कर रहे हों तो उसका नंबर contact में सेव करने में जल्दबाजी न दिखाएं।★★

गोलियों की दहशत में सहक रहा तर्क

अवतार सिंह
07838 59404

विज्ञान एक ऐसा विषय है जिस में किये गए तजुर्बे विश्व के किसी भी भाग में पुनः आजमाने पर परिणाम एक जैसे ही निकलते हैं क्योंकि ये तर्क पर आधारित होते हैं न कि किसी विश्वास अथवा मिथ्या कथाओं पर। यह विज्ञान ही है जिसने विश्व को चिकित्सा, वायुयान एवं इंटरनेट से लेकर मोबाईल फोन तक की असंख्य सुवधाएं प्रदान की हैं । अब प्रश्न यह पैदा होता है कि 'क्या विज्ञान धर्म की विरोधी है अथवा धर्म को विज्ञान से कोई खतरा है? जिस के काररण धार्मिक जुनून में रंगे हुए लोग वैज्ञानिक चिन्तन वाले व्यक्तियों को समाप्त कर देने तक उतर आते हैं।

बांग्लादेश की राजधानी ढाका में 27 फरवरी को बांग्लादेश निवासी अमेरिकी मूल के एक 42 वर्षीय ब्लॉगर अभिजीत राय को सरेआम तेजधार हथियार के साथ हमाला कर के धार्मिक कट्टर वादियों द्वारा कत्ल कर दिया गया। अभिजीत पर हुए इस खूनी हमले में उनकी पत्नी राफिदा अहम भी बुरी तरह से घायल हो गई। अभिजीत राय को इस लिए कत्ल कर दिया गया क्योंकि वह बंग्ला भाषा में 'मुक्तो-मोना' अर्थात् 'स्वतन्त्र मन' नाम का ब्लॉग चलाता था, जिस पर वह विज्ञान-सम्मत लेख लि खता तथा धर्म एवं राजनीति समेत संस्कृति से संबन्धित आलोचलनात्मक टिप्पणियां करता था। अब जब ध ार्मिक जुनूनियों के तर्क अभिजीत राय के तर्को को काटने से असमर्थ हो गए तो उन्होंने शस्त्रों के द्वारा उस की कलम को सदा-सदा के लिए बन्द कर दिया।

यह हाल केवल बांग्ला देश का ही नहीं हैं नास्तिक एवं वैज्ञानिक चिन्तन को प्रणाए हुए लोग भारत में भी सुरक्षित नहीं है। वैज्ञानिक अथवा` तर्कशील चिंतन से तात्पर्य है कि प्रत्येक घटना को तर्क की कसौटी पर परखना। तर्क की बात करने वाले व्यक्तियों को भारत में भी सरे आम गोलियां मारी जा रहीं हैं। पूणे निवासी डा. नरेन्द्र दाभेलकर को 20 अगस्त, 2013 को प्रातःकाल को सैर करते समय कुछ अज्ञात व्यक्तियों के द्वारा गोलियां मार कर कत्ल कर दिया गया था। दाभोलकर महाराष्ट्र में 'अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति' नामक एक संगठन चला रहे थे तथा प्रान्त में 'अन्धविश्वास एवं काला जादू के खिलाफ कानून' बनाने की मांग कर रहे थे। दाभोलकर की हत्या करने के पश्चात् यद्यपि प्रांतीय सरकार ने इस हत्या की निंदा की तथा इस कानून को विधान सभा में पारित भी कर दिया परन्तु प्रश्न यह है कि इस कानून को पारित करने के लिए क्या दाभोलकर का बलिदान आवश्यक था तथा अब इस कानून को लागू करने की गारंटी कौन देगा।

जब पैरिस में 7 जनवरी, 2015 को 'शार्ली-एब्दो' नामक साप्ताहिक अखबार के मुख्य संपादक एवं चार कार्टूनिस्टों समेत कुल 12 लोगों को सरेआम गोलियां मार कर कत्ल कर दिया गया तो इस हमले ने पूरे विश्व में एक नई बहस छेड़ दी कि विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा क्या होनी चाहिए? इस हमले ने धर्म एवं कला के क्षेत्र को आमने-सामने लाकर खड़ा कर दिया है। 'शार्ली-एब्दो' द्वारा बनाए गए कार्टून बेशक वे अभिव्यक्ति की स्तंत्रता के नाम पर प्रकाशित कर रहे थे परन्तु ये कार्टून बहुत हद तक मुस्लिम अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों को निशाना बना रहे थे। इस घटना में हुए मानवी कत्लेआम को नकारा नहीं जा सकता परन्तु जब किसी क्षेत्र में अल्पसंख्यकवर्ग को व्यंग्य का पात्र बनाया जाता है तो उसका प्रतिक्रम उतना ही भयानक एवं विद्रोही बनकर सामने आता हैं। दूसरे, इस का अर्थ यह भी नहीं कि धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचने के नाम पर किसी भी रोशन दिमाग अथवा रचनात्मक चिन्तन वाले लोगों के समूह को गोलियां मार कर कत्ल कर दिया जाए। भारत में भी एक लेखक की कलम का कत्ल केवल इस लिए हो गया कि उस की कलम से निकले शब्दों का कट्टरपंथियों के पास कोई जवाब

नहीं था। तमिल लेखक पेरूमल मुरूगन को उनके लेखों के कारण लगातार धार्मिक कट्टरपंथियों द्वारा धमकियां दी जा रहीं थी। तथा मानसिक तौर परेशान किया जा रहा था। देश में अपने विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न होने के रोष स्वरूप 'लेखक पेरूमल मुरुगन' की मृत्यु का ऐलान उन्होंने अपने फेसबुक एकाऊंट पर ही कर दिया, अर्थात उन्होंने आगे से कोई भी रचना न लिखने का फैसला कर लिया तथा पाठकों समेत प्रकाशकों से क्षमा याचना करते हुए उनका खर्च वापिस लौटाने का आश्वासन दिया। मुरुगन को अपने उपन्यास 'वन पार्ट वूमेन' के कारण हिन्दू कट्टरपंथियों के सख्त विरोध का सामना करना पड़ रहा था जिसके कारण उन्होंने इस उपन्यास समेत अपनी सभी कहानियां, उपन्यास एवं कविताओं से हाथ पीछे खींचने का ऐलान कर दिया जबकि अपनी सम्पूर्ण रचानावली में उनका जाति एवं धर्म को लेकर प्रशंसनीय कार्य माना जाता है।

दूसरी ओर महाराष्ट्र में नरेन्द्र दाभोलकर के कत्ल के 18 महीने के पाश्चात् सी.पी.आई. के वयोवृद्ध नेता गोबिन्द पानसरे को प्रातःकाल की सैर करते समय कुछ अज्ञात मोटर साईकिल सवार व्यक्तियों द्वारा गोलियां मारकर कत्ल कर दिया गया है। यह कत्ल भी बिल्कुल नरेन्द्र दाभोलकर वाले अन्दाज में किया गया। उधर एक बार फिर सरकारों द्वारा हत्यारों को शीघ्र पकड़ने एवं कठोर दण्ड देने के ब्यान दिये जाते हैं। गोबिन्द पानसरे ने अपना समस्त जीवन जनहित के कार्यों में लगाया तथा कई तर्कवादी पुस्तकें लिखीं जिनका विषयपवस्तु जाति-पांति, धर्म एंवं राजनीति था।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि विज्ञान की बात करने वाले एवं तर्कशील सोच को लेकर चलने वाले लोग धार्मिक कट्टरपंथियों के निशाने पर क्यों हैं? गोलियों द्वारा सरेआम दिन-दिहाड़े कत्ल करने के मायने क्या हैं? सवाल केवल धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं है, बल्कि धार्मिक कट्टरता एवं तर्क के युद्ध का हैं। धार्मिक इन्सान एवं कट्टरपंथी व्यक्ति में आकाश-पाताल का अन्तर होता है। धर्म का अर्थ मानवता में विश्वास होता है न कि धर्म के नाम पर कत्लेआम अथवा दंगे करना। धर्म की सियासत में से सत्ता कितना फायदा उठाती है यह मानवता के इतिहास ने झेला है।

किसी समय रोम में ब्रूनो नाम के विज्ञानी को इस लिए जीवित जला दिया गया था कि उसने टोल्मी के सिद्धांत का विरोध करते हुए यह कहा था कि सूर्य पृथ्वी के गिर्द नहीं अपितु पृथ्वी सूर्य के गिर्दचक्कर लगाती है। परन्तु कुछ समय के पश्चात् कॉपरनिक्स ने टोल्मी के सिद्धांत को गलत प्रमाणित किया तथा कहा कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी सूर्य के गिर्द परिक्रमा करती है।

आधुनिक विज्ञान के जन्मदाता माने वाले गैलीलियो ने अपनी सबसे बड़ी खोज दूरबीन का आविष्कार करके पृथ्वी की सूर्य के गिर्द परिक्रमा को स्पष्ट रूप में सिद्ध कर दिया परन्तु यातनाएं गैललियो को भी झेलनी पड़ी थीं । जब चार्ल्स डार्विन 'मानव की उत्पत्ति का सिद्धांत' लेकर आया तो चर्च द्वारा इसका सख्त विरोध किया गया। डार्विन को यहां तक कह दिया गया कि उसके पूर्वज ही बन्दर होंगे, हमारे नहीं हैं। परन्तु समय ने इन वैज्ञानिकों को सही साबित किया जिसके कारण कट्टरपंथियों को अपने ब्यान बदलने पड़े।

वर्तमान समय में विज्ञान अथवा तर्क की बात करने वालों के साथ तर्क द्वारा संवाद रचाने की परम्परा बिल्कुल ही खत्म कर दी गई है, बस गोली द्वारा ही चुप करवाया जा रहा है। फिर चाहे वह अविजीत राय हो अथवा दाभोलकर से लेकर वाया पेरूमल मुरुगन होते हुए गोबिन्द पानसरे हों। प्रायः सत्ता द्वारा परिस्थितियों के अनुसार धार्मिक सांप्रदायिकता का इस्तेमाल किया जाता है। कई स्थानों पर अभिव्यक्ति के नाम पर अल्पसंख्यकों को भी दबाया जाता हैं । यदि धर्म एवं विज्ञान दोनों का उद्देश्य मानवता की भलाई करना है तो आवश्यकता धर्म एवं विचारों की अभिव्यक्ति के अधिकार में तर्क एवं दलील के साथ संवाद आगे बढ़ाने की है न कि हथियारों का नाच नचाने की ।

साभार- पंजाबी ट्रिब्यून

हिन्दी अनुवाद : बलवन्त सिंह प्राध्यापक

★★

धर्म और विज्ञान की परस्परता

सुरजीत सिंह ढिल्लों
0175-2214547

जीवन में भावनाओं एवं ज्ञान का एकसार महत्व है। भावनाएं जीवन को लुभावना बनाती हैं तथा ज्ञान बिताए जा रहे जीवन का नेतृत्व करता है, परन्तु, केवल भावनाओं की गुलामी करते हुए जीवन कठिनाई युक्त एवं निरोल बोध का कहा मानते हुए बिताया जा रहा जीवन नीरस व्यतीत होता है। यह दोनों प्रवृत्तियां हमें मिलती तो विरासत में हैं, परन्तु इनको शौक एवं ज्ञान के द्वारा चमका कर रखना हमारे अपने हाथ में है।

धर्म एवं विज्ञान हमारी संस्कृति के दो स्तम्भ हैं। दोनों की मंजिल मनुष्य को उसके अस्तित्व की हकीकत का बोध करवाना है, परन्तु ऐसा करने के लिए दोनों ने अलग-अलग रास्ते अपनाए हुए हैं। धर्म ने कल्पना का सहारा ले रखा है और विज्ञान ने विवेकी चेतनता का। कल्पना का भावनाओं के साथ बढ़िया सहचारी मेल-मिलाप बैठ रहा है तथा इसका क्षेत्र भी अत्यंत विशाल है। दूसरी ओर बुद्धिमानी का दायरा सीमित है तथा हकीकत की परख-पड़ताल करते हुए यह भावनाओं से दूर रहने का प्रयत्न करती है। धर्म विवेक की अपेक्षा मस्ती को प्राथमिकता देता है और होश गंवा कर स्वर्ग का आनंद प्राप्त करने का भी समर्थन करता है। विज्ञान होश गंवा कर कुछ भी करने को उचित नहीं समझता। धर्म हौसला देता है :

मस्ती का अफसाना बनकर,
हस्ती से बेगाना बन जा।

तथा यह भी कि :

होशों (विवेकशीलता) से मस्ती भली,
रखती सदा ठिकाने।

विज्ञान का दावा है :

सेज सपनों की जरूरी नहीं जिंदगी के लिए,
कट जाती है जागते हुए भी सलीके से।

टी.एस. ईलियट का भी विज्ञान से अलग अनुभव है: *'कोरी हकीकत सह सकने के योग्य मनुष्य नहीं है।'*

जबकि बरट्रण्ड रस्सल का कहना है :

'वह तुच्छ व्यक्ति है जिसको जीवन व्यतीत करने के लिए निराधार सहारों की आवश्यकता पड़ती है'

तथा रस्सल का समकालीन, जॉर्ज संत्याना निराधार सहारों की कृपा पात्र मनुष्य की भावनाओं को तिरस्कार का नहीं, हमदर्दी का पात्र मानता है।

मस्ती एवं विवेक का विवाद अपने स्थान पर, परन्तु जब भी हकीकत की आंधी आती है तो लिए जा रहे सपने हवा हो जाते हैं। बिल्ली कबूतर के सिर पर चढ़ कर बोलने वाली हकीकत है; आंखें बन्द करके इसे नकार सकना कबूतर के लिए संभव नहीं है। यदि हकीकत को सह न सकना सत्य है, तो हकीकत का न टलना भी सत्य है। हकीकत के साथ प्रत्येक का आमना-सामना होता ही है, परन्तु हकीकत से डरने की नहीं, इसे समझने की जरूरत है और विज्ञान यह ही कर रहा है।

विज्ञान मानवीय ज्ञान का आविष्कार है। इसीलिए हकीकत को खोजते हुए इससे त्रुटियां हो जाती हैं तथा इसके सामने कठिनाईयां आती रहती हैं। हकीकत का भी अपने-आप में पेचीदा स्वरूप है, जिसको प्रयोग एवं प्रमाण फुटकल रूप में उजागर करने के योग्य हैं। इसलिए हकीकत के आंशिक अधूरेपन के साथ ही विज्ञान को संतुष्टि महसूस करने की आदत है। साधारण व्यक्ति को न तो संदेह पसंद है और न ही अधूरे सत्य। विज्ञान द्वारा कही गई प्रत्येक बात को यह पूर्ण सत्य समझ बैठता है तथा इसी को अंधविश्वास की भांति स्वीकार कर लेता है।

निर्जीव स्थितियों को विज्ञान के लिए सुलझाना आसान है, जिनके बारे में निश्चित अनुमान लगाने संभव होते हैं, परन्तु जीवन के मामले में स्थिति अन्य प्रकार की है। जीवन अत्यन्त प्रलोभन वाली व्यवस्था है। यह प्रक्रियाओं का पेंचदार सिलसिला है, जिसको भांप सकना असंभव तो नहीं, परन्तु सरल भी नहीं है। इसी कारण जीवन को चलायमान रख रही परिस्थितियों के बारे में विज्ञान की जानकारी अधूरी है और पूर्ण विश्वसनीय है। इसीलिए आरोगता, काश्त एवं वातावरण के प्रसंग में व्यापक व्यवस्था में निश्चित की अपेक्षा अनिश्चित अधिक है। इनके संदर्भ में एक समस्या के सुलझते ही अचानक ही अनेक अन्य समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। कीटाणुओं एवं कीटाणु रोधी दवाओं, कीटनाश्कों एवं मिलीजुली फसलों की काश्त तथा वातावरण एवं प्रदूषण के सिलसिले में यह ही हुआ है।

साधारण व्यक्ति की बात छोड़ो बल्कि अधिकतर पेशावर माहिरों का भी स्वभाव है कि किसी नई उपज का मामूली सा लाभ प्राप्त होते ही वे इसका खुलकर अयोग्य प्रयोग करने लग जाते हैं। इनके इस कार्य में व्यापार भी मुनाफा कमाने के लिए पूरे जोश के साथ शामिल हो जाता है। परिणामस्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में हमें समस्याओं ने घेर लिया है। हमारी आबादी बेरोकटोक बढ़ती चली जा रही है; प्राकृतिक स्रोत कम होते जा रहे हैं; खानपान की कोई वस्तु शुद्ध नहीं रही; रोग बढ़ते जा रहे हैं तथा आरोग्यता दम तोड़ रही है जिसे दवाईयां भी बहाल करने की बजाए पतन की ओर लेकर जा रही हैं। भौगोलिक स्तर पर भी परिस्थितियां अनुकूल नहीं रह गई हैं। ऋतुओं-मौसमों में आ रहे परिवर्तन का बुरा प्रभाव काश्त पर पड़ना जरूरी है। एक तरफ हमारी बढ़ती जा रही आबादी तथा दूसरी तरफ फसलीय पैदावार का पतन है। यही नहीं, बढ़ते जा रहे भौगोलिक तापमान के कारण कीटों एवं कीटाणुओं के जातिवर्ग एवं संख्या भी बढ़ेगी। वर्तमान समय में मिश्रित फसलें इनकी मार सह सकने के योग्य नहीं है तथा न ही दवा-दारू पर निर्भर हमारी आरोग्यता।

धर्म एवं विज्ञान यद्यपि अलग-अलग ढंग से सोचते एवं समझते रहे हैं, परन्तु ऐसा कुछ है, जहां पर दोनों में परस्परता है। धर्म कहता रहा है कि यह संसार माया है, भ्रम है। इसमें दिखाई कुछ और देता है तथा होता कुछ और है। विज्ञान ने यही सिद्ध करके दिखाया है। विज्ञान के अनुसार ऊपर एवं नीचे के कोई अर्थ नहीं तथा न ही इसमें कुछ गतिहीन है। जो गतिहीन लगता है, वास्तव में वह हरकत कर रहा है तथा गतिशील सभी कुछ को सुनिश्चित स्थान पर गुरुत्वाकर्षण रख रहा है। गुरुत्वाकर्षण कोई शक्ति नहीं, बल्कि अंतरिक्षीय व्यवस्था है। विश्व में प्रत्येक वस्तु लगभग 100 प्रकार के परमाणुओं का संग्रह है। इन परमाणुओं को देख सकना संभव नहीं, जोकि ऊर्जा की गांठें हैं। पानी दो तत्वों हाईड्रोजन एवं आक्सीजन से बना है, जिनमें से एक स्वयं ज्वलनशील है तथा दूसरा आग के जलाने में सहायक है, परन्तु जब ये दोनों मिल जाते हैं, तो ये जलती हुई आग को बुझाने का कार्य करते हैं। कुछ ऐसा ही हाल नमक का है जिसे हम प्रतिदिन चखते हैं। इसकी रचना करने वाले दो तत्व सोडियम एवं क्लोरीन अलग-अलग होने की सूरत में हमारे लिए विषैले हैं। जो है, वह वह नहीं, जिस प्रकार दिखाई देता है।

हम स्वयं भी हाड-मांस के पुतले हैं, परन्तु वास्तव में सूक्ष्म आकार की अरबों-खरबों कोशिकाओं का जमघट है। इनमें से प्रत्येक में हमारी तकदीर बन रहे जीन समाए हुए हैं, डी.एन.ए. के बने हुए जीन। यह डी.एन.ए. स्वयं निर्जीव है, परन्तु दुनिया भर में जीवों के रूप में व्यापक जीवन का मूल स्त्रोत है। मच्छर, मक्खी, मछली, सांप, छिपकलियां, पक्षी एवं पशु इत्यादि सभी के जीवन का स्त्रोत डी.एन.ए. है। ये समस्त प्राणी देखने में एक-दूसरे से भिन्न प्रतीत होते हैं, परन्तु सभी के जीवन का आधार एकसार बनावट वाला डी.एन.ए है। प्राणी-जगत में ही नहीं, अपितु पेड़-पौधों में भी डी.एन.ए. हैं जोकि प्राणियों की अपेक्षा अलग ढंग से बिताए जा रहे उनके जीवन का आधार है। यदि एक वट का वृक्ष है तो अपने डी.एन.ए. के कारण है तथा एक मानव, मानव है तो भी अपने डी.एन.ए. के कारण ही है। मानवों

में एक-दूसरे से अन्तर भी अपने-अपने डी.एन.ए. के अन्तर के कारण ही है।

एक व्यक्ति मां के गर्भ में पड़े हुए अदृश्य अति सूक्ष्म आकार के अण्डे के बार-बार बंट जाने से धड़कते दिल एवं चिंतनशील मस्तिष्क वाला हाड-मांस का पुतला बनकर जन्म लेता है। इस चमत्कार के लिए भी डी.एन.ए. ही जिम्मेदार है। यही डी.एन.ए. व्यक्ति के जीवन के दौरान उसे बोलना, समझना, स्नेह करना एवं सन्तान उत्पन्न करना सिखलाता है तथा फिर इसके अन्त का भी यह ही खुलासा करता है।

हम में से प्रत्येक के डी.एन.ए. में मामूली सा अन्तर होने के कारण हमारे ज्ञान, समझ एवं भावनात्मक व्यवहार में भी अन्तर हैं। एक ही वृक्ष पर बैठे हुए तोते एवं गिद्ध के लिए उस वृक्ष के अलग-अलग अर्थ निकलते हैं; एक के लिए यह भोजन का स्त्रोत है तथा दूसरे के लिए शिकार ढूंढने का साधन। इसी प्रकार एक माहौल में रहने के बावजूद एक घटना अथवा एक व्यक्ति के प्रति हमारे निजी अनुभव अलग-अलग होते हैं।

विज्ञान की जीवन के बारे में की गई खोज के कारण जैव संसार में हमारी पदवी को धक्का पहुंचा है तथा हम तृतीय चिम्पाजी के रूप में जाने जा रहे हैं।

विज्ञान यह भी दर्शा रहा है कि हम प्रकृति में घटित हुआ एक हादसा हैं। मानव, जीवन के विकास की मंजिल कभी भी नहीं था। वास्तव में जीवन के विकास की मंजिल होती ही नहीं, जीवों के गिर्द बदल रहे हालात इसकी मंजिल निर्धारित करते रहते हैं। हम प्रकृति का दुनिया को दिया गया एक ऐसा उपहार हैं, जिसने अन्य जीवों का जीना दूभर कर रखा है। हमारा ज्ञान भी व्यर्थ एवं घटिया क्रियाक्लापों में अधिक उलझ रहा है तथा रचनात्मक कार्यों में कम। हम एक ही लगन के सताए हुए रह गए हैं तथा वह है-आर्थिक उन्नति। ज्यों-ज्यों आर्थिक प्रगति हो रही है, दुनिया में जीवन का गला दबाया जा रहा है।

हमारा निकम्मापन यह भी है कि अच्छाई संयमी एवं सहज अवस्था में निवास करती है तथा बुराई आवेगी जोश के साथ पनप रही है। गंभीर विचार, सभ्य अहसाय एवं निष्पक्ष व्यवहार अन्तरात्मा को ताजगी प्रदान करते हैं, परन्तु बहुत कम लोग ही ऐसी जीवन पद्धति अपना रहे हैं। स्नेहमयी भावनाओं का खुला प्रकटावा तथा औरों के लिए सरोकार अनुभव करता हुआ माहौल कहीं पर है भी तो उसमें से सहृदयता की महक कम एवं आडम्बर की बदबू अधिक आ रही है। हमारे विवेकहीन डर भी हमारे जीवन का ह्रास कर रहे हैं। इनमें से सर्वाधिक विकराल है मृत्यु का भय। चाहे हर कोई अगले संसार के स्वर्ग (...?) की कामना रखता है, परन्तु कोई भी यथाशक्ति इस संसार वाले नर्क में निकलना नहीं चाहता। धर्म में विश्वास रखने वाले भी शाश्वत अमरत्व की पदवी प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं। पूरा हो जाना, सहज रूप में तथा बिना शोर शराबे के अनन्तता के सागर में समा जाना है, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि नदी बाहें फैला कर सागर में मिल जाती है।

दुनिया में कुछ भी एकतरफा नहीं है और न ही हो सकता है। जहां अरोग्यता है, वहां रोग है तथा जहां पर आशा है, वहां पर निराशा अवश्य है। जहां बुद्धिमता है, वहां पर मूर्खता भी है तथा जहां पर विश्वास है वहां सन्देह भी हैं। प्रकाश एवं अंधेरा भी साथ-साथ निभाते हैं। इसलिए हमेशा आनन्दमयी अवस्था में रहते रहना भी संभव नहीं, जिसके लिए प्रयत्न करते रहना व्यर्थ है। बदलते हुए हालात में अनुकूल बदलते हुए नयेपन के साथ चलते रहना और समस्याओं का सामना करते हुए जीवन व्यतीत करना, जीवित रहने की शर्त है तथा सड़े हुए एवं बासी ढंग से जीवन गुजारना एक हिमाकत है। एक शायर के अनुसार :

'जो जरा पी कर बहक गया,
उसे मयकदे से निकाल दो।
यहां कमनजर का गुजर नहीं,
यहां अहल-ए जर्फ का काम है।'

-हिन्दी अनुवाद-
बलवंत सिंह लैक्चरार

किस्त नं-9

ब्रह्मांड यात्रा

खतरनाक शनि ?!?!

डा. अवतार सिंह ढींढसा
094634-89789

प्रिय दोस्तो, हमारी पृथ्वी के हमसाये, गैसों द्वारा निर्मित बृहस्पति एवं इसके 63 चंद्रमाओं को छोड़ कर जाने को मन तो नहीं मानता, परन्तु यात्रा को जारी रखना हमारी मजबूरी भी है तथा दिलचस्पी भी है। अतः 63 अमावस एवं पूर्णिमाओं वाले बृहस्पति से विदा लें, परन्तु हमें अपने अंतरिक्ष यान की गति अत्यंत तीव्र करनी पड़ेगी अन्यथा हम बृहस्पति के गुरुत्वाकर्षण में से नहीं निकल सकेंगे अर्थात् हमारे अंतरिक्ष यान को एक सैकेंड में 60.2 किलोमीटर तय करने पड़ेंगे। इस गति को पलायन गति कहा जाता है। अर्थात् वह गति जिसके द्वारा किसी ग्रह के गुरुत्व बल के प्रभाव को पार करना संभव हो। आपको स्मरण होगा कि हमारी पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में से निकलने के लिए हमारे यान को एक सैकेंड में 11.2 किलोमीटर तय करने पड़े थे। चलो बढ़ते हैं हमारी अगली मंजिल की ओर.....वो सामने दृष्टिगोचर हो रहा है छल्लों वाला तारा। परन्तु यह तारा नहीं....यह शनि ग्रह है....ज्योतिष द्वारा सर्वाधिक बदनाम किया हुआ यह शनि महाराज, सूर्य से दूरी के हिसाब से छटे स्थान पर स्थित है।

साथियो, शनि ग्रह की खोज करने वाले व्यक्ति के बारे में आपकी दिलचस्पी अवश्य होगी। इसको सर्वप्रथम देखने वाले व्यक्ति के बारे में तो कोई जानकारी नहीं, परन्तु बृहस्पति एवं शनि ग्रह के बारे में तो हड़प्पा, मैसोपोटामिया, चीनी एवं सुमेरियन सभ्यता के लोगों को भी ज्ञान था। क्योंकि इनकी स्थितियां तारों की स्थितियों के अनुसार प्रत्येक वर्ष बदल जाती थी। इनको मनुष्य की आंख बिना किसी बाह्य सहायता के देख सकती है, परन्तु गैलीलियो की दूरबीन ने इनके बारे में नए ज्ञान को एकत्र करना शुरू कर दिया। ये मुख्यतः हाइड्रोजन एवं हीलियम गैसों द्वारा निर्मित हैं। सूर्य के बनने के पश्चात् सूर्य में से ऊर्जा के रूप में निकली सौर आंधी ने बहुत सी गैसों को बाहर की ओर धकेल दिया। जिसमें से कुछ गैसों को बृहस्पति, शनि ने अपने गुरुत्व बल के कारण अपने पास पकड़ लिया और बन बैठे गैसीय दानव।

यदि दूरी की बात करें तो शनि ग्रह सूर्य से औसतन 1 अरब, 42 करोड़ 66 लाख 66 हजार 4 सौ 22 किलोमीटर की दूरी पर है। (वैज्ञानिक तरीके के अनुसार इसको $1.42X10^9$ किलोमीटर भी लिखा जाता है)। यह पृथ्वी एवं सूर्य की दूरी (जिसे सौर इकाई भी कहा जाता है।) से औसतन लगभग 9. 53 गुना अधिक दूर है, अर्थात् यह सूर्य के निकट 9. 17 सौर इकाइयों तक पहुंच जाता है तथा दूर से दूर 9.88 सौर इकाइयों तक पहुंच जाता है , परन्तु ज्योतिष तो सारा साल ही तुम्हें इसके बुरे प्रभावों से भयभीत रखता है। मुझे पूर्ण आशा है कि यह फैसला तो आप स्वयं ही कर लेंगे।

दोस्तो, सूर्य के गिर्द इसका पथ भी अण्डाकार है, परन्तु क्योंकि सूर्य भी अपनी गैलेक्सी आकाश गंगा के केंद्र के गिर्द एक पथ पर घूम रहा है। उस समय शनि की सौर पथ के इर्द-गिर्द गति कुंडलकार होती है। शनि अपने ग्रह पथ पर एक मिनट में 578.3 किलामीटर की दूरी तय करता हैं। इतनी तीव्र गति को मापने के लिए ज्योतिषियों के पास कोई भी यंत्र नहीं है। इसके ग्रह पथ का, सूर्य के साथ झुकाव 2 डिग्री है।

समस्त ग्रहों के आकार के आधार पर यह

गैसीय दानव, बृहस्पति से दूसरे नंबर पर आता है। बड़े आकार का होने के कारण, इनके केंद्र पर इतना अधिक दबाव उत्पन्न हो गया कि हाईड्रोजन गैस भी तरल धातु के रूप में बदल गई। इसका अर्ध व्यास 29116 किलोमीटर है। इसमें 764 पृथ्वियां समा सकती हैं, जबकि सूर्य में 13 लाख 10 हजार 18 पृथ्वियां समा सकती हैं। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार एक चींटी अपने बल द्वारा हाथी, ऊंट एवं घोड़ों को अपने गिर्द घुमा रही हो....फिर भी ज्योतिष पृथ्वी को ब्राह्मांड का केंद्र मानते हुए लोगों का भविष्य बता रहा है। यह प्रमाण है ज्योतिष बनाने वालों के अल्प ज्ञान का तथा स्थिति और भी हास्यास्पद बन जाती है, जबकि शिक्षित कहलाने वाले क्लर्क, अध्यापक, अधिकारीगण इसको विज्ञान मानते हुए ज्योतिषियों द्वारा लूट का शिकार हो रहे हैं। इसके आकार के बारे में एक अन्य रोचक तथ्य भी नोट करो... इसकी ग्रह-मध्य रेखा पर इसका घेरा 365,882.4 किलोमीटर है। लो इस अंतर को हम इस प्रकार समझेंगे...यदि हम एक वायुयान, जिसकी गति 900 किलोमीटर प्रति घंटा हो, में बैठकर पृथ्वी की ग्रह/भूमध्य रेखा का चक्कर लगाएं तो हमें 1.8 दिन का समय लगेगा, परन्तु इसी वायुयान में यदि हम शनिग्रह की मध्य रेखा पर उड़ते हुए चक्कर लगाएं तो हमें 17 दिन लग जाएंगे।

दोस्तो, हमें इसके पास पहुंचने में कुछ समय तो लग ही जाएगा। अतः आओ इसके भार के बारे में भी बात कर ली जाए। इसका वज़न $5.69X10^{26}$ किलोग्राम है। यह हमारी पृथ्वी से लगभग 95 गुना वज़नदार है, परन्तु हमारा यह शनि पानी से भी हलका होता है जोकि पानी के ऊपर लकड़ी की भांति तैर लेगा। अब आप यह अवश्य पूछेंगे कि कोई ग्रह पानी से हलका कैसे हो सकता है? क्योंकि इसका घनत्व केवल 0.69 ग्राम प्रति घन सैंटीमीटर है, जबकि पानी का घनत्व 1 ग्राम प्रति घन सैंटीमीटर है। इस प्रकार शनि पानी से भी हलका है। हमारी पृथ्वी का घनत्व 5.4 घन सेंटीमीटर है। फिर ज्योतिषी हमें वैसे ही भयभीत करके रखते हैं कि शनि बहुत ही भार वाला ग्रह है। शनि ये कर देगा!!! शनि वो कर देगा!!! दोस्तो फैसला तुम्हारे हाथ में है।

आओ, शनि को और निकट से देखें। शनि ग्रह के इर्द-गिर्द अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक छल्ले बने हुए हैं। पृथ्वी से इनको किसी भी साधारण दूरबीन से देखा जा सकता है। इनके नाम ए, बी, सी, डी, इ, एवं एफ तक रखे हुए हैं। इनमें से ई छल्ला अत्यंत संघन है। आओ इन छल्लों में जाकर देखें। ये छल्ले बर्फीले कणों के बने हुए हैं तथा लगभग शनि की सतह से 10 लाख किलोमीटर की ऊंचाई तक फैले हुए हैं। अतः हम पहले इन छल्लों के बीच में से ही गुजरेंगे।

दोस्तो, तुम पुछोगे कि ये छल्ले किस प्रकार बने होंगे? अत्यंत आश्चर्यजनक पहेली है। वास्तव में इटली के विज्ञानी कैसिनी ने 1676 ई. में शनि के छल्लों को बांटती हुई एक पट्टी देखी। इसी कारण इसको छल्लों का कैसिनी बंटवारा कहा जाता है तथा नासा द्वारा एक अंतरिक्ष खोज यान वोयागेस-2 भेजा गया। यह 1981 में शनि के समीप से गुजरा एवं बहुत सी जानकारी भेजी। फिर 15 अक्तूबर 1997 को एक अंतरिक्षीय खोज यान कैसिनी शनि के छल्लों के अध्ययन हेतु भेजा गया। यह वर्ष 2004 ई. में छल्लों के समीप पहुंचा। इससे पता चला कि शनि का एक चंद्रमा एनसेलाडूस का इतिहास बहुत ही परिवर्तनों से भरपूर रहा है। शनि का ई छल्ला जोकि अत्यंत सघन है, यह इस चांद के निकट है तथा अनुमान है कि इस छल्ले के कणों का इस चांद के लिए बहुत योगदान रहा है।

दोस्तो, शनि के शेष चंद्रमा किस प्रकार के हैं? चंद्रमा तो विकृत आकारों वाले हैं....अर्थात् कोई भी चांद गोल नहीं है। अनुमान है कि शेष चंद्रमाओं को तो शनिग्रह ने आवारा घूमते हुए एस्ट्रोयड को गुरुत्वाकर्षण बल के साथ खींच कर

अपने इर्द-गिर्द घूमने के लिए मजबूर कर दिया। शनि पर 30 चंद्रमा हैं। वहां पर कमाल की सुंदर रात्रि होती होगी। कितने ही चंद्रमा आकाश में उदय होते एवं कितने ही अस्त होते होंगे। माना जाता है कि इन चंद्रमाओं के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण ही ये छल्ले अस्तित्व में आए हैं तथा टाईटन शनि का सबसे बड़ा चंद्रमा है। यह चंद्रमा तो बुध ग्रह एंव बौने ग्रह प्लूटो से भी आकार में बड़ा है। एक अन्य कमाल की बात कि इस चंद्रमा पर नाईट्रोजन एवं मीथेन गैस का वायुमंडल भी है जबकि किसी भी अन्य ग्रह के किसी भी चंद्रमा के पास वातावरण नहीं है। सूर्य की रोशनी इस मिथेन को ईथेन एंव अन्य कार्बन यौ गिकों में परिवर्तित कर देती है। इसी कारण बनी हुई सघन धुंध के कारण टाईटन की सतह को दूरबीन के द्वारा नहीं देखा जा सकता। इसके चंद्रमाओं पर ज्वालामुखी नहीं फूटते। इसके अधिकतर चांद तो बर्फ के टुकड़े ही हैं, परन्तु मिमास, टेथीज एवं डाइयोन पर कुछ गड्ढे अवश्य हैं।

शनि के दिन एवं रात्रि कितने बड़े होते हैं? शनि के दिन-रात बृहस्पति से थोड़े बड़े हैं? शनि के दिन-रात 10 घंटे एवं 39 मिनट के होते हैं। अर्थात् 5 घंटे 19 मिनट का दिन एवं इतनी ही बड़ी रात। शनि का चुंबकीय क्षेत्र पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से 578 गुना अधिक ताकतवर है, परन्तु यह इतनी दूरी से पृथ्वी के क्षेत्र को किसी तरह से भी प्रभावित नहीं करता

दोस्तो, ज्योतिष की साढ़सती बारे तुम्हारी जिज्ञासा की मुझे बहुत चिंता है... नोट करो साढ़सती क्या होती है? शनि एक राशि को लगभग अढ़ाई वर्षों में पार करता है। इसको अढ़ाया कहा जाता है, परन्तु जब यह नए चांद से 12वीं एवं दूसरी राशि में होता है तो ज्योतिष इसे साढ़सती कहता है, परन्तु यदि शनि चौथे एवं आठवें घर में हो तो अढ़ाया चलता है। साढ़सती का अर्थ है साढ़े साती अथात् साढ़े सात साल।

दोस्तो, ज्योतिषी तो शनि के केवल नुक्सान ही नुक्सान बताते रहते हैं, क्योंकि डर के कारण ही लोग दान दक्षिणा भेंट करेंगे और ज्योतिषि का धंधा चलता रहेगा। जन्म कुंडली केवल जन्म तिथि स्मरण रखने का ढंग में शनि के महत्व के बारे में आप अवश्य जानना चाहेंगे। आप भी अपने ज्योतिषी को यह अवश्य समझा दें कि शनि एक राशि में ढाई वर्ष रहता है, अर्थात् मान लो कि बच्चे के जन्म के समय शनि द्वितीय राशि में था। अब उसका पिता जन्म कुंडली ज्योतिषि के पास लेकर जाता है तो ज्योतिषी शनि की वर्तमान स्थिति के अनुसार उसकी आयु सही तौर पर बता सकता है। जैसे कि मान लो आज शनि आठवीं राशि में है तो बच्चे की आयु ढाई वर्ष X 8 अर्थात 20 वर्ष। इसी प्रकार शनि 12 राशियों को पार करने में लगाता है लगभग 30 वर्ष सही (29.46 वर्ष) अर्थात शनि को उसी राशि में आने में लगभग 30 वर्ष लग जाते हैं। सूर्य के गिर्द यह 30 वर्षों में केवल एक चक्कर लगाता है। 90 वर्ष के लगभग किसी भी बुजुर्ग के समस्त जीवन में जन्म से लेकर अब तक शनि ग्रह ने सूर्य के गिर्द केवल तीन ही चक्कर लगाए हैं।

इसी प्रकार यदि शनि जन्म की राशि से लेकर चार राशियां पार कर जाए तो एक राशि में ढाई साल और चार राशियों में लगाएगा 10 वर्ष तथा बच्चे की आयु हुई 10 वर्ष। दोस्तो बस इसी को कहते हैं...जनम कुंडली। तात्पर्य यह कि ग्रहों के चक्करों की संख्या...जिससे बालक अथवा किसी भी व्यक्ति की केवल आयु का पता लग जाए परन्तु भविष्य का नहीं।

साथियो, सूर्य से शनि की दूरी के कारण इस पर तो बृहस्पति से भी अधिक ठंड है। अतः स्वयं को इस ठंड से बचाने के लिए आप स्वयं ही उत्तरदायी हैं। एक साधारण सा सिद्धांत है कि ज्यों-ज्यों हम सूर्य से दूर जाएंगे तो ठंड तो बढ़ेगी ही। शनि ग्रह पर तापमान (मनफी) -180 डिग्री रहता है। उधर टी.वी. चैनलों पर एलियन्स बाबत

अत्यंत शोर शराबा पाया जाता है। यह सभी कुछ केवल अपने दर्शकों की संख्या में वृद्धि करने के उद्देश्य के साथ ही ऐसी मसालेदार, बेसिर पैर की कहानियां दिखाई जाती हैं। जबकि यह स्पष्ट है कि इतने कम तापमान पर तथा बगैर आक्सीजन के, कठोर चट्टानी जमीन का न होना, चारों ओर केवल गैस ही गैस का होना, शनि पर जीवन कैसे संभव हो सकता है...?...फैसला आपके हाथ में है। वास्तव में एलियन्स वाली थ्योरी भी केवल मनघड़ंत थ्योरी के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

दोस्तो यात्रा जारी है....आपके साथ से यह और भी दिलचस्प बन जाएगी...कोई प्रश्न हो तो अवश्य सम्पर्क करें। ***क्रमशः)***

-हिन्दी अनुवाद
बलवंत सिंह लैक्चरार

पृष्ठ 49 का शेष
(विज्ञान चालीस).....

लगी केकुले को सुखदाई
देखि रेडियो मारकोनी का
मन उमंग से भरा सभी का
कृत्रिम जीन का तोहफा लैके
हरगोविंद खुराना आए
ऊर्जा की परमाणु इकाई
डा भाषा के मन भाई
थामस ग्राहम अति विख्याता
गैसों के विसारण के ज्ञाता
जो यह पढ़े विज्ञान चालीसा
देइ उसे विज्ञान आशीषा

।।दोहा।।

यह चालीस श्रद्धा युक्त पाठ करे जो कोई
उन पर कृपा प्रसन्नता विज्ञान की ही होई
इति श्री विज्ञान चालीसा समाप्ता।
जय ज्ञान, जय विज्ञान

जनता ने जाना

-डा0 रणजीत

जनता ने जना था ईश्वर
अपने आदिम भय से मुक्ति के लिए
पर पुजारियों ने बन्द कर लिया
उसे मंदिरों में
पुजारी बने पुरोहित
और जनता को ठग-ठग कर
अपने घर भरतने लगे
ईश्वर अन्याय और विष्मता का प्रहरी हो गया

जनता ने जना था राजा
व्यवस्थ बनाने के लिए
राजा ने अपने सामन्त जन
राजा और सामन्त मिलकर
जनता पर जुल्म ढाने लगे
राज्य बन गया लुटेरों और हत्यारों का
संगठित गिरोह

जनता ने की थी क्रान्ति
संसार को स्वर्ग बनाने के लिए
क्रांति ने पैदा किये नेता
नेताओं ने डाल दिया
क्रान्ति को अपने हरम में
जनता जाये जहन्नुम में
और क्रान्ति
जनता के दमन और दोहन का
हथियार बन गई।

★★

तर्कशील सोसायटी हरियाणा का द्विवार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

रेशनेलिस्ट सोसायटी (तर्कशील) हरियाणा (रजि.) का द्विवार्षिक अधिवेशन सरस्वती बाल विहार पब्लिक स्कूल कैथल में सम्पन्न हुआ, जिसमे राज्य भर से तर्कशील सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में सोसायटी के आडिटर बलजीत भारती ने सोसायटी की कार्यप्रणाली से संबंधित विस्तृत एजेंडा सभा मे रखा, जिस पर बाद में विस्तृत चर्चा की गई। सभा में सोसायटी के महासचिव गुरमीत सिंह ने वर्ष 2013-14 की गतिविधियों अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिस पर खुले अधिवेशन में चर्चा हुई। कोषाध्यक्ष अनुपम सिंह ने बजट व लेखा का विवरण रखा, जिसे अनुमोदन करके सर्वसम्मति से पास किया गया।

सोसायटी अध्यक्ष राजाराम हंडियाना ने हरियाणा में शुरूआती दौरे से लेकर आज तक की सोसायटी की प्रगति पर अपनी रिपोर्ट रखी एवं नई चुनौतियों को लेकर नए मापदंड अपनाने की बात कही। सोसायटी के प्रबंधक विजय कुमार ने सोसायटी के संविधान में नए पंजीकरण को लेकर सुझाव रखे, जिस पर एक बहस के उपरांत सोसायटी संविधान के आवश्यक संशोधन पास किए एवं वर्ष 2015-16 के लिए नई कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्न पदाधिकारियों को चुना गया। चुनाव प्रक्रिया की अध्यक्षता मा. रछपाल सिंह ने की एवं विशेष पर्यवेक्षक के रूप में विनोद कुमार (तर्कशील साथी उत्तर प्रदेश) ने की।

मीटिंग में सर्वसम्मति से चुने सदस्य : संरक्षक राजाराम हंडियाना, प्रधान गुरमीत सिंह, उपप्रधान फरियाद सिंह, महासचिव गोरा सिंह, उपमहासचिव राजेश पेगा, कोषाध्यक्ष अनुपम सिंह, प्रैस सचिव सुभाष तितरम, राज्य कार्यकारिणी सदस्य बलजीत सिंह, विजय कुमार, डा. परमानंद, सुरेश रनवा, मुख्य सम्पादक पत्रिका तर्कशील पथ मा. बलवंत सिंह, सोशल मीडिया प्रभारी रामदत्त शर्मा, इलैक्ट्रोनिक मीडिया प्रभारी अश्वनी कुमार शामिल हैं।

गणतंत्र दिवस पर तर्कशील कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 26..1.2015 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर सावित्री बाई फुले संघ-किनाला, जिला हिसार के सहयोग से गांव किनाला में एक तर्कशील कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मनरेगा मजदूर संघ के सदस्यों द्वारा झण्डा रस्म अदा की गई। फिर गांव के नन्हें बच्चों ने देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किये।

तत्पश्चात् फरियाद सिंह सनियाना, राम प्रसाद एवं अमरजीत मुगलपुरा तथा कशमीर किनाला द्वारा जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर उनकी वैज्ञानिक व्याख्या करके चमत्कारों की वास्तविकता के बारे में समझाया गया।

अपने संबोधन में फरियाद सनियाना ने तर्कशील सोसायटी उद्देश्यों एवं सोसायटी द्वारा ढोंगी बाबाओं, तांत्रिकों, मुल्लाओं इत्यादि के सामने करोड़ों रूपयों का ईनाम जीतने की चुनौती के बारे विस्तार से समझाया।

★★

गांव बिठमड़ा, जिला हिसार में शहीदी दिवस को समर्पित

दिनांक 23.3.2015 को गांव बिठमड़ा जिला हिसार में ग्राम सुधार समिति एवं ग्राम विकास समिति, बिठमड़ा के सहयोग से श0भगत सिंह, राजगुरू, एवं सुखदेव की स्मृति में एक चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि श्री राजेन्द्र छतरवारल एवं मुख्य अतिथि श्री मदन लाल छतरवाल थे।

कार्यक्रम में फरियाद सनियाना, रामप्रसाद एवं वेद प्रकाश ने जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर उनकी व्याख्या प्रस्तुत करके जनता को समझाया कि दुनिया में केवल घटनाएं घटती हैं, चमत्कार कभी भी नहीं होते। श्री फरियाद सनियाना ने अपने संबोधन में श0भगत सिंह की भारतीय समाज को वैज्ञानिक चिन्तन की देन का उल्लेख करते हुए बताया कि तर्कशील सोसायटी, हरियाणा भी शहीदों की सोच पर पहरा देते हुए अन्धविश्वासों से मुक्त एक वैज्ञानिक चिन्तन वाला समाज के निर्माण में प्रयासरत है।

इस कार्यक्रम के आयोजन में समिति के सचिव मिहां सिंह, सहसचिव गुरदेव सिंह सोढी ने विशेष सहयोग दिया।

कार्यक्रम की विशेषता पाकिस्तान से गांव में आए हुए एक अतिथि राव शमसुदीन खान रहे। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि पाकिस्तान में इस प्रकार के वैज्ञानिक चिन्तन वाला कार्यक्रम कहीं भी पेश नहीं किया जा सकता। उन्होंने इस कार्यक्रम की अत्यधिक सराहना की।

ईकाई भूना-उकलाना का सम्मेलन

तर्कशील सोसायटी, हरियाणा की इकाई भूना-उकलाना का सम्मेलन दिनांक 12.4.2015 में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता राज्य कमेटी के पूर्व उप-प्रधान श्री फरियाद सिंह सनियाणा ने की ।

सम्मेलन में तर्कशील सोसायटी, हरियाणा के उद्देश्यों को हासिल करने के लिए इकाई भूना-उकलाना की गतिविधियों को जोर-शोर से आगे बढ़ाने का संकल्प किया गया।यह भी संकल्प किया गया कि सोसायटी की पत्रिका 'तर्कशील पथ' की सदस्य संख्या आने वाले दिनों में कम से कम 200 कर दी जाए।

सम्मेलन में ईकाई की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जो कि निम्नानुसार है:-

1. प्रधान- अजय सिंह झाझड़ा
2. उप-प्रधान - सूरज भान
3. सचिव - रविन्द्र कुमार
4. सह सचिव - विनोद कुमार मावलिया
5. कोषाध्यक्ष- नरेन्द्र कुमार
6. प्रचार सचिव - भगत सिंह
7. प्रैस सचिव - सत्यवान वर्मा

इसके अतिरिक्त डा. इकबाल, रमेश कुमार, राम प्रसाद, दयानन्द, सुरेश कुमार एवं संदीप कुमार ने भी सभा को संबोधित किया।

गांव फग्गू, जिला सिरसा में तर्कशील मेला

दिनांक 2-4-2015 को गांव फग्गू, जिला सिरसा में एक तर्कशील मेले का आयोजन किया गया। यह तर्कशील मेला श0भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव के शहीदी दिवस को समर्पित था।

इस में लोक कला मंच-बरनाला की टीम द्वारा हरविन्द्र दीवाना के निर्देशन में नाटक 'छिपने से पहले', तथा 'अवेसले युद्धां दी नायिका' नाटकों का मंचन किया गया । इसके साथ ही कार्यक्रम में लोक कला मंच, बरनाला की टीम द्वारा श0भगत सिंह के जीवन पर तथा किसानों की दुर्दशा को व्यक्त करती हुई कोरियोग्राफियां भी पेश की गईं।

कार्यक्रम में मा. अजायब जलालाना एवं

श्री भाना सिंह द्वारा जादू के ट्रिक पेश किये गए तथा कुछेक ट्रिकों की व्याख्या करके चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इकाई कालांवाली के प्रधान मा.शमशेर सिंह ने शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेने तथा उनकी सोच पर पहरा देने की अपील करता हुआ अपना वक्तव्य रखा तथा साथ ही तर्कशील सोसायटी के उद्देश्यों के बारे में भी विस्तार से समझाया।

कार्यक्रम को सुचारु ढंग से चलाने में फ्रैंडस युवा क्लब-फग्गू के कार्यकताओं ने विशेष योगदान दिया । इस कार्यक्रम में मा. जगदीश सिंह जोधपुरिया तथा नरभिन्दर ने तर्कशील व क्रांतिकारी साहित्य की स्टाल भी लगबाई।

पूण्डरी में तर्कशील सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक 19-4-2015 पूण्डरी जिला कैथल में एक तर्कशील सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में इकाई पूण्डरी तथा आस-पास के क्षेत्रों से लगभग 70 साथी उपस्थित रहे। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रादेशिक प्रचार सचिव श्री सुभाष तितरम ने की तथा मंच संचालन श्री कृष्ण हलवाई ने किया।

सर्वप्रथम राज्य कार्यकारिणी के सदस्य श्री सुरेश रनवा जी ने 'धर्मस्थलों में दान अथवा शिक्षा एवं चिकित्सा पर खर्च किस में जरूरी है', विषय पर विस्तार से चर्चा की। श्री मान सिंह पूण्डरी ने 'गीता का वैज्ञानिक विश्लेषण' पर अपने विचार रखे। श्री लक्ष्मी आनन्द जी ने समाज में तर्कशील विचार अपनाने पर बल दिया। श्रीमती शशिबाला ने जाति व्यवस्था के उद्भव तथा वर्तमान में उसकी प्रासंगिता पर वक्तव्य दिया।

मंच संचालन करते हुए कृष्ण हलवाई ने स्पष्ट किया कि तर्कशील सोसायटी का उद्देश्य समाज में वैज्ञानिक चिन्तन का प्रचार-प्रसार करना है तथा किसी धर्म विशेष का विरोध करना हमारा उद्देश्य नहीं है।

अध्यक्षीय भाषण में श्री सुभाष तितरम ने आहवान् किया कि तर्कशील व्यक्ति का कार्य समाज में फैली कुरीतियों एवं सामाजिक बुराइयों का खण्डन करना है। इस कार्यक्रम में ईकाई पूण्डरी के सदस्य श्री रामफल जी ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

शोक समाचार

तर्कशील सोसायटी, हरियाणा की तरावड़ी इकाई के प्रधान श्री पदम सिंह जी की पत्नी श्रीमती सुरेशो रानी का लम्बी बीमारी के चलते 60 वर्ष की आयु में दिनांक 13-4-2015 को सायं 5 बजे निधन हो गया।

साथियों ने प्रयत्न करके माधव नेत्र बैंक के साथ सम्पर्क स्थापित किया तथा उनका नेत्रदान करवा दिया। यह कार्य उन्होंने तर्कशील सोसायटी द्वारा मानवता के हित चलाए जा रहे 'मृत्योपरांत शरीरदान एवं नेत्रदान' के अभियान के तहत किया।

श्री पदम सिंह जी ने अपनी पत्नी की शव यात्रा के समय किसी व्यक्ति को भी 'राम नाम सत्य है' बोलने की पूर्णतः मनाही कर दी थी। इसके साथ ही उनके अन्तिम संस्कार के समय किसी भी प्रकार की कोई ब्राह्मणवादी रस्म नहीं अपनाई। इसके विपरीत उनका देहावस्न बौद्ध रस्मों के अनुसार किया गया। माननीय रघुबीर बौद्ध एवं नसीब बौद्ध द्वारा उनकी अंतिम रस्में पूर्ण की गईं।

सोसायटी उनके परिवार के दुःख में सहभागी बनते हुए हार्दिक संवेदना व्यक्त करती है।

बाबाओं के काले कारनामे

नाबालिग से बलात्कार के दोष में मौलवी गिरफ्तार

पत्र प्रेरक, जम्मू, 20 अप्रैल : एक नाबालिग लड़की द्वारा पूणछ की मंडी तहसील के एक मौलवी एवं उसके साथी पर बलात्कार करने के लगाए गए दोषों पर पुलिस ने मौलवी को गिरफ्तार कर लिया है। मौलवी की मदद करने वाले अध्यापक एवं जेई समेत पांच लोग फरार हो गए हैं।

सूत्रों के अनुसार पूणछ की मंडी तहसील के रहने वाले मौलवी फरीद के कई बड़े अधिकारियों के साथ अच्छे संबंध हैं।

नाबालिग ने मौलवी एवं उसके एक अन्य साथी बशीर अहमद पर बलात्कार का दोष लगाया, जिस पर पुलिस ने मौलवी को हिरासत में ले लिया। यह भी दोष है कि पांच अन्य लोगों ने भी इस घटना को अंजाम देने के लिए दोषी का सहयोग दिया था।

इनमें हायर सैकेंडरी स्कूल मंडी का एक अध्यापक, जेई एवं तीन अन्य लोग शामिल हैं। नाबालिग ने बयान दिया है कि मौलवी ने कुछ दिन पूर्व उसे अपने साथियों के साथ मिल कर अगवा किया था।

उसके पश्चात् मौलवी एवं बशीर अहमद निवासी सागरा मेंढर ने उसके साथ बलात्कार किया। कुछ दिन पूर्व ही पुलिस को सूचना मिली कि मौलवी बुद्धल इलाके में मौजूद है। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंच कर उसे गिरफ्तार कर लिया।

उल्लेखनीय है कि बुद्धल थाने में एक अन्य नवयुवती के अगवा के मामले में दोषियों की सूची में मौलवी का नाम शामिल है। नवयुवती अभी तक बरामद नहीं हो सकी।

राजौर-पूणछ रेंज के डीआईजी अशोक कुमार अत्री का कहना है कि इस मामले में विशेष टीम का गठन करके बाकी दोषियों को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

पंजाबी ट्रिब्यून 21-4-14

साध्वी ने करवाया समलैंगिक विवाह, किया यौन शोषण

चरखी दादरी (भिवानी)–श्री कृष्ण प्रणामी आश्रम में साध्वी पर किशोरी का समलैंगिक विवाह कराने व यौन शोषण करने के आरोपों की जांच कर रही एसआईटी बृहस्पतिवार को पीड़िता के घर पहुंची। बंद कमरे में किशोरी के बयान कलमबद्ध किए गए। पीड़िता ने अपने लिखित व मौखिक बयान में समलैंगिक विवाह व यौन शोषण के आरोप दोहराए। आश्रम में कब, कहां, क्या हुआ, यह भी टीम को बताया। एसआईटी ने पांच दिसम्बर को को आश्रम की प्रमुख साध्वी व एक अन्य साध्वी को तलब किया है। किशोरी के नए बयान के साथ ही दोनों साध्वियों की मुश्किल बढ़ सकती है। बृहस्पतिवार को जिला बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष राजबाला, शिखर चेतना संगन अध्यक्ष सुशील वर्मा, बाल कल्याण समिति सदस्य मीना जांगड़ा, सुनीता यादव के अलावा मनोरोग विशेषज्ञ अनुपमा व डीएसपी अमित भाटिया की टीम ने किशोरी के घर जाकर बंद कमरे में बयान दर्ज किए।

–अमर उजाला–05–12–2014

देवता से शादी : 13 साल की बच्ची बनी मां

पुणे–महाराट्र के अहमद नगर जिले में एक 13 साल की बच्ची देवता से शादी के बाद मां बन गई है। मामला सामने आने के बाद अब पुलिस आरोपी की तलाश में जुट गई है। अहमदनगर के अकोल तालुका के एक गांव में रहने वाली इस बच्ची को महज दो साल की उम्र में उसकी दादी ने भगवान खांडोबा के मंदिर में सौंप दिया था। इसी साल अक्तूबर में गांव वालो ंने 13 साल की हो चुकी बच्ची के साथ दो माह की बच्ची को देखा। बच्ची के साथ उसकी दादी भी थी। शक होने पर गांव वालों ने इसकी शिकायत पुलिस और सामाजिक संस्थाओं में कर दी। पुलिस अब आरोपी की तलाश में जुट गई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि वह देवदासी प्रथा कानून के तहत मामले की जांच कर रहे हैं।

परम्परा या अंधविश्वास–यह अंधविश्वास से जुड़ा मामला है। इस इलाके में परम्परा है कि यदि किसी के यहां बच्चे नहीं हो रहे हैं तो वह भगवान खांडोबा के मंदिर में मन्नत मांगता है कि यदि उसके यहां बच्चे हो जाते हैं तो वह पहला बच्चा भगवान की सेवा में भेंट कर देगा। भेंट किए जाने वाले लड़के को वाग्या तथा लड़की को मुरली कहा जाता है। जिस 13 साल की लड़की ने बेटी को जन्म दिया है उसकी मां को भी बच्चे नहीं हो रहे थे और उसकी दादी ने भी मन्नत मांगी थी कि यदि उनकी बहू मां बनती है तो वह पहला बच्चा देवता को सौंप देंगे।

पुलिस लगा रही कयास– पुलिस को लगता है कि मंदिर के किसी व्यक्ति ने इस युवती का यौन शोषण किया होगा, जिसकी वजह से यह अबोध बालिका मां बन गई। एक सामाजिक कार्यकर्त्ता ने बताया कि कुछ सालों पहले इस बालिका का दाखिला एक स्कूल में कराया गया था। उस दौरान उसे यूनिफार्म और स्कूल बैग भी दिए थे, लेकिन चूंकि मंदिर में होने वाले जागरण से बच्ची को हर दिन 500 रुपए की कमाई होती थी और परिवार बेहद गरीब था, इसलिए बच्ची ने पढ़ाई छोड़ दी और मुरली बनकर ही रहने लगी। सामाजिक संगठनों का आरोप है कि स्थानीय पुलिस इस तरह के मामलों में कार्रवाई से बचती है और इसी कारण इन कुप्रथाओं को खत्म नहीं किया जा सका है।
आज समाज–28–12–14

नेशनल एथलीट को डायन होने के संदेह में बांध कर पीटा

दीफू (असम)–राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कई पदक जीतने वाली महिला एथलीट को डायन होने के संदेह में बांध कर पीटने का मामला प्रकाश में आया है। यह शर्मनाक घटना असम के कार्बी अलंगा जिले में चेरेकुली गांव की है, जहां लोगों के एक समूह ने राष्ट्रीय एथलीट देबजानी बोरा पर डायन होने का आरोप लगाया और हमला किया।

जिला पुलिस अधीक्षक एम.जे. महंता ने कहा कि कल देर शाम राष्ट्रीय खेलों में भाला फैंक प्रतियोगिता में पदम जीतने वाली बोरा को कुछ लोग जबरन नाम घर (सामुदायिक प्रार्थना स्थल) घसीट कर ले गए और एक पोस्ट से बांध कर पीटा। पुलिस अधिकारी ने बताया कि नामघर के प्रमुख राधा लस्कर ने लोगों से कहा था कि एथलीट एक डायन है और गांव में हो रही तमाम समस्याओं के लिए जिम्मेदार है। हमले के बाद बोरा बेहोश हो गई और उनके परिवार के सदस्य किसी तरह उन्हें नामघर से ल जाकर डोकोमोका प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में भर्ती कराया। उनकी पीठ और गले पर चोटें आई हैं। परिवार के सदस्यों ने दो लोगों पर प्राथमिकी दर्ज कराई, जिन्हें गिरफतार कर लिया गया है।

–अमर उजाला–17–10–2014

खोज खबर

ओरल पट्टी से टीबी की जांच होगी आसान

वांशिगटन–टीबी का पता लगाना और उस पर काबू पाना अब पहले से ज्यादा आसान हो जाएगा। यूनिवर्सिटी आफ वांशिगटन के शोधकर्त्ताओं ने ऐसी ओरल स्ट्रिप विकसित की है जिससे टीबी का पता कम समय और कम खर्च में असानी से लगाया जा सकेगा। शोधकर्त्ता गेरार्ड कैन्गैलोसी का कहना है कि टीबी का इलाज और उस पर नियंत्रण के लिए मामलों का जल्द से जल्द पता लगना आवश्यक है। शोध के दौरान 20 स्वस्थ और 20 टीबी रोगियों के मुंह पर पट्टी लगाई गई। टीबी के 20 रोगियों में से 18 की जांच पोजीटिव आई, जबकि स्वस्थ लोगों में से किसी में भी टीबी की पुष्टि नहीं हुई।

मूंगफली खाने से लंबी होगी उम्र

वांशिगटन–मूंगफली खाने से आप की उम्र लंबी हो सकती है। अमेरिका और चीन के शोधकर्त्ताओं का कहना है कि मूंगफली खाने से दिल का दौरा पड़ने की आशंका कम हो जाती है। अमेरिका की वेंडरबिल्ट यूनिवर्सिटी और चीन के शंघाई कैंसर इंस्टीच्यूट के शोध में पाया गया है कि मूंगफली व अन्य मेवे खाने वाले निम्न आय समूह के लोगों में मौतें (विशेष कर हृदय रोग संबंधी) कम थी। शोध में 70 हजार अफ्रीकी और यूरोपीय मूल के अमेरिकी और 1 लाख 30 हजार चीनी लोगों को शामिल किया गया। शोध के दौरान मूंगफली खाने से सामान्य रूप से होने वाली मौतों में 17 से 21 प्रतिशत, दिल संबंधी बीमारी से होने वाली मौतों में 23 से 28 प्रतिशत तक की कमी पाई गई। शोध से जुड़े शियो ऑउ शू का कहना है कि मूंगफली व अन्य नट में फैटी एसिड, फाइबर, विटामिन, फिनोलिक एंटीआक्सीडेंट, आर्गिनीन और अन्य पाइथोकैमिकल पाए जाते हैं।

पत्नी से झगड़ा हो तो मुंह फुलाकर न बैठें–रिसर्च

पति–पत्नी के बीच आमतौर पर झगड़े हो जाते हैं। ऐसे मेंअकसर यह देखा जाता है कि ऐसे में या तो उनमें से कोई वहां से हट जाता है या फिर चुप्पी साध कर बैठ जाता है और भावनात्मक होकर यह सोचने लगता है कि दूसरा अपने–आप ही उसके मन की बात समझ लेगा। शोधकर्त्ताओं के मुताबिक दोनों ही तरह का बर्ताव सही नहीं है। दोनों ही तरह के व्यवहार से रिश्तों में और ज्यादा दरार पड़ती है। बेलर विश्वविद्यालय के कालेज आफ आर्टस एंड साइंसेज में मनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान के सहायक प्रोफेसर कीथ सेनफोर्ड ने कहा कि संबंध टूटने में इन दो तरीके के विमुख होने के व्यवहार प्रमुख भूमिका निभाते हैं मतभेद या झगड़ा होने पर सामने से हटकर चले जाना दांपत्य संबंध को सबसे अधिक नुक्सान पहुंचाता है। सेनफोर्ड ने बताया कि जब लोगों को लगता है कि उन पर निशाना साधा जा रहा है तो लोग बचने की नीति के तहत वहां से हट जाते हैं, लेकिन घटनास्थल से हट जाने से संबंधों में असंतोष भी उसी के अनुरूप बढ़ता जाता है। इसी तरह केई लोग मनमुटाव या झगड़े के दौरान चुप्पी साध लेते हैं और समझते हैं कि उसका पति या उसकी पत्नी उसके मन की बात समझ लेंगे, लेकिन हकीकत है कि इससे दरकते रिश्ते को पटरी पर लाने की उनकी क्षमता घट जाती है। शोधकर्त्ताओं ने इस संबंध में तीन अध्ययन किए, जो अमेरिकन साइकोलजिकल एसोसिएशन के शोध पत्र साइकोलजिकल एसेसमेंट में प्रकाशित हुआ है।

स्वास्थ्य

बदलते मौसम में रखें खास ध्यान

मौसम बदल रहा है। दिन में तापमान बढ़ जाताा है और रात को मौसम ठंडा होता है। ऐसे में जरा सी भी लापरवाही आपकी सेहत खराब कर सकती है। दिन में तेज धूप होने का यह मतलब नहीं कि आप गर्म कपड़े अभी से उतार दें। सुबह घर से निकलते समय गर्म कपड़े जरूर पहनें, क्योंकि रात में अभी भी मौसम ठंडा रहता है। आपकी लापरवाही बुखार, सांस संबंधी समस्याओं या खांसी-जुकाम की परेशानी को बढ़ा देती है। जिन लोगों को रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, वे शीघ्र ही मौसमी बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। डाक्टरों के अनुसार सर्दी हेल्दी सीजन होता है, लेनिक मौसम बदलने से कई तरह के कीटाणु तेजी से पनपते हैं जो कई बीमारियों का कारण बन सकते हैं। खासकर बुखार, निमोनिया और फेफड़ों के संक्रमण की समस्या हो सकती है। बदलते मौसम में फूड प्वाइजनिंग, टायफायड, वायरल, पीलिया जैसी बीमारी होने का खतरा रहता है। खानपान पर पर्याप्त ध्यान न देने के कारण समस्या बढ़ सकती है। इस मौसम में इंफेक्शन होने का खतरा भी अधिक रहता है। ऐसे में जरूरी है साफ-सफाई। साफ-सफाई का उचित ध्यान रखकर आप इन बीमारियों से खुद को बचा सकते हैं। अगर आपके आसपास कोई सर्दी-जुकाम से पीड़ित व्यक्ति है तो विशेष सावधानी रखना आवश्यक है। नहीं तो आप भी संक्रमित हो सकते हैं। अधिक देर तक रखा खाना या बाहर का भोजन न लें। किचन में पेट्स को न आने दें, गर्म और ताजा खाना ही खाएं। कुछ भी खाने से पहले हाथ अच्छी तरह से धोलें। फल को अच्छी तरह से धोकर खाएं।

समझो आयरन की जरूरत

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अन्य विटामिन की ही तरह आयरन से भरपूर आहार लेना भी बहुत जरूरी है। आयरन की आवश्यकता शरीर को हीमोग्लोबिन बनाने के लिए होती है। यह लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाता है जो शरीर के विभिन्न अंगों तथा ऊतकों में आक्सीजन वहन करने का काम करता है। यदि आहार में आयरन की उतनी मात्रा शामिल नहीं है, जितनी शरीर को जरूरत है तो आपको आयरन की कमी या एनीमिया हो सकता है। शरीर में आयरन की कमी होने से आपको थकान महसूस हो सकता है। इसकी कमी होने से कोशिकाओं तक आक्सीजन ठीक प्रकार से नहीं पहुंचता, जिससे शरीर को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिल पाती। ऐसे में खून की कमी होने से शरीर जल्दी थक जाता है। सामान्य रूप से सीढ़ियां चढ़ने में सांस फूलना, हलके व्यायाम में थकान महसूस करना, दिल का अनियमित रूप से तेज धड़कना, सिर दर्द, काम पर ध्यान लगाने में कमी, मांसपेशियों में दर्द, चिंता, बालों का झड़ना, नाखुनों का कमजोर होना आदि आयन की कमी के मुख्य लक्षण हैं। आयरन के लिए आप टमाटर, मशरूम, पत्तीदार सब्जियां, चुकंदर, सोयाबीन, सूखे मटर, काबुली चना, दाल, तरबूज, अंगूर, सेब, केला, खजूर, किशमिश, साबुत अनाज डाईट में शामिल करें।

★★

हवा कागज को थाम कर रखेगी

अपनी हथेली पानी से भरी बाल्टी में डुबोकर आगे-पीछे हिलाकर देखिए। आप सहजता से नहीं हिला पाएंगे, क्योंकि पानी आपके हाथ की हलचल का प्रतिरोध (विरोध) करता है। इसी तरह हवा भी हलचल का प्रतिरोध करती है। इसे ही हवा का प्रतिरोध कहते हैं।

जरूरी सामान :

नोट बुक का पन्ना

इस तरह से करें :

एक हाथ आगे की ओर तान कर, हथेली सामने रखें। दूसरे हाथ से कागज को तनी हुई हथेली पर दबाएं। जैसे ही आप दूसरा हाथ हटाते हैं, कागज नीचे गिर जाता है।

एक बार फिर कागज को अपनी तनी हुई हथेली पर दबाएं। इस बार कागज को दबाए हुए ही दौड़ना शुरू करें और दौड़ते हुए दूसरा हाथ कागज पर से हटा लें। जब तक आप दौड़ते रहेंगे, कागज हथेली से चिपका रहेगा।

कुछ चर्चा :

हवा हर कहीं है इस बात से तो आप वाकिफ ही हैं। आप जब दौड़ते हैं, कागज हवा को आगे की ओर दबाता है और हवा भी कागज को हथेली की ओर दबाती है।

सतह कम-प्रतिरोध भी कम

पिछले प्रयोग में हमने देखा कि जब हवा को धकेलते हैं तो हवा भी विपरीत दिशा में धकेलती है, लेकिन यह क्रिया सतह पर ही होती है। यहां हम देखने की कोशिश करेंगे कि सतह कम करने पर, क्या हवा का प्रतिरोध भी कम होता है ?

इस तरह से करें:

दो सामान आकार के कागज अपनी एक-एक हथेली पर आड़ा रख लें। समान ऊंचाई से दोनों को एक साथ छोड़ दें। आप देखेंगे कि दोनों कागज, लहराते हुए, लगभग एक जैसी गति से नीचे पहुंचते हैं।

अब एक कागज को गुचुड़-मुचुड़ करके बॉल जैसा बना लें। एक बार फिर समान ऊंचाई से कागज की बॉल और दूसरे कागज को एक साथ छोड़ें। क्या दोनों एक ही गति से नीचे आते हैं ?

कुछ चर्चा :

गिरता हुआ कागज हवा को नीचे की ओर दबाता है और हवा कागज को ऊपर की ओर। यहां हवा का प्रतिरोध कागज की निचली सतह पर होता है।

बॉल की निचली सतह का क्षेत्रफल कागज की निचली सतह के क्षेत्रफल से कम है। इसलिए बॉल पर हवा का प्रतिरोध भी कम हो जाता है।

केस रिपोर्ट

और फिर पीर की चौकी से छुटकारा मिल गया

-बलवंत सिंह, लैक्चरार

भारतीय सेना से रिटायर होते समय बलकार सिंह ने अपने छोटे परिवार के साथ सुख शांति वाला जीवन व्यतीत करने की कामना की थी। अपने गांव में उनकी 5-6 एकड़ पुश्तैनी जमीन थी। उनके घर में उन दोनों पति-पत्नी के अलावा उनका एकमात्र पुत्र कुलबीर ही था। घर में लाडला होने व व अपने पिता के फौज में होने के कारण कुलबीर पूरी तरह से उदण्ड हो चुका था। माता-पिता द्वारा शहर के एक नामी स्कूल में दाखिल करवाने के बावजूद भी ठीक से पढ़ लिख नहीं सका था। बलकार सिंह की रिटायरमैंट तक कुलबीर 14-15 वर्ष का हो चुका था। बलकार सिंह को अपने इकलौते पुत्र के न पढ़ने का मलाल तो था, परन्तु उसे विश्वास था कि अब जब वह घर आ गया है, तो दोनों पिता-पुत्र मिल जुल कर अपना काम धंधा बढ़िया तरीके से चला लेंगे।

घर में आकर जब बलकार सिंह ने अपने पुत्र को अनुशासन में रखना चाहा तो कुलबीर और भी उदण्डता का व्यवहार करने लग गया। फौजी ने जब थोड़ी सी और सख्ती की तो कुलबीर घर से भाग गया। मां-बाप द्वारा भाग-दौड़ करने पर वह रिश्तेदारी में बैठा हुआ मिला। वहां से वे तरला-मिन्नत करके उसे घर ले आए। घर आकर कुलबीर का चाल-चलन वैसा ही बना रहा। वह सुबह ही घर से निकल जाता और सारा दिन अपने दोस्तों के साथ घूमता-फिरता रहता। देर रात्रि को वह घर आता और आकर अपनी मां अथवा बाप से लड़-झगड़ कर सो जाता।

उसका ऐसा व्यवहार देखकर उसके मां-बाप एवं रिश्तेदारों ने समझा कि कुलबीर पर किसी भूत-प्रेत का साया है और उस पर किसी ने कुछ करवाया हुआ है। कई चौकियां भरने तथा मोटा पैसा खर्च करने पर भी जब कुलबीर के व्यवहार में कोई तबदीली नहीं हुई तो वे किसी अन्य बाबा की शरण में चले गए।

इस प्रकार वे एक के बाद दूसरे बाबा, तांत्रिक-मांत्रिक, मुल्ला-मौलवी, संत-महंतों की चौकियों पर जाते रहे। वे बाबा वडभाग सिंह के डेरे पर, सरहिन्द के किसी बाबा के पास, यूपी के कई तांत्रिकों व मौलवियों के पास जाकर चौकियां भरते रहे। इस प्रकार इन बाबाओं, मुल्लाओं व तांत्रिकों ने उनका कई लाख रुपया खर्च करवा दिया, परन्तु कुलबीर का व्यवहार वैसा का वैसा ही बना रहा।

फिर एक बाबा ने उनके घर को कील कर घर में सुख शांति कर देने की गारंटी का दावा किया। निश्चित दिन पर वह बाबा उनके घर आ गया और सारा दिन एक कमरे में बैठकर अपने मंत्र अथवा कलामें पढ़ता रहा। अपनी पूजा-पाठ करने के पश्चात् उसने ऐलान कर दिया कि उनके घर के एक विशेष कमरे में पीर की सवारी है। अतः वहां पर पीर की जगह बनानी पड़ेगी तथा प्रत्येक बृहस्पतिवार को उक्त कमरे में पीर की चौकी लगानी पड़ेगी। उसने यह दावा किया कि सच्चे मन से ऐसा करने पर उनके घर में सुख शांति तो आएगी ही, इसके साथ-साथ बृहस्पतिवार को जो भी बाहर से संगत वहां पर आएगी, उनके भी कष्ट-कलेश दूर हो जाएंगे। उसने बलकार सिंह के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दे दिया तथा कह दिया कि बलकार सिंह को अब पीर जी का वरदान मिल गया है। अब प्रत्येक बृहस्पतिवार को पीर जी

बलकार सिंह के शरीर में मौजूद रहेंगे तथा दुखी जनता का कल्याण करेंगे। ऐसा दावा करने के पश्चात् वह उनसे हजारों रुपए की दक्षिणा लेकर तथा बृहस्पतिवार को चौकी लगाने के लिए प्रयोग में आने वाले सामान की लिस्ट देकर चला गया।

उसके पश्चात बलकार सिंह ने उस कमरे में पीर की चौकी पर प्रयोग होने वाला सामान जिसमें कुछ विशेष प्रकार के बर्तन, बड़े-बड़े दीए, धूप-अगरबत्तियां, देसी घी, सरसों का तेल, पीर के बैठने के लिए विशेष गद्दा तथा पीरों व देवी-देवताओं के कई चित्र वहां पर लाकर टिका दिए। उनके साथ-साथ एक विशेष प्रकार का चिमटा भी वहां पर रख दिया। अब बलकार सिंह प्रत्येक बृहस्पतिवार को उस कमरे में बैठकर सिर घुमाने लग गया तथा चौकी देने लग गया। धीरे-धीरे अंधविश्वासी लोग भी वहां पहुंचने लग गए।

इसी दौरान उनका लड़का कुलबीर और भी उदण्ड हो गया और वह अपना घर छोड़ कर अपने मामा के पास रहने लग गया। बलकार सिंह फौज में रहते हुए पहले भी थोड़ा-बहुत शराब का सेवन कर लेता था, परन्तु अब बृहस्पतिवार को छोड़ कर अन्य दिनों में अत्यधिक शराब पीने लग गया। अब घर में सुख शांति आने के बजाए हालात और भी अधिक बिगड़ने शुरू हो गए। ऐसी दशा में जब वे उस चौकी लगाने का वरदान देने वाले बाबा के पास फरियाद लेकर गए तो उस बाबा ने उनकी किस्मत में लिखा हुआ कहकर अपना पिण्ड छुड़ा लिया।

अंत में उनके किसी परिचित ने, जोकि तर्कशील सोसायटी द्वारा किए जाने वाले जनहित के कार्यों से परिचित था, उन्हें मेरे पास रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में भेज दिया। मैंने उन दोनों पति-पत्नी के साथ उनकी समस्या के बारे में विस्तार से बातचीत की तथा निर्णय लिया कि सर्वप्रथम बलकार सिंह के मन से पीर की चौकी का मनोभ्रम निकालना आवश्यक है। अतः मैंने बलकार सिंह को सम्मोहित करके उसके मन से पीर का डर एवं अन्य भूत प्रेतों का डर दूर कर दिया। इतने से बलकार सिंह अत्यधिक राहत महसूस करने लग गया। इसके साथ ही मैंने उसे शराब का सेवन न करने का सुझाव दिए तथा बृहस्पतिवार के दिन पीर की कोई चौकी इत्यादि न लगाने के निर्देश भी दिए।

अगले सप्ताह जब वे मेरे पास आए तो दोनों पति-पत्नी अत्यंत प्रसन्न थे। अब उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि उनके घर जाकर उस कमरे से पीर के समस्त सामान का यथायोग्य निपटारा किया जाए। मैंने सहमति दे दी तथा निश्चित दिन पर उनके घर जाकर उस कमरे से पीर के नाम का सारा सामान बोरियों में बांध कर उनके सामने ही नहर में जाकर फैंकवा दिया। इस प्रकार तथाकथित पीर की चौकी से उनका सदा के लिए छुटकारा करवा दिया। फिर मैंने उनसे उनके लड़के कुलबीर से मिलने की इच्छा जाहिर की तो उन्होंने बताया कि तब से कुलबीर अपने मामा के पास ही रहता है और वे यह बात उसके मामा तक पहुंचा देंगे। मेरे निर्देश के अनुसार कुलबीर का मामा उसे लेकर मेरे पास आ गया। कुलबीर के साथ विस्तार से बातचीत करने पर उनके घर की समस्याओं के वास्तविक कारणों का पता चला। जोकि निम्नानुसार थे :

कुलबीर अपने मां-बाप का इकलौता पुत्र था। उसका पिता फौज में होने के कारण साल में थोड़े से समय के लिए ही घर पर आता था। उन्होंने कुलबीर को शहर के प्रसिद्ध स्कूल में दाखिल करवा दिया था। पांचवीं-छटी तक तो वह पढ़ने-लिखने में ठीक था तथा परीक्षाओं में अच्छे अंक लेकर पास होता रहा, परन्तु थोड़ा बड़ा होने पर उसकी सोहबत बिगड़ गई। वह भी आवारा लड़कों के साथ घूमने फिरने लग गया तथा स्कूल से गैर हाजिर रहने लग गया। धीरे-धीरे उसने स्कूल जाना बिल्कुल बंद कर दिया। वह घर से अपना बैग लेकर स्कूल के लिए चल देता, परन्तु स्कूल जाने के बजाए आवारा लड़कों के साथ शहर की गलियों में घूमता रहता।

घर से जब खर्च के नाम पर अपनी मां से वह काफी पैसा मांग लेता था तथा इसी कारण उसके आवारा दोस्त उसकी चमचागिरी करते रहते थे। लंबे समय तक स्कूल से गैर हाजिर रहने पर स्कूल वालों ने उसके घर उसकी गैर हाजिरी का संदेश भेज दिया। जब मां ने इस बाबत उससे पूछताछ की तो वह अपनी मां के सामने अकड़ने लग गया।

हालात का पता लगाने पर बलकार सिंह फौज से छुट्टी लेकर घर आया और अगले दिन उसने स्कूल पहुंच गया। अध्यापकों से जब पता चला कि कुलबीर पिछले कई महीनों से स्कूल नहीं आया तो बलकार सिंह के पैरों तले जमीन खिसक गई। बलकार सिंह ने प्रिंसीपल से अनुरोध कर उसे फिर से दाखिल करवा दिया। अपने पिता एवं अध्यापकों के सामने तो कुलबीर ने स्कूल में लगातार उपस्थित रहने की हामी भर दी और कुछ दिन लगातार स्कूल जाता भी रहा। इतने में बलकार सिंह की छुट्टी खत्म हो गया और वह अपनी ड्यूटी पर वापिस चला गया। उसके जाते ही कुलबीर अपनी पुरानी लाईन पर आ गया और स्कूल से भाग कर अपने दोस्तों के साथ आवारा घूमने लग गया। उसके कुछ आवारा दोस्त नशा इत्यादि भी करते थे। उनकी देखा-देखी वह भी नशे करने लग गया। उसके स्कूल न जाने के बारे में पता चलने पर जब उसकी मां ने उससे सवाल-जवाब किया तो उसने स्कूल जाने से साफ तौर पर मना कर दिया। अब मां-बाप क्या कर सकते थे? मजबूर होकर उन्होंने स्कूल से हटा लिया। समय बीतता गया, वह थोड़ा और बड़ा होता और नशे की दलदल में और अधिक धंसता चला गया। अब वह शराब, अफीम, भुक्की तथा ड्रग्स इत्यादि सभी प्रकार का नशा करने लग गया।

जब बलकार सिंह रिटायर हो कर आया, तब तक कुलबीर पूरा नशेड़ी बन चुका था। नशा खत्म होने पर वह अपनी मां तथा बाप दोनों से लड़ने-झगड़ने लग जाता था। उसकी मां ने अपनी ममता में अंधी होकर इस तरफ कभी ध्यान ही नहीं दिया था कि उसका पुत्र नशे का आदी बनता जा रहा था, वह तो अन्य अंधविश्वासियों की भांति यही सोचती रहती थी कि कुलबीर पर तो किसी भूत प्रेत का साया है। अपनी पत्नी एवं अन्य रिश्तेदारों के पीछे लगकर बलकार सिंह भी यही मानने लग गया। अतः जब उन्होंने इस बाबत बाबाओं से पूच्छा ली तो बाबाओं ने एक मोटा शिकार फंसता देखकर उनके मन में पक्का यकीन बिठा दिया कि कुलबीर पर तो भूत प्रेत का साया ही है।

इसी प्रक्रिया में एक बाबा ने उनके घर के एक कमरे में पीर का निवास घोषित कर दिया और बलकार सिंह पर पीर के आशीर्वाद का ढोंग रच कर उसकी बुद्धि को पूरी तरह से गिरवी रख

इस प्रकार बाबाओं की लूट एवं फरेब का अंतहीन सिलसिला लंबे समय तक चलता रहा। इसी प्रक्रिया में जब एक बाबा ने उनके घर के एक कमरे में पीर का निवास घोषित कर दिया और बलकार सिंह पर पीर के आशीर्वाद का ढोंग रच कर उसकी बुद्धि को पूरी तरह से गिरवी रख दिया। विवेकहीनता के कारण लंबे समय तक वह पीर के आर्शीवाद रूपी ढोंग को निभाता चला गया।

मैं हालात का अध्ययन करने के पश्चात् इस नतीजे पर पहुंचा कि कुलबीर का अपने गांव में रहना उचित नहीं है, क्योंकि वहां पर उसे उसकी पुरानी सोहबत फिर से बिगाड़ सकती है, जबकि अपने मामा के पास वह अपने मामा के साथ काम पर लगा रहता है तथा सभी प्रकार के नशों से दूर हो चुका है। समझाने पर उसके मां-बाप भी इस बात पर खुशी-खुशी सहमत हो गए। अब दो वर्ष से भी अधिक समय बीत चुका है, उनके घर में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं आई और वे प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

नोट : यह एक सत्य घटना है, गोपनीयता रखने के लिए पात्रों के नाम व स्थान बदल दिए गए हैं।

सफल जीवन

–आर.पी.गांधी
मोबा. 093154 46140

दुनिया भर का हर व्यक्ति नारी हो या पुरुष सफल जीवन जीना चाहता है। सफल जीवन जीने के लिए कुछ विशेष बातों की ओर ध्यान देना पड़ता है, जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं–

1. आत्म विश्वास – जिन लोगों को अपने पर भरोसा होता है, वे निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। वे अच्छे प्रबंधक सिद्ध हो सकते हैं। प्रायः देखने को मिलता है कि कई लोगों की मेजों पर फाईलों के ढेर लगे रहते हैं, जिससे वे अपना कार्य जल्दी नहीं निपटा पाते हैं और संबंधित व्यक्तियों को महीनों अपने कार्य पूर्ण होने का इंतजार करना पड़ता है। जिस किसी में भी आत्मविश्वास है वह अच्छा नेता भी सिद्ध हो सकता है। कारण वह जनता की समस्याओं को लेकर उचित दिशा की ओर पथ–प्रदर्शक कर सकता है। मैं यहां एक छोटी सी उदाहरण दूंगा। आप बाजार से कुछ खरीद कर लाए हैं तो रास्ते भर सोचते रहेंगे कि इसकी जगह अगर मैं दूसरी वस्तु लेता तो ज्यादा टिकाऊ, सुंदर, मजबूत और बढ़िया थी। अगर आप इस ढंग से सोचते हैं कि जो वस्तु मैं खरीद कर लाया हूं वही वस्तु उस मूल्य में सबसे बढ़िया थी। यह सोच आत्मविश्वास को प्रकट करती है। इसके विपरीत पहली दशा में आत्म विश्वास की कमी झलकती है।

2. आत्म संयम–जो व्यक्ति आत्म संयम से युक्त होगा, वह कमजोर सिद्ध नहीं होता। उदाहरण के लिए दो आदमी बैठे शराब पी रहे हैं। जब एक जानकार व्यक्ति उनके पास से गुजरता है तो बैठे व्यकित उसको निमंत्रण देते हैं और शराब पीने की पेशकश करते हैं। अगर वह आदमी कमजोर है तो उनके साथ पीने को बैठ जाएगा। अगर उसमें आत्मसंयम है तो वह कहेगा कि तुम तो बर्बाद हो ही रहे हो और मुझे भी बर्बाद करना चाहते हो या वह वहां से बच कर निकल जाता है, तो इससे यह साबित होता है कि वह व्यक्ति आत्मसंयमी है। वास्तविकता में पांच इंद्रियां होती हैं। अगर ये इंद्रिया हम पर हावी हो जाती हैं तो हम उनके दास बन कर जीएंगे, जिससे हमारा जीवन असफल हो जाएगा। अगर पूर्ण रूप से व्यक्ति इंद्रियों को अपने वश में रखता है तो वे इंद्रियां हमारी दासियां बन जाएंगी। यह तभी हो पाएगा, अगर हम में आत्म संयम है। सफल जीवन के लिए आत्म संयम की परम आवश्यकता है।

3. दृढ़ संकल्प– किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। ऐसा व्यक्ति कहीं भटकता नहीं है। उसका सम्पूर्ण ध्यान अपने लख्य की ओर रहता है। इसके लिए मैं अपनी कविता की एक पंक्ति उदृत करूंगाः

नदी पार करनी थी
तुमने कहा नहीं गहरी है।
मैंने कहा, पार करने वाले
कभी गहराई नहीं नापते।।

अगर हम यह सोचने लगेंकि नदी गहरी है तो कभी भी पार नहीं हो पाएंगे। पिछले दिनों पंजाब की एक लड़की किसी रेल दुर्घटना में अपनी टांग गंवा बैठी थी। वह दृढ़ संकल्प के कारण ही माऊंट एवरैस्ट की चढ़ाई चढ़ने में सफल हुई। महाभारत में भी ऐसी ही एक कहानी का वर्णन है। जब गुरु द्रोणाचार्य से बाकी शिष्यों ने पूछा कि तुम अर्जुन को ही ज्यादा पसंद क्यों करते हो? बाकियों को क्यों नहीं? गुरु द्रोणाचार्य का उत्तर था। आओ, अभी परीक्षा ले लेते हैं। उसने अपने सभी शिष्य इक्ट्ठे किए और कहा पेड़ पर एक पक्षी बैठा है। उसकी आंख को तीर का निशाना बनाना है। बारी–बारी से गुरु ने सब शिष्यों से पूछा कि तुम्हें उस पक्षी का क्या दिखता है? तो किसी ने कहा कि

हमें उसकी दुम दिखाई देती है। किसी ने कहा सुंदर पर दिखाई देते हैं। किसी ने कहा कि पांव दिखाई देते हैं। इसी प्रकार किसी ने कहा कि वह शाखा दिखाई दे रही है जिस पर वह बैठा है। जब अर्जुन की बारी आई तो उसने उत्तर दिया कि उसे केवल पक्षी की केवल आंख दिखाई दे रही है। इस पर गुरु ने अपने बाकी शिष्यों को कहा कि जो व्यक्ति अपने लक्ष्य को सामने रख कर चलता है वह एक सफल व्यक्ति होता है और उसका प्रमाण अर्जुन ने भी आप सबके सामने दिया है।

4. कठिन परिश्रम– कोई भी व्यक्ति जो सफल जीवन जीना चाहता है, वह रास्ते में आई कठिनाइयों की चिंता नहीं करता। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिन–रात मेहनत करता है और बार–बार की कोशिश से उसे वांछित सफलता प्राप्त होती है। मैं जब दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो अंग्रेजी की पुस्तक में एक कहानी पढ़ने को मिली थी। कहानी एक राजा और मकड़ी के विषय में थी। एक राजा युद्ध हारने के बाद एक खंडहर में आकर छुप जाता है। वहां पर वह एक मकड़ी को ऊपर चढ़ते देखता है। जो बार–बार नीचे गिर जाती थी, मगर वह कुछ कोशिशों के बाद वह ऊपर चढ़ने में सफल हो गई। राजा को इससे बहुत बड़ी शिक्षा मिली। वह खंडहर से बाहर निकला। अपनी सेना को पुनः इक्ट्ठा किया और पूरी योजना के साथ शत्रु राजा के साथ युद्ध किया। शत्रु राजा हार मान कर भाग खड़ा हुआ और राजा को पुनः अपना साम्राज्य मिल गया। इस प्रकार योजना के साथ किया गया परिश्रम वांछित सफलता प्रदान करता है। ऐसी ही एक कहानी महाराणा प्रताप के साथ भी जुड़ी हुई है। युद्ध हारने के बाद महाराणा प्रताप जंगलों में जा छिपा और घास इत्यादि खाकर अपने को जीवित रखा। अपने आत्म सम्मान को कठिन परिस्थितियों में सुरक्षित रखा। अकबर के सामने आत्म समर्पण करने से साफ इन्कार कर दिया। अंत में भामाशाह के सहयोग से सेना को संगठित किया और अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर लिया। महाराणा प्रताप में आत्म सम्मान की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। वह किसी भी कीमत पर आत्म सम्मान को नहीं खोना चाहता था। ऐसे व्यकित ही जीवन में सफल होते हैं और लोगों के सम्मान के पात्र बनते हैं।

5. समय की नियमितता– समय का पाबंद होना सफलता का मूल मंत्र है। अगर हम इस बिंदू की ओर से बेपरवाह रहते हैं तो सफलता पाना कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए अगर हमने कोई रेलगाड़ी पकड़नी है तो स्टेशन पर 15–20 मिनट पहले पहुंचना होगा। तभी जाकर गाड़ी पकड़ना संभव होगा। गाड़ी किसी भी यात्री का इंतजार नहीं रकती। एक मिनट की देरी भी रेलगाड़ी के छूट जाने के लिए काफी है। अतः समय की योजना जीवन में सफलता के लिए अति आवश्यक है। प्रायः देखने में आया है कि हमारे नेता और अधिकारी समय की पाबंदी का पालन नहीं करते और कार्यक्रम में देर से पहुंचना अपनी शान समझते हैं। हमारे देश के पिछड़ेपन का यह एक मुख्य कारण है। इस बुराई से बचना होगा और समय के मूल्य को पहचानना होगा। तभी जाकर हम निजी सामाजिक व देश का विकास कर पाएंगे।

6. धैर्य– अगर एक डाक्टर किसी मरीज की बात को धैर्य से सुन लेता है तो मरीज की आधी बीमारी तो इसी बात से दूर हो जाती है। अगर उसमें धैर्य की कमी है तो वह एक सफल डाक्टर नहीं हो सकता । ऐसे ही अगर कोई अधिकारी अपने किसी कर्मचारी की बात को सुन कर उसका समाधान करता है तो उसमें एक सफल नेतृत्व की क्षमता पैदा होगी और एक सफल अधिकारी साबित हो सकता है अपने कार्य में अच्छे परिणाम दिखाने के लिए दंड की बजाए प्रोत्साहन देना अधिक कारगर साबित होता है। अगर किसी को दंड देना आवश्यक ही हो तो वह अकेले में दिया जाए और प्रशंसा पाने वला अपने–आपको पुरस्कृत अनुभव करे। इससे बाकी कर्मचारियों में भी एक अच्छा संदेश जाता है और वे बेहतर करने के लिए प्रेरित होते हैं। सफल जीवन जीने के लिए धैर्य का होना अति आवश्यक है। विशेष कर सड़क पर

वाहन चलाते समय इसकी परम आवश्यकता रहती है। दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण धैर्य का न होना भी है। रोज-रोज की घटनाएं धैर्य को खो देने के कारण ही होती हैं जो कई बार भयंकर रूप धारण कर लेती हैं। अतः सड़क पर चलते समय धैर्य की विशेष आवश्यकता होती है। धैर्य रखने पर होने पर वाली सड़क दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है। जल्दी में आगे निकलने की होड़ ही हादसों को जन्म देती है। जल्दबाजी से ही सड़कों पर जाम की स्थिति पैदा हो जाती है।

7. भाग्यवाद पर आश्रित न होना–बहुगिनती में लोग भाग्यवादी होते हैं। वे अपनी सफलता या असफलता का श्रेय भाग्य अथवा ईश्वर को देते हैं। एक व्यक्ति बार-बार प्रयत्न करने पर भी असफल रहता है। वह यह सोच कर संतुष्ट हो जाता है कि सफलता मेरे भाग्य में ही नहीं है परन्तु जिसकी सोच वैज्ञानिक है वह यह सोचने का प्रयास करेगा कि मेरे जीवन में ऐसी कौन सी कमजोरियां हैं, जिनके कारण मुझे असफलता का मुंह देखना पड़ता है। अगर वह भाग्यवादी नहीं है तो वह अपनी त्रुटियां ढूंढने में सपफल हो जाएगा और उनको दूर करके बार-बार कोशिश से वह एक सफल व्यक्ति बन सकता है। उदाहरण के लिए एक ही प्रकार की दो दुकानें पास-पास हैं। एक ही दुकान ज्यादा चलती है, एक की कम। जिसकी दुकान कम चलती है वह इसका कारण भाग्य के सिर पर मढ़ कर संतुष्ट होने का प्रयत्न करता है, जबकि हर समय उसके अंदर ईर्ष्या पलती रहती है। अगर हम व्यवहारिक रूप में ठीक नहीं हैं और अपने ग्राहक को उचित सम्मान नहीं दे सकते तो हम अपने मकसद में सफल नहीं हो सकते। अगर हम सौदेबाजी में विश्वास करते हैं तो भी सफलता नहीं मिलेगी। एक कुशल व्यवहारकर्त्ता अपने ग्राहक के लिए पानी-चाय का प्रबंध करा देगा और उस पर आई हुई लागत ग्राहक की जेब से वसूल कर लेता है, जिससे वह एक सफल दुकानदार सिद्ध हो जाता है। अपने कार्य के प्रति सच्ची लगन, अपने कार्य को पूजा मानने वाला व्यक्ति हर प्रकार की सफलताओं को प्राप्त करते हुए आगे बढ़ता जाएगा। वह एक कुशल व्यापारी, कुशल गृहस्थी, कुशल अधिकारी और एक कुशल कारीगर बन सकता है। उसके चेहरे पर सर्वदा सफलता की मुस्कराहट नजर आएगी। भाग्यवादी इन्सान अपने भाग्य को कोसता रहेगा। पूजा-पाठ भक्ति के सहारे जीने का प्रयास करेगा। सच पूछा तो जीना भी एक कला है और अधिकतर व्यक्ति इस जीने की कला से परिचित नही होते। ऐसे लोग भी मिल जाते हैं, जो लड़कियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इन्हीं दिनों टीवी पर एक समाचार था कि एक मां ने अपनी तीन लड़कियों को गला घोंट कर मार दिया और चौथी इसलिए बच गई कि वह स्कूल से घर नहीं पहुंची थी। इसके पीछे कारण यह था कि उसको अपने परिवार से सदा ताने मिलते कि यह तो लड़कियां ही जनती है, जिसके लिए वह बिल्कुल भी जिम्मेदार नहीं थी। इसलिए भाग्यवाद से बाहर निकल कर वैज्ञानिक सोच अपनाने की आवश्यकता है।

सफल जीवन जीने के लिए परम आवश्यक है कि हम वैज्ञानिक सोच का सहारा लें। यदि हम ऐसा करेंगे तो हमारा प्रत्येक कदम सफलता की मंजिल की ओर उठेगा। इस सोच से प्रेरित होकर व्यक्ति अपनी असफलताओं के कारणों को ढूंढ निकालता है और फिर नए सिरे से प्रयास करता है जो उसे सफलता की ओर ले जाता है। अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सफल जीवन के लिए सोच का वैज्ञानिक होना अति आवश्यक है। यदि हम आने वाली पीढ़ियों में इस वैज्ञानिक सोच को पैदा कर दें तो चाहे कोई भी क्षेत्र हो उसमें वांदित सफलता प्राप्त की जा सकती है।

महानविचार

''मेरा विश्वास करो, रिश्वत से ईश्वर एवं मनुष्य दोनों खरीदे जाते हैं।'

ओविड (43-17 ई.पू.)

रोमन दार्शनिक

उदासी चेहरा-

डा०. उपेन्द्र कुमार

हमारे समाज में स्त्री-नारी को पुरुष के अर्धांगिनी के रूप में स्थान दिया गया है, जिसके बिना पुरूष किसी भी कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं कर सकता। यह भारतीय समाज का दुर्भाग्य है कि वैदिक और उत्तर वैदिक काल के पश्चात् हमारे समाज का मौलिक व्यवस्थाएँ रूढ़ियों के रूप में परिवर्तित होने लगी। फलस्वरूप स्त्रियों में लज्जा, ममता और स्नेह के गुणों को उनकी दुर्बलता समझकर पुरूषों ने उनका मनमाना शोषण करना आरंभ कर दिया। ऐसी प्रवृतियों को स्मृतिकारों और धर्म शास्त्रों का आशीर्वाद प्राप्त होने के कारण स्त्री धीरे-धीरे परतंत्र, निस्सहाय और निर्बल बन गयी। वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल तथा धर्म शास्त्र काल में भी स्त्रियों को विश्वास दिलाया गया कि पति ही स्त्री के लिए देवता हैं और विवाह को उसके जीवन का एक मात्र संस्कार है। अनेक पौराणिक गाथाओं और उपाख्यानों को ईश्वर द्वारा रचित बताकर सतियों की कथाओं का प्रतिपादन किया गया। मनु-स्मृति में यहाँ तक कह दिया गया कि स्त्री कभी भी स्वतंत्र रहने योग्य नहीं है। बचपन में वह पिता के अधिकार में, युवावस्था में पति के वश में तथा वृद्धावस्था में पुत्र के नियंत्रण में रहें। इस कारण से स्त्रियों की सम्पति के अधिकारों से पूर्णतया बंचित कर दिया गया और स्त्रियों के मानसिक रूप से ही अयोग्य तथा दुर्बल सिद्ध करने के अनेक भ्रमपूर्ण प्रचार किये गये।

जब भारत में पहले पहल लड़कियों के लिए कुछ स्कूल खोले गये तो रूढ़ीवादी तबकों ने उसका जबरदस्त विरोध किया। किसी की हिम्मत नहीं थी कि वो समाज से लड़कर अपनी बेटियों को स्कूल भेजे। स्कूल जाने वाली लड़कियों के परिवारों का सामाजिक और जातीय बहिष्कार कर दिया गया। आजादी के बाद भी परिवार का मुखिया पुरूष था। घर को उसी के मर्जी पर चलना था। महिलाओं की सीमाएँ अब भी तय थी। घूंघट प्रथा भी जारी थी। मर्दों की दुनिया में शोषण और हिंसा की शिकार औरतों के बारे में किसी दार्शनिक ने कहा है कि ''स्त्री दुनिया का आखिरी उपनिवेश है।'' लेकिन आज आंखों के सामने पसरी हकीकत भी चिल्ला चिल्लाकर बता रही है कि उत्पादन तंत्र में महिलाएँ हाशिए पर नहीं रही। वे बड़ी तेजी से अर्थचक्र के केन्द्र की ओर बढ़ रही हैं। बोस्टन कंसल्टेंसी ग्रुप की एक ताजा रिपोर्ट बता रही है कि दुनिया भर के उपभोक्ता कुल लगभग 18.4 लाख खरब डॉलर लगभग 920 अरब रूपये बाजार खरीददारी पर खर्च करते हैं और इस राशि का 65 प्रतिशत हिस्सा 12 खरब डॉलर यानि लगभग 600 खरब रूपये महिला उपभोक्ताओं के पर्स से निकलता है। यह राशि भारतीय अर्थव्यवस्था के कुल आकार से तकरीबन 10 गुणा ज्यादा है।

भारत में आज की तारीख में लगभग 57 करोड़ महिलाएँ है और उन्होंने मार्केटिंग के दिग्गजों को नाको चने चबवाए हुए हैं। भारत में 57 करोड़ महिलाओं में से 14 करोड़ कामकाजी महिला वर्ग में आती है और उनमें से सिर्फ 20 प्रतिशत शहरों में काम करती है। गाँव देहात में कुल महिलाओं में से 90 प्रतिशत् खेती-बाड़ी में हाथ बँटाती है। आज स्कूल, कॉलेज, सेल्समैन काऊंटर, ईंट-गारा ढ़ोने, पत्थर कूटने की जगह, दफ्तरों, होटलों के रिसेप्शन, पेट्रोल पम्प, टैक्सियाँ, पत्रकारिता, अकांउटिंग, मार्केटिंग इत्यादि में काम कर रही हैं। भारी मशीन

तथा विभिन्न विभागों के उच्च पदों पर बराबरीपूर्ण भागीदारी अभी भी एक सपना है।

क्या आज भी पुरूष वर्ग औरत की कमाई खानेवाला और 'जनानियों के राज' जैसे बीमार सामंतवादी जुमलों जाना जाता है` है? फिर भी जिस तरह प्रेशर कुकर और वाशिंग मशीन ने औरत की आजादी में एक महान और युगांतकारी भूमिका निभाई है, उसी तरह औरतों के खिलाफ मोर्चा खोल बैठे समाजशास्त्र को अर्थशास्त्र ने भी ऐतिहासिक शिकस्त दी है।

वैश्विक स्तर पर भी महिलाएँ शोषण का शिकार हैं। बंगलादेश, यूथोपिया, तंजानिया जैसे देशों में जहाँ 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएँ शारीरिक या यौन उत्पीड़न का शिकार होती है, वहीं अमेरिका में 20ः इंगलैंड में 30ः एवं जापान में 20 प्रतिशत शोषण के शिकार हैं। पूरे विश्व में प्रत्येक पाँच महिलाओं में से एक यौन उत्पीड़न का शिकार होती है। भारत देश में महिलाओं पर सबसे अधिक अत्याचार बिहार में होते हैं। यहाँ अत्याचार के 62.2 प्रतिशत मामले घटित होते हैं। इस मामले में दूसरा स्थान राजस्थान का है। यहाँ 46.3 प्रतिशत मामले देखने को मिलते है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोश की एक हॉलिया रिपोर्ट के अनुसार भारत में 15 से 49 वर्ष की आयु की लगभग दो तिहाई विवाहित महिलाएँ हिंसा का शिकार होती हैं। इसमें पिटाई, दुष्कर्म एवं यौन प्रताड़ना शामिल है। गर्भावस्था के दौरान महिलाओं के साथ हिंसा की दर भारत में सर्वाधिक है।

राष्ट्रीय अपराध की अभिलेख ब्यूरों के आँकड़े पर अगर एक दृष्टि डाली जाए तो भारतीय महिलाओं की खराब दशा का साफ तौर पर पता चलता है। रिपोर्ट के अनुसार हर चौथे मिनट पर एक महिला का उत्पीड़न होता है। हर पन्द्रहवें मिनट पर एक महिला से छेड़छाड़, हर 53 मिनट पर एक यौन उत्पीड़न, हर 9 मिनट पर पति या संबंधी से उत्पीड़न, हर 77 मिनट पर एक दहेज हत्या और हर 29 मिनट पर एक दुष्कर्म होता है।

यूनिसेफ के मुताबिक अफ्रीका और दक्षिण एशियाई देशों की महिलाएँ अपने ही परिवार के सदस्यों के हाथो बेच दी जाती हैं। न्ण्छण्व्ण्क्ण्ब्ण के अनुसार 80 प्रतिशत महिलाएँ जबरन देह व्यापार की आग में झोंक दी जाती हैं। वहीं ब्ण्प्ण्।ण की एक रिपोर्ट कहती है कि 45,000 से 50,000 महिलाओं को हर साल विभिन्न देशों से अमेरिका में देह व्यापार के लिए लगाया जाता है। अमेरिकी गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार पिछले कुछ सालों में भारतीय महिलाओं की तस्करी के मुख्य केन्द्र के तौर पर विकसित हो रहा है।

भारत में दहेज हत्या भी प्रतिवर्ष बढ़ रहा है।

वर्ष	हत्या
1991	639
1992	819
1993	774
1994	830
1995	1034
1997	1041
1998	6917

वर्ष 2000 में 1421 बलात्कार के मामले सामने आए। असल में भारतीय नारी की जिन्दगी कामोबेश आज भी वैसी की वैसी ही है, जैसा प्राचीन काल में दास प्रथा युग एवं सामंतवादी युग अर्थात मुगलों के शासनकाल में थी। असल में पुरूष प्रधान इस समाज का असली चेहरा कुछ और ही रूप लिये हुए हैं।

समाज में नारियों का स्थान आज भी महज एक भोग्या से ज्यादा कुछ नहीं है। आए दिन बलात्कार की घटनाएँ इस सत्य का जीवंत उदाहरण है। हद की बात तो यह है कि अदभुत संस्कृति वाले इस देश में महज पाँच हजार रूपये के बदले महिलाओं की नीलामी तक होती है। और हमारा समाज मूकदर्शक बने तमासा देखता रहता है। जी हाँ, आंध्रप्रदेश भारत का एक ऐसा राज्य है, जहाँ औरतों की नीलामी कोई अनहोनी घटना नहीं मानी जाती। यहाँ आप मात्र पाँच हजार रूपये में साल भर तक एक औरत को हवस संतुष्टि का माध्यम बना सकते हैं। 16 से 30 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं की नीलामी दर अलग-अलग होती है। आप अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार यौन संतुष्टि हेतु स्वतंत्र हैं। औरतों की निलामी का मुख्य केन्द्र राज्य के समुद्रतटीय जिले तेनाली, इरूल, निदादाबोल, राजामुंदरी, बेलपुर, तनुकु और तेदापल्लीगुदम है। इन जिलों में हर वर्ष 16 से 30 वर्ष की लगभग 10 महिलाओं की सरे आम निलामी हुई। इन महिलाओं को विभिन्न दरों यानी 5 हजार से लेकर तीस हजार रूपये की दर पर बेचा जाता है। आन्ध्रप्रदेश में बड़े पैमाने पर सेक्स उद्योग चलाया जाता है। अब तो हर छोटे-बड़े शहर में चल रहा है। बड़े-बड़े पूंजीपति इस उद्योग को जिंदा रखे हुए है। इस उद्योग के पीछे इन पूंजीपतियों द्वारा भारी पैमाने पर पूँजी निवे ा किया जाता है। लगभग 200 पूंजीपति अभी भी इस उद्योग से जुड़े हुए है।

पुलिस एवं प्रशासन के यहाँ होने वाली औरतों की नीलामी की पूरी जानकारी रहती है, पर आज तक पुलिस प्रशासन ने इस घिनौने कृत्य को रोकने का प्रयास नहीं किया।

वर्षो पहले हॉलीवुड में फिल्म बनी थी जिसमें नायिका को जब यह पता चलता है कि वर्षो पूर्व बिछड़ा हुआ उसका अपना बेटा उससे मिलने आया है तो वह बिजली की गति से उस कमरे की तरफ भागती है जहाँ उसका बेटा बैठा हुआ उसी का इंतजार कर रहा था। दरवाजे को धक्का देकर ज्यों ही वह अंदर प्रवेश करती है वह सन्न रह जाती है। उसकी आँखे फटी रह जाती हैं। उसका बेटा भी उसे देखकर चकरा जाता है। असल में वह नायिका जो जिस्मफरोशी का धंधा करती थी, इस युवक को अब तक अपना ग्राहक समझकर कई-कई बार उसे अपना जिस्म सौंप चुकी थी। यहाँ इस संदर्भ का जिक्र करने का एक मात्र उद्देश्य यह पूछना था कि क्या आज हम उसी विडम्बनापूर्ण स्थिति को जीने के लिए विवश नहीं हैं? इस सामंतवादी एवं साम्राज्यवादी युग में जबकि सारी दुनियाँ एक खुले बाजार के रूप में तब्दील हो चुकी है, ऐसा नहीं लगता है कि यहाँ संबंधों ने सभ्यता-संस्कृति के सारे आवरण उतारकर माँ-बेटे की भावनात्मक निकटता तक की हत्या कर डालती है। औरत माँ ही तो है जिसे हम बहन, पत्नी, बेटी आदि के रूप में स्नेह-सम्मान और श्रद्धा देते आ रहे हैं। आज सोचना यह है कि हम औरतों को बाजार में क्यों बैठाये हुए हैं? क्यों हम गाँवों के चौपालों पर, नाट्य-मंचों पर तथा महफिलों में औरतों को घुंघरू बाधवाकर नचवाते हैं और उसकी बेबसी को अदा समझकर तालियाँ पीटते हैं-झूमते हैं? सम्मान देने के बदले यह शोषण क्यो? 'नारी को देवी कहकर पुकारने वाले इस देश में जी0बी0रोड, सोनागाच्छी तथा चतुर्भुज स्थान इत्यादि जैसी यौन मंडियाँ क्यों है? सदियों से हमने नारी को कभी देवदासी बनाकर तो कभी रखैल बनाकर उसकी मर्यादाओं के साथ खिलवाड़ किया है। रम्भा और मेनका के रूप में नारी कभी इन्द्र के दरबार में नाचा करती थी और आज सरे आम नाचने पर मजबूर है। औरतों ने जिस मर्द को जन्म दिया उसी मर्द ने उसे कोठे पर बिठा दिया है।

साम्राज्यवादी और सामंतवादी अपसंस्कृति के आक्रमण के फलस्वरूप गाँव-कस्बों तक पहुँच चुके उच्छृंखलता के नग्न फैशन ने तो इस बाजार के लिए सस्ते और सुलभ 'कच्चे माल' की उपलब्धता सुनिश्चित करा दी है। यौन-हिंसा ने समूची मानवता के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया है। बाल वेश्याओं तथा

कॉल गर्लों की दिन प्रतिदिन बढ़ती तादाद क्या इस बात के खुले संकेत नहीं हैं कि आने वाले दिनों में हमारे सारे मानवीय संबंध, हमारी लोक आस्था से जुड़ी हमारी संस्कृति, सब इतिहास की बातें होकर रह जायेगी।

आज बलात्कार की शिकार बालिका की उम्र 12 से 13 वर्ष से कम ही होती है। बाल यौन शेषण की ज्यादातर घटनाएँ सामाजिक लोक-लज्जा, पुलिस और कानून के झमेलों के कारण दबा दी जाती हैं। आखिर क्यों होते हैं, बाल यौन शोषण? आखिर इस शोषण की प्रवृति को कैसे रोका जा सकता है? अमेरिका और फ्रांस में भी बच्चों के साथ बलात्कार होते हैं। जो बलात्कार नहीं करते, वे बाल वेश्यावृति में शामिल होते हैं। अमेरिकी देशों में बाल यौन शोषण एक साधारण घटना है। यहाँ पचास-साठ साल के पुरूष बड़ी आसानी से कमसिन लड़कियों के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करते हैं। वेश्यावृति करना या कराना, बलात्कार करना तथा बहुगामी होना सामंतवादी, पूँजीवादी, साम्राज्यवादी संस्कृति तथा पुरूषों की वर्चस्ववादी नीति का प्रतिफलन है। यदि आरंभ से इसका विरोध किया जाय तो ऐसे दृश्य आज देखने को नहीं मिलते।

कहा जाता है कि साहित्य की तरह फिल्मों के माध्यम से भी किसी समाज को जाना-पहचाना जाता है। लेकिन भारतीय जन-संस्कृति एवं समाज से अनभिज्ञ कोई व्यक्ति हाल के भारतीय फिल्मों को देखे तो वह निश्चित रूप से गलत निष्कर्षो पर पहुँचेगा। भारत का हिन्दी भाषी क्षेत्र सबसे अधिक पिछड़ा, जड़ और रूढ़िवादी क्षेत्र है। यह समाज अभी भी मध्ययुगीन मान्यताओं से मुक्त नहीं हो सका है। आज भी इस समाज में प्रेम विवाह करने वालों की हत्या कर दी जाती है। ऐसे में अनैतिक सम्बन्धों एवं उन्मुक्त यौनाचार पर बनने वाली हिन्दी फिल्में देखकर थोड़ा आश्चर्य होता है। दरअसल, ये सारी फिल्में साम्राज्यवादी अपसंस्कृति, मर्दवादी नज़रिये से बनायी जाती है जिसका काम पुरूषों की कामोत्तेजना को भड़काना है। इस फिल्मों की अभिनेत्रियाँ न तो आज की स्वतंत्र स्वावलंबी स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती हैं और न ही समाज को कोई दिशा दे पाती हैं। ये साम्राज्यवादी संस्कृति एवं पुरुषवादी व्यवस्था से परिचालित स्त्रियाँ हैं। जल्द से जल्द पैसा कमाने की धुन में ये अभिनेत्रियाँ कामोत्तेजक दृश्य दिखाने के लिए सहर्ष तैयार हो जाती हैं। इस तरह ये स्त्रियाँ भी साम्राज्यवादी संस्कृति एवं पुरूषवादी सोच एवं नियंत्रण से मुक्त नहीं हो पायी हैं। आज स्त्रियाँ घर से बाहर निकलती हैं तो उनके सामने बाजार होता है और वह खुद बाजार की एक वस्तु बनती जा रही है। आज हर लड़की मिस इंडिया या मिस वर्ल्ड बनना चाहती है। यह सब उन्हें माडलिंग के क्षेत्र में खींच लाता है। लेकिन कितनी लड़कियाँ ऐश्वर्या राय और सुष्मिता सेन बन पाती हैं? देह मटकाना, ऊल-जुलूल कपड़े पहनना और रेम्प पर कुल्हे मटकाते हुए चलना तो बिल्कुल आसान है। कठिन है किसी क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करना।

महिला जीवन के ऐतिहासिक पहलू को जानने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस को समझना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरूआत महिलाओं के हक में प्रथम ऐतिहासिक जीत दर्ज करने के साथ हुआ। 8 मार्च 1857 को अमेरिका में कपड़ा मिल की मजदूर बहनों ने काम के घंटों को 16 घंटे से घटाकर 10 घंटे करने तथा पारिश्रमिक बढ़ाने हेतु अपनी संगठन क्षमता का परिचय दिया और 8 मार्च 1908 को उनकी इन माँगों की पुर्ति के साथ ही 8 मार्च की ताकत और पवित्रता ऐतिहासिक स्वरूप ग्रहण करने लगी। कालान्तर में संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी 8 मार्च 1985 तक अंतराष्ट्रीय महिला दशक की घोषणा की। निष्कर्ष रूप में 8 मार्च दुनिया की आधी आबादी की प्रेरणा प्रदीप बन गया .

.....क्रमशः।

विज्ञान चालीसा

चोपाई

जय न्यूटन विज्ञान के आगर,
गति खोजत ते भरि गये सागर।
ग्राहम बेल फोन के दाता,
जनसंचार के भाग्य विधाता
बल्ब प्रकाश खेज करि लीन्हा,
मित्र एडीसन परम प्रवीना
बायल और चार्ल्स ने जाना,
ताप दाब सम्बन्ध पुराना।
नाभिक खोजि परम गतिशीला
रदरफोर्ड हैं अति गुणशीला।
खोज करत जब थके टामसन,
तबहिं भये इलेक्ट्रान के दर्शन।
जबहिं देखि न्यूट्रॉन को पाए,
जेम्स चैडविक अति हरषाये।
भेद रेडियम करत बखाना,
मैडम क्यूरी परम सुजाना।
बने कार्बनिक देव शक्ति से,
बर्जीलियस के शुद्ध कथरन से।
बनी यूरिया जब वोहलर से,
सभी कार्बनिक जन्मे यहीं से।
जान डाल्टन के गूंजे स्वर,
आशिंक दाब के योग बराबर।
जय जय जय द्विचक्रवाहिनी,
मैकमिलन की भुजा दाहिनी।
सिलने हेतु शक्ति के दाता,
एलियास हैं भाग्यविधाता।
सत्य कहूं यह सुंदर वचना,
ल्यूवेन हुक की है यह रचना।
कोटि सहस्र गुना सब दीखे,
सूक्षमबाल भी दण्ड सरीखे।
देखहिं देखि कार्क के अन्दर
खोज कोशिका है अति सुन्दर।
काया की जिससे भयी रचना
राबर्ट हुक का था यह सपना
टेलिस्कोप का नाम हे प्यारा
मुट्ठी में ब्रम्हाण्ड है सारा
गैलिलियो ने ऐसा जाना
अविष्कार परम पुराना।
विद्युत है चुम्बक की दाता,
सुंदर कथन मनहिं हर्षाता
पर चुम्बक से विद्यत आई
ओस्टेड की कठिन कमाई
ओम नियम की कथा सुहाती
धारा विभव है समानुपाती
एहि सन् उद्रगम करै विरोधा
लेन्ज नियम अति परम प्रबोधा।
चुम्बक विद्युत देखि प्रसंगा
फैराडे मन उदित तरंगा
धारा उद्रगम फिरि मन मोहे
मान निगेटिव फ्लक्स के होवे
जय जगदीश सबहिं को साजे
वायरलेस अब हस्त बिराजै
अजेक्जेंडर फलेमिंग आए
पैसिंलिन से घाव भराये
अनुवांशिकी का यह दान
कर लो मेण्डल का सम्मान
डा रांकजन सुनहु प्रसंगा
एक्स किरण की उज्ज्वल गंगा
मैक्स प्लांक के सुंदर वचना
क्वाण्टम अंक उन्हीं की रचना
फ्रैंकलिन की अजब कहानी
देखि पतंग प्रकृति हरषानी
डार्विन ने यह रीति बनाई
सरल जीव से सृष्टि रचाई
परि प्रकाश फोटान जो धाये
आइंस्टीन देखि हरषाए
षष्ठ भुजा में बेंजीन आई

(शेष पृष्ठ 30 पर

आईना

आत्मविश्वास

बलजीत भारती

मानव जीवन अनेकों घटनाओं से भरा रहता हैं कुछ अच्छी, कुछ बुरी। इन घटनाओं के घटने के उपरांत हम इनके परिणाम पर चिन्तन करते हैं। यानि फलां घटना क्यों घटी, कैसे घटी, क्या होना चाहिए था और क्या नहीं होना चाहिए था। फिर हम इन घटनाओं को लेकर जिम्मेदारी तय करते हैं। कोई इन्हें भगवान की मर्जी कहता है तो कोई किस्मत का रोना रोता हैं लेकिन बहुत कम लोग होंगे जो प्रत्येक घटना का जिम्मेदार परिस्थितियों को मानते होंगे। इनमें से कुछ परिस्थितियां मनुष्य स्वयं पैदा करता हैं। इन परिस्थितियों का परिणाम कई बार सुखद नहीं निकलता तो मनुष्य स्वयं को गुनहगार मानने लगता है और इसी तरह की कुछ पिछली घटनाओं को भी इस घटना के साथ जोड़कर देखने लगता हैं । वह सोचने लगता है कि उसे आस-पास का समाज क्या कहेगा। बार-बार कार्यो का सकारात्मक परिणाम न मिलने पर उसके आज्मविश्वास में कमी आने लगती है। बस यही सबसे खतरनाक बात है। इस तरह वह कुछ भी करने से पहले ही अपने मन में नकारात्मक और काल्पनिक परिणाम पैदा कर लेता है। जबकि हकीकत में ऐसा कुछ भी नहीं होता। ऐसा बिल्कुल नहीं होता कि यदि आप एक-दो बार नाकामयाब हो गए तो हमेशा ही नाकामयाब होंगे। दुनिया में ऐसे बहुत से उदाहरण मौजूद हैं जब किसी व्यक्ति का सब कुछ बर्बाद होने पर भी वह फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने में कामयाब हो गया। ऐसा उसने कैसे किया ? सिर्फ आत्मविश्वास के बल पर। सब कुछ खत्म हो जाने पर भी जो आत्मविश्वास बनाए रख सकता है वह जिंदगी में कभी असफल नहीं हो सकता।

मैं स्वयं कई बार ऐसी परिस्थितियों में से गुज़रा हूं। कई बार मेरे द्वारा लिए गए निर्णयों के परिणाम सुखद नहीं रहे। यदि ज्यादा ईमानदारी से कहूं तो अधिकतर परिणाम दुखद ही रहे। लेकिन मैंने इसके लिए स्वयं को कभी दोषी नहीं माना । कई बार नुकसान भी उठाने पड़ें लेकिन यह मानकर कि वे सभी निर्णय मेरे द्वारा बहुत सोच-समझकर लिए गए थे, तो परिणाम गलत आने पर हम यह कदापि नहीं कह सकते कि हमारे द्वारा लिए गए निर्णय गलत थे। आप हमेशा सही निर्णय लेते हैं। परिस्थितिवश परिणाम अनुकूल नहीं आ पाते। बार-बार इन नकारात्मक परिणामों के बावजूद भी मैंने अपने ऊपर से अपना विश्वास नहीं टूटने दिया। मुझे आज भी पूरा विश्वास है कि मेरे द्वारा लिया गया हर निर्णय मेरे अनुसार सही है और देर-सवेर इनके सुखद परिणाम देखने को आएंगे। मैं एक बात फिर से जोर देकर कहना चाहता हूं कि चाहे सारी दुनिया आपका साथ छोड़ दे, चाहे सब कुछ खत्म हो जाए लेकिन आप अपने ऊपर अपना विश्वास कभी कम न होने देना। मैं गारन्टी देता हूं तब कोई आपको खत्म नहीं कर पाएगाः

बहुत खतरनाक है यह
जब विश्वास डगमगाता है
जो वर्षो तक आपका सम्बल रहा
और जिसके सहारे
आप काफी दूर तक चले
बहुत खतरनाक है यह
जब विश्वास टूटता है
विश्वास आपकी जीवन-डोर है
इसे टूटने न दें
जब यह टूटता हैं
आप भी टूटते हैं
बहुत खतरनाक है यह जब
विश्वास पाले बदलता है
सवाल यह नहीं कि
आप का विश्वास क्यों कमजोर हो रहा है
बल्कि सवाल यह है
कि आप कब कमजोर पड़ते हैं
और वह दिन
आपका अन्तिम दिन होगा

★★

बंद करो

बूटा राम खरींडवा

बेकार की बातें तकरीरों पर, ध्यान लगाना बन्द करो
बेमतलब के मुद्दे लेकर, शोर मचाना बंद करो
भुखमरी, गरीबी नहीं मिटेगी, परमाणु बम चलाने से
अनपढ़ता खत्म नहीं होगी, कोई भक्ति वन्दना गाने से
राम राज नहीं आ सकता कभी, जय श्रीराम चिल्लाने से
भ्रष्टाचार खत्म न होगा, बातें सिर्फ बनाने से
गर अमल नहीं कर सकते, सूखी जीभ हिलाना बन्द करो
बेकार की बातें.....

कुछ लोग यहां पर धर्मवाद को, अपनी ढाल बनाते हैं
इस मुद्दे का अक्सर फायदा, शातिर लोग उठाते हैं
कुछ इसकी आड़ में धर्मगुरु, और कुछ नेता बन जाते हैं
भोले लोग बेचारे इनकी, चाल समझ नहीं पाते हैं
तर्कशील बनो पाखण्ड में फंस कर, समय गंवाना बंद करो
बेकार की बातें.....

मानवता से बढ़ कर कोई, दूसरा धर्म महान् नहीं
मानवता नहीं जिसमें उसका, कोई धर्म ईमान नहीं
कोई माने या न माने तर्क मेरा बेजान नहीं
इन्सानों से धर्म बने हैं, धर्मों से इन्सान हीं
तर्कहीन लोगों की भीड़ में, खुद को भुलाना बन्द करो
बेकार की बातें.....

कुछ लोग यहां पर जात–पात का मुद्दा लेकर चलते हैं
इसकी छाया में भी अक्सर, दबंग लोग ही पलते हैं
जो बुरे दिनों में हंसते हैं, अच्छे दिनों में जलते हैं
कहे बूटा राम गैरों से ज्यादा, अपनी जात को छलते हैं
बेअर्थ गीत, जुमले नारों से, दिल बहलाना बंद करो
बेकार की बातें.....

मोबा. 9050551345

लेखकों/पाठकों के लिए:–

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ–साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए ।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail : tarksheeleditor @gmail.com आदि पर भेजी जा सकती है। ई–मेल भेजते समय ळ.4 हिन्दी टाईप का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा को सहयोग

1. डुल्लण दुल्लत तर्कशील सोसायटी इकाई ने 300/– रुपये का आर्थिक सहयोग भेजा।
2. श्री विनोद शर्मा, शामली (उत्तर प्रदेश) द्वारा 100/– रुपये का आर्थिक सहयोग भेजा।
3. जय प्रकाश खरक पांडवा ने 500/– रुपये का आर्थिक सहयोग भेजा।

सोसायटी सहयोग भेजने वाले सभी साथियों का हार्दिक धन्यवाद करती है ।

Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 2, अंक 3 मई 2015

तर्कशील सोसायटी पंजाब का राज्य प्रतिनिधि सम्मेलन

प्रतिनिधि सम्मेलन में नई पुस्तकों का विमोचन

वर्ष 2014-15 के लिए चुनी गई राज्य कार्यकारिणी

कृषि विश्वविधालय लुधियाणा में पानी की गागर का रहस्य समझाते तर्कशील

नेपाल में खुशहाली बनी रहे एवं अच्छी वर्षा से अच्छी पैदावार हो इस लिए 24 अप्रैल को काठमंडू के ललितपुर में श्रद्धालु रत्तो मशिन्द्रनाथ का रथ खींचते हुए। लेकिन उसके एक दिन बाद ही भुकंप ने तबाही मचा दी।

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To .....

.....

.....

आर. पी. गांधी प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।